प्राचीन इतिहास

राम शरण शर्मा

edusol
Learn Anytime Anywhere

NOTES COMPILED BY
Edusol

Table of Contents

प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व 1
प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक 3
स्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण 6
भौगोलिक ढाँचा 10
प्रस्तर युग आदिम मानव 12
ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियाँ 15
हड़प्पा संस्कृतिः कांस्य युग सभ्यता 18
आर्यों का आगमन और ऋग्वैदिक युग 23
उत्तर वैदिक अवस्था: राज्य और वर्ण व्यवस्था की ओर 27
जैन और बौद्ध धर्म 31
जनपद – राज्य और प्रथम मगध साम्राज्य 37
ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण 40
बुद्धकाल में राज्य और वर्ण- समाज 42
मौर्य युग 44
मौर्य शासन का महत्त्व 46
मध्य एशिया से संपर्क और उनके परिणाम 49
सातवाहन युग 55
सुदूर दक्षिण में इतिहास का आरम्भ 59
मौर्योत्तर युग में शिल्प, व्यापार और नगर 62
गुप्त साम्राज्य का उद्भव और विकास 64
गुप्त काल का जीवन 67
पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार 71
हर्ष और उसका काल 73
प्रायद्वीप में नए राज्यों के गठन और ग्राम-विस्तार 75
दर्शन का विकास 78
भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संपर्क 80
प्राचीन से मध्यकाल की ओर 82
सामाजिक परिवर्तनों का अनुक्रम 84
विज्ञान और सभ्यता की विरासत 86

Telegram - https://t.me/edusolapp
Visit- https://edusoln.com/

प्राचीन भारतीय इतिहास का महत्त्व

▪ सम्राट अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा के अलावा खरोष्ठी और आरामाइक लिपियों में है। पश्चिमोत्तर और अफगानिस्तान में इनकी भाषा और लिपि आरामाइक और यूनानी दोनों हैं।

चक्रवर्ती राजा के संदर्भ में

- हिमालय से कन्याकुमारी तक, पूर्व में ब्रह्मपुत्र की घाटी से पश्चिम। में सिंधु -पार तक अपना राज्य फैलाने वाले राजाओं को चक्रवर्ती राजा कहा जाता था।
- सम्राट अशोक ने अपना साम्राज्य सुदूर दक्षिणांचल को छोड़कर सारे देश में फैलाया तथा समुद्रगुप्त की विजय पताका गंगा की घाटी से। तमिल देश के छोर तक पहुँची इस प्रकार दोनों चक्रवर्ती राजा कहलाते थे

आर्यों के सांस्कृतिक उपादान के संदर्भ में

- आर्य सांस्कृतिक उपादान उत्तर के वैदिक और संस्कृतमूलक संस्कृति से आए हैं।
- प्राक् आर्य जातीय उपादान दक्षिण की द्रविड़ और तमिल संस्कृति के अंग हैं।

▪ प्राचीन भारत अनेकानेक मानव-प्रजातियों का संगम रहा है। इनमें आर्य→ यूनानी → शक →हूण →तुर्क आदि अनेक प्रजातियाँ शामिल थीं। ये सभी समुदाय और इनके सारे सांस्कृतिक वैशिष्ट्य आपस में इस तरह नीरक्षीरवत् हो गए कि आज उनमें से किसी को भी उनके मूल रूप से साफ-साफ पहचा नहीं सकते हैं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक

अंग्रेजों तथा क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा भारतीय इतिहास तथा धर्म ग्रंथों के अध्ययन में रुचि लेने के कारणों के संदर्भ में-

- 1857 के विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि उन्हें भारत पर अपना शासन मजबूत करने के लिये यहाँ के लोगों के रीति-रिवाजों और सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करना होगा।
- क्रिश्चियन मिशनरियों ने भारतीय लोगों का धर्म परिवर्तन करने के लिये उनके धर्म की दुर्बलताओं को जानना आवश्यक समझा, ताकि वे धर्म परिवर्तन करा सकें और उनके द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूत बनाया जा सके।

भारतीय इतिहास के अध्ययन के संदर्भ में

- भारतीय विद्या के अध्ययन को सबसे अधिक बढ़ावा जर्मनी के विद्वान एफ. मैक्स मूलर ने दिया। उन्होंने 'सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट' को कुल मिलाकर पचास खंडों में प्रकाशित करवाया।
- अंग्रेजों द्वारा भारतीय इतिहास के अध्ययन के फलस्वरूप भारत के लोगों को स्वेच्छाचारी शासन का आदी तथा परलौकिक समस्याओं में डूबे रहने वाले और जाति प्रथा व वर्ण व्यवस्था के सामाजिक कुचक्र में फँसा हुआ बताया है।
- मनुस्मृति' को सबसे प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है। सबसे पहले 1776 में इसका अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ था।

भारतीय इतिहास के अंग्रेजी लेखकों के संदर्भ में

- 1785 ई. में प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ भगवद्गीता का अंग्रेजी अनुवाद विल्किन्स ने किया था।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के सर विलियम जोन्स ने 1784 में कलकत्ता में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल नामक शोध संस्थान की स्थापना की थी।
- सर विलियम जोन्स ने 1789 मे अभिज्ञानशाकुंतलम् नामक नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- विसेन्ट आर्थर स्मिथ की पुस्तक 'अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया' में उन्होंने प्राचीन भारत का इतिहास 1904 में तैयार किया था।

भारतीय विद्वानों द्वारा भारतीय इतिहास के अध्ययन करने के कारणों के संदर्भ मे

- भारतीय विद्वानों ने, विशेषकर वे जो पाश्चात्य शिक्षा पाए हुए थे, अंग्रेजों द्वारा भारतीय इतिहास को तोड़-मरोड़ कर भारत के अतीत की। छवि धूमिल किये जाने से क्रोधित थे। उन्होंने इंग्लैंड के फलते-फूलते औपनिवेशिक शासन के विरोध में भारतीय इतिहास का पुनर्निर्माण करने के लिये अध्ययन किया।।

- भारतीय विद्वान समाज को केवल सुधारना ही नहीं चाहते थे बल्कि भारत के प्राचीन इतिहास का पुनर्निर्माण इस प्रकार करना चाहते थे। कि उससे समाज को सुधारने में मदद मिले और यह कार्य भारत के लोगों को भारत के इतिहास का ज्ञान करवाकर ही संभव था।
- भारतीय विद्वानों ने भारत के लोगों को भारत के स्वर्णिम इतिहास के बारे में अवगत करवाकर स्वराज प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया।

लेखक	**पुस्तकें**
ए. एल. बॉशम	ए हिस्ट्री ऑफ एन्शिएंट इंडिया
डी.डी. कोसंबी	वंडर दैट वाज इंडिया
राजेन्द्र लाल मित्र	एन. इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री
के. ए. नीलकंठ शास्त्री	इंडो-आर्यन्स

भारतीय इतिहास लेखकों के संदर्भ में

- महाराष्ट्र के रामकृष्ण गोपाल भंडारकर और विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े समर्पित विद्वान थे। उन्होंने देश के सामाजिक और राजनीतिक इतिहास का पुनर्निर्माण किया। आर.जी. भंडारकर ने सातवाहनों के दक्कन के इतिहास का और वैष्णव संप्रदायों के इतिहास का पुनर्निर्माण किया। उल्लेखनीय है कि दोनों महान समाज सुधारक थे और अपने शोधों से विधवा-विवाह का समर्थन किया और जाति-प्रथा एवं बाल विवाह जैसे कुप्रथा का खंडन किया था।
- हेमचन्द्र राय चौधरी ने महाभारत काल से (ईसा पूर्व दसवीं सदी) लेकर गुप्त साम्राज्य के अंत तक प्राचीन भारत के इतिहास का पुनर्निर्माण किया।
- वी.ए. स्मिथ ने अपने इतिहास लेखन में सिकन्दर के आक्रमण के बारे में वर्णन किया है तथा इतिहासकार के.पी. जायसवाल ने सिद्ध किया कि प्राचीन काल में यहाँ गणराज्यों का अस्तित्व था; जो अपना शासन स्वयं चलाते थे।

भारतीय इतिहास के लेखकों के संदर्भ में

- ए.एस. अल्तेकर और के.पी. जायसवाल जैसे कुछ विद्वानों ने देश को शकों और कुषाणों के शासन से मुक्त कराने में भारतीय राजवंशों की भूमिका का वर्णन किया है। इतिहासविद् के.ए. नीलकंठ शास्त्री ने 'ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया' का लेखन किया है।

- पांडुरंग वामन काणे संस्कृत के प्रकांड पंडित और समाज सुधारक हुए। उनका विशाल कीर्तिस्तंभ 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र' जो पाँच खंडों में प्रकाशित हुआ है, सामाजिक नियमों और आचारों का विश्वकोश है। अतः कथन (a) सत्य है।
- देवदत्त रामकृष्ण भंडारकर ने भारत के राजनीतिक इतिहास का गंभीर अध्ययन किया है। उन्होंने अशोक पर तथा प्राचीन भारत की राजनैतिक संस्थाओं पर कई पुस्तकों का लेखन किया है।
- डी.डी. कोसंबी ने भारतीय इतिहास को नया रास्ता दिखलाया। वे अपना इतिहास विवेचन कार्ल मार्क्स के लेखों के अनुसार करते थे। उन्होंने प्राचीन भारतीय समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास को उत्पादन की शक्तियों और संबंधों के विकास में अभिन्न अंग के रूप में प्रस्तुत किया।

edusol Learn Anytime Anywhere

स्रोतों के प्रकार और इतिहास का निर्माण

दक्षिण भारत और पूर्वी भारत के भौतिक अवशेषों के संदर्भ में

- दक्षिण भारत में पत्थरों से मंदिर बनाए जाते थे। इनके बचे हुए अवशेष उस युग का स्मरण कराते हैं, जब देश के दक्षिणी भाग में भारी संख्या में इनका निर्माण हुआ था।
- पूर्वी भारत में ईंटों के विहारों का निर्माण होता था।
- उल्लेखनीय है कि अधिकांश भौतिक अवशेषों जो कि टीलों के नीचे दबे हुए मिले हैं, इन टीलों में एकल-संस्कृति, मुख्य-संस्कृति और बहु-संस्कृति मिलती है।

▪ दक्षिण भारत के कुछ लोग मृत व्यक्ति के शव के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बर्तन आदि चीजें भी कब्र में गाड़ते थे और इसके ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर दिये जाते थे। ऐसे स्मारकों को महापाषाण (मेगालिथ) कहते हैं।

पुरातात्त्विक अवशेषों के अध्ययन के संदर्भ में

- प्राचीन भारत में कागज की मुद्रा का प्रचलन नहीं था, परन्तु धातु मुद्रा (धातु के सिक्कों) का चलन था। पुराने सिक्के तांबे, चांदी, सोने और सीसे के बनते थे।
- प्राचीन काल के लोगों के भौतिक जीवन के बारे में जानकारी जिस स्रोत से मिलती है उसे पुरातत्त्व/आर्किओलॉजी कहते है।
- रेडियो कार्बन काल निर्धारण विधि में, जब तक कोई वस्तु जीवित रहती है तो C14 के क्षय की प्रक्रिया के साथ हवा और भोजन की खुराक से उस वस्तु में C14 का समन्वय भी होता रहता है, परन्तु जब वस्तु निष्प्राण हो जाती है तब उसमें विद्यमान C14 के क्षय की प्रक्रिया समान गति से जारी रहती है लेकिन हवा और भोजन से C14 लेना बंद कर देती है। किसी प्राचीन वस्तु में विद्यमान C14 में आई कमी की माप कर उसके समय का निर्धारण किया जा जाता है।
- अशोक के अभिलेख राज्यादेश के रूप में जारी किये जाते थे। अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में है जबकि अफगान से प्राप्त अभिलेख आरामाइक तथा ग्रीक दोनों लिपियों में हैं।
- अभिलेख अध्ययन को पुरालेख शास्त्र (एपिग्राफी) कहते हैं।
- अभिलेख और पुराने दस्तावेजों की प्राचीन तिथि के अध्ययन को पुरालिपि शास्त्र (पेलिओग्राफी) कहते हैं।

अभिलेखों के प्रकार के संदर्भ में

- अभिलेखों को अनेक कोटियों में बाँटा गया है। सम्राट अशोक के अभिलेख राज्यादेशों की कोटि में आते हैं। उनके अभिलेखों में अधिकारियों और जनता के लिये सामाजिक, धार्मिक तथा प्रशासनिक राज्यादेशों और निर्णयों की सूचनाएँ रहती थीं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- अभिलेखों की दूसरी कोटि में आनुष्ठानिक अभिलेख है; जिन्हें बौद्ध, जैन, वैष्णव तथा शैव आदि संप्रदायों के अनुयायियों ने भक्तिभाव से स्थापित स्तम्भों, प्रस्तरफलकों, मंदिरों और प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण करवाया है।
- अभिलेखों की तीसरी कोटि में वे प्रशस्तियाँ हैं, जिनमें राजाओं और विजेताओं के गुणों और कीर्तियों का वर्णन है, परन्तु उनकी पराजयों और कमजोरियों का कोई वर्णन नहीं मिलता। समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख इसी कोटि में आता है
- अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम सफलता 1837 में जेम्स प्रिंसेप को मिली थी, वे उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में थे।

भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोतों के संदर्भ में

- प्राचीन भारत में पाण्डुलिपियाँ भोजपत्रों और ताड़पत्रों पर लिखी मिलती हैं, परन्तु मध्य एशिया में जहाँ भारत से प्राकृत भाषा फैल गई। थी, ये पाण्डुलिपियाँ मेषचर्म तथा काष्ठफलकों पर लिखी गई है।
- वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझ में आए इसके लिये वेदांगों अर्थात् वेद के अंगभूत शास्त्रों का अध्ययन करना आवश्यक था. इसलिये इनकी रचना हुई थी।
- ये वेदांग हैं- शिक्षा (उच्चारण-विधि) कल्प (कर्मकांड), व्याकरण,निरुक्त (भाषा विज्ञान), छन्द और ज्योतिष ।
- 'व्याकरण' की रचना पाणिनि ने 400 ई.पू. के आस-पास की थी। व्याकरण के नियमों का उदाहरण देने के क्रम में पाणिनि ने अपने समय के समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर अमूल्य प्रकाश डाला है।
- वैदिक साहित्य का सही क्रम इस प्रकार है- वैदिक संहिताएँ > ब्राह्मण > आरण्यक > उपनिषद्

भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोत 'सूत्र' के संदर्भ में

- सूत्र में साहित्य गद्य में नियमपूर्वक लिखे जाते थे। संक्षिप्त होने के कारण ये नियम सूत्र कहलाते हैं।
- शुल्व सूत्र में यज्ञवेदी के निर्माण के लिये विविध प्रकार के मापों का विधान है। ज्यामिति और गणित का अध्ययन यहीं से आरम्भ हुआ है।
- उल्लेखनीय है कि ऐसे सूत्र जिनमें विधि और नियमों का प्रतिपादन किया जाता है, कल्पसूत्र कहलाते हैं। कल्पसूत्रों के तीन भाग हैं- श्रोतसूत्र, गृहयसूत्र और धर्मसूत्र ।
- जातक कथा एक प्रकार की लोक कथा है। बुद्ध के पूर्वजन्मों की कथाओं को जातक कहा जाता है। ये जातक कथा ईसा पूर्व पाँचवीं सदी से दूसरी सदी ई. सन् तक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालती है। प्रसंगवश ये कथाएँ बुद्धकालीन राजनीतिक घटनाओं की जानकारी देती हैं।
- कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' एक राजनीतिक ग्रंथ है। यह पंद्रह अधिकरणों में विभक्त है, जिसमें दूसरा और तीसरा अधिक पुराने हैं। इसमें मौर्यकालीन समाज और अर्थतंत्र की भी महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- कालिदास ने अनेक काव्य और नाटक लिखे हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध 'है 'अभिज्ञानशाकुंतलम'। इन महान सर्जनात्मक कृतियों में गुप्तकालीन 'उत्तरी और मध्य भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की झलक मिलती है।

संगम साहित्य के संदर्भ में

- संगम साहित्य प्राचीनतम तमिल ग्रंथ है। राजाओं द्वारा संरक्षित विद्या केन्द्रों में एकत्र होकर कवियों और भाटों ने तीन-चार सदियों में इस साहित्य का सृजन किया था। ऐसी साहित्यिक सभा को संगम कहते थे। यह आरंभिक सदियों में प्रायद्वीपीय तमिलनाडु के लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के अध्ययन के लिये संगम साहित्य एकमात्र स्रोत है।
- संगम साहित्य मुक्तकों और प्रबन्ध काव्यों की रचना बहुत सारे कवियों ने की है।

भारतीय इतिहास के विदेशी विवरणों के संदर्भ में

- मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था। वह चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में चौदह वर्षों तक रहा। उसके द्वारा रचित 'इण्डिका' में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति का विवरण मिलता है।
- यूनानी विवरणों में चन्द्रगुप्त मौर्य और सान्द्रोकोत्तस जिनके राज्यारोहण की तिथि 322 ई.पू. निर्धारित की गई है, एक ही व्यक्ति था।
- ह्वेनसांग सातवीं सदी में हर्ष के शासनकाल में भारत आया था। उल्लेखनीय है कि वह भारत में 16 वर्षों तक रहा। 6 वर्ष तक उसने नालन्दा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया।
- फाहियान और हवेनसांग दोनों बौद्ध थे और बौद्ध तीर्थों का दर्शन करने तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन करने भारत आए थे।

लेखक	**रचनाएँ**
मेगस्थनीज	इंडिका
टॉलेमी	ज्योग्राफी
प्लिनी	नेचुरल हिस्टोरिका
ह्वेनसांग	सी–यू-की
बाणभट्ट	हर्ष चरित

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

विल्हण	विक्रमांकदेवचरित
अतुल	मूषिक वंश
संध्याकार नंदी	रामचरित

- कल्हण ने 'राजतरंगिणी' की रचना बारहवीं शताब्दी में की थी। इसमें कश्मीर के राजाओं के चरितों का संग्रह है।
- उल्लेखनीय है कि बाणभट्ट के हर्ष चरित में राजा हर्षवर्धन के आरम्भिक जीवन का वृत्तांत है। यह गद्य काव्य है। विल्हण द्वारा रचित विक्रमांकदेव चरित में कल्याण के चालुक्य राजा विक्रमादित्य पंचम का वर्णन किया। गया है। अतुल की रचना मूषिक वंश में मूषिक राजवंश का वृत्तांत है। जिसका शासन उत्तरी केरल में था। संध्याकर नंदी के रामचरित में कैवर्त्त जाति के किसानों और पाल वंश के राजा रामपाल के बीच की लड़ाई का वर्णन किया गया है।

संगम साहित्य के संदर्भ में

- संगम साहित्य के पद्म 30,000 पंक्तियों में मिलते हैं, जो एट्टत्तोके (आठ) संकलनों में विभक्त हैं। उल्लेखनीय है कि. पद्य सौ-सौ के समूहों में संगृहीत हैं, जैसे पुरनानूरू।
- संगम साहित्य के दो मुख्य समूह हैं: पटिनेडिकल पट्टिनेनकील कणक्कु (अठारह निम्न संग्रह) और पत्त पाट्ट (दस गीत) पहला समूह दूसरे से पुराना माना जाता है। इसलिये इसे लौकिक साहित्य के लिये। महत्त्वपूर्ण समझा जाता है।
- चौदहवीं सदीं में फिरोजशाह तुगलक ने अशोक के दो स्तंभलेखों में एक मेरठ से और दूसरा हरियाणा के टोपरा नामक स्थान से दिल्ली मंगवाया था।

भौगोलिक ढाँचा

मानसूनी पवनों के संदर्भ में

- भारत के लोगों को ईसा की पहली सदी के आसपास मानसून पवनों की दिशा मालूम हो गई थी।
- भारत के लोगों को मानसून के ज्ञान से पश्चिम एशिया भूमध्य सागरीय क्षेत्र और दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क स्थापित करने में सहायता मिली थी।

प्राचीन भारत में नदियों के बीच स्थित राज्यों के संदर्भ में

- कर्नाटक राज्य की सीमा उत्तर में भीमा नदी तथा दक्षिण में तुंगभद्रा नदी बनाती है।
- बादामी के चालुक्यों और राष्ट्रकूटों की सीमा तुंगभद्रा के उत्तर में पड़ती थी तथा इन राज्यों को तुंगभद्रा के दक्षिण में राज्य प्रसार करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा, तो दूसरी ओर पल्लवों और चोलों को भी इस नदी (तुंगभद्रा) के उत्तर में राज्य प्रसार में कठिनाई हुई थी। भारतीय महाद्वीप के पूर्वी भाग में प्राचीन कलिंग राज्य की उत्तरी सीमा महानदी तक और दक्षिणी सीमा गोदावरी नदी थी।

प्राचीन काल में व्यापार और संचार मार्गों के संदर्भ में

- प्राचीन काल में व्यापार और संचार सड़क मार्ग से नहीं होता था, क्योंकि उस काल में सड़कें बनाना कठिन था।
- प्राचीन काल में नदियाँ वाणिज्य और संचार की धमनियाँ थी, इसलिये इस काल में मनुष्यों और वस्तुओं का आवागमन नावों से होता था। अतः नदी मार्गों का सैनिक और वाणिज्य संचार में मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता था।
- उल्लेखनीय है कि अशोक द्वारा स्थापित प्रस्तर स्तंभ नावों द्वारा ही देश के दूर-दूर स्थानों पर पहुँचाए गए। संचार साधन के रूप में नदियों की यह भूमिका ईस्ट इंडिया कंपनी के दिनों तक कायम रही।

प्राचीन भारत में विभिन्न संस्कृतियों के उद्भव के स्थान के संदर्भ में

- हड़प्पा संस्कृति का उद्भव और विकास सिंधु नदी की घाटी में हुआ था।
- वैदिक संस्कृति का उद्भव पश्चिमोत्तर प्रदेश और पंजाब में हुआ, जबकि विकास पश्चिमी गंगा घाटी में।
- उत्तरवैदिक संस्कृति जो मुख्यतः लोहे के प्रयोग पर आश्रित थी, मध्य गंगा घाटी में फली फूली।
- प्राचीन काल में आरिकामेडु, महाबलिपुरम और कावेरीपट्टनम् के बंदरगाह कोरोमंडल तट पर अवस्थित थे।
- भारत के प्राचीनतम् पंचमावर्ड (आहत) सिक्के मुख्यत: चांदी के बने होते थे। उल्लेखनीय है कि उप्पा मारकर बनाए जाने के कारण भारतीय भाषाओं में इन्हें आहत मुद्रा कहते हैं। इन सिक्कों पर पेड़, मछली, साँड़, हाथी, अर्द्ध-चन्द्र आदि आकृतियाँ बनी होती थीं।

धातु	प्राप्ति स्थान
सोना	कर्नाटक
सीसा	आंध्र प्रदेश
तांबा	राजस्थान
टिन	अफगानिस्तान

edusol Learn Anytime Anywhere

प्रस्तर युग आदिम मानव

आरम्भिक पुरापाषाण युग के संदर्भ में

- आरम्भिक पुरापाषाण युग का मानव पत्थर के अनगढ़ और अपरिष्कृत औजारों का इस्तेमाल कर शिकार और खाद्य-संग्रह पर जीवित रहता था।
- इस युग के औजारों में कुल्हाड़ी (हैंड-एक्स), विदारणी (क्लीवर) और खंडक (चॉपर) का उपयोग होता था।
- इस युग के स्थल पाकिस्तान में स्थित पंजाब की सोअन/सोहन नदी की घाटी में पाए जाते हैं। इसके अलावा कई अन्य स्थल कश्मीर और थार मरुभूमि में मिले हैं।
- उल्लेखनीय है कि राजस्थान का दिवाना क्षेत्र, बेलन और नर्मदा की घाटियों में तथा मध्य प्रदेश के भीमबेटका में इनके निवास स्थल के अवशेष मिले हैं।

पाषाण युग के संदर्भ में

- ऊपरी पुरापाषाण युग में आर्द्रता कम हो गई थी। इस युग में आधुनिक प्रारूप के मानव (होमोरोपिएस) का उदय हुआ था।
- उल्लेखनीय है कि इस युग नए उद्योग की स्थापना हुई श्री तथा भारत में फलकों और तक्षणियों (कोड्स और ब्यूटिस) का इस्तेमाल होने लगा था।
- मध्य-पुरापाषाण युग में मुख्य उद्योग पत्थर की पपड़ी से बनी वस्तुओं का था। इनके मुख्य औजार फलक, बंधनी, छेनी और खुरचनी थे, जो कि पपड़ियों से बने होते थे।

मध्यपाषाण काल के संदर्भ में

- मध्यपाषाण स्थल राजस्थान, दक्षिणी उत्तर प्रदेश, मध्य और पूर्वी भारत में पाए जाते हैं तथा दक्षिण में इसका फैलाव कृष्णा नदी के दक्षिण तक है। अतः कथन (c) असत्य है। जबकि, अन्य तीनों कथन सत्य हैं।
- इस युग में सूक्ष्म पाषण (माईक्रोलिथ्स) औजारों का प्रयोग होता था
- मध्यपाषाण युग के लोग शिकार करके, मछली पकड़कर खाद्य वस्तुओं का संग्रह करते थे। वे लोग आगे चलकर पशुपालन भी करने लगे थे।
- राजस्थान के बागोर तथा मध्य प्रदेश के आदमगढ़ में पशुपालन के प्राचीन साक्ष्य मिले हैं।

पुरापाषाण और मध्यपाषाण युग के कलाकृतियों के संदर्भ में

- इस काल में अनाज पर जीने वाले पचिंग पक्षियों के चित्र नहीं पाए जाते थे। बल्कि उन पशु और पक्षियों के चित्र पाए जाते थे, जिनका शिकार करके वे अपना जीवन निर्वाह करते थे।

- इस युग के लोग चित्र बनाते थे। मध्य प्रदेश की भीमबेटका गुफा इसका अद्भुत उदाहरण है। यह दक्षिण में विंध्यपर्वत पर अवस्थित है। इसके 10 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 500 भी ज्यादा चित्र बनाए गए हैं।

▪ नवपाषाण काल खाद्य उत्पादक काल था। सर्वप्रथम मनुष्य ने में मेहरगढ़ से चावल, गेहूँ तथा जौ के अवशेष मिले हैं। यहाँ के निवासी इसी काल में कृषि करना शुरू किया था। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत कृषि करने में उन्नत थे।

नवपाषाण काल के संदर्भ में

- इस काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औजारों और हथियारों का प्रयोग करते थे। वे खास तौर पर पत्थर की कुल्हाड़ियों का इस्तेमाल किया करते थे।
- कश्मीर में नवपाषाण संस्कृति के गर्तावास (गड्ढा-घर) के उदाहरण मिलते हैं। कश्मीर के बुर्जहोम में इसके अवशेष मिले हैं।
- इस काल में कुंभकारी शुरू हो गयी थी। आरंभ में हाथ से बनाए गए। मृदभांड मिलते थे तथा बाद में मिट्टी के बर्तन चाक पर बनने लगे। इन बरतनों में पॉलिशदार काला मृदभांड तथा धूसर मृदभाण्ड शामिल हैं।
- कश्मीर स्थित बुर्जहोम से प्राप्त कब्रों में पालतू कुत्तों को मालिक के साथ दफनाने के अवशेष मिले हैं। उल्लेखनीय है कि गुफकराल. जिसका अर्थ होता है कुलाल अर्थात कुम्हार की गुहा। यहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते थे।
- उल्लेखनीय है कि नवपाषाण काल में भारी तकनीकी प्रगति हुई, क्योंकि इसी अवधि में लोगों ने खेती, बुनाई, कुंभकारी भवन निर्माण, पशुपालन, लेखन आदि का कौशल विकसित किया।

स्थल	**अवशेष**
मेहरगढ़	कृषि
पिक्लीहल	राख का ढेर
चिरांद	हड्डी के हथियार
बुर्जहोम	गर्तावास

- मेहरगढ़ में बसने वाले नवपाषाण युग के लोग अधिक उन्नत थे। वे गेहूँ, जौ और रुई उपजाते थे तथा कच्ची ईंटों के घरों में रहते थे। उल्लेखनीय है कि इस काल में लोग मिट्टी और सरकंडों के बने गोलाकार या आयताकार घरों में भी रहते थे।
- नवपाषाण युग के लोग जो दक्षिण भारत में गोदावरी नदी के दक्षिण में ग्रेनाइट की पहाड़ियों के ऊपर बसे थे; वे फिगरिन्स (आग में पकी मिट्टी की मूर्तिकाएँ) में गाय, बैल, भेड़ और बकरी की मूर्तिकाएँ बनाते थे।

- प्रागैतिहासिक गुफा शैलचित्र का उदाहरण मध्य प्रदेश के भोपाल के पास भीमबेटका में मिले हैं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

ताम्रपाषाण कृषक संस्कृतियाँ

ताम्रपाषाण काल के संदर्भ में

- ताम्रपाषाण काल के लोग मुख्यत: ग्रामीण समुदाय बना कर रहते थे और देश के ऐसे विशाल भागों में फैले थे जहाँ पहाड़ी जमीन और नदियाँ थीं।
- मध्य और पश्चिमी भारत की मालवा ताम्रपाषाण संस्कृति की एक विलक्षणता है मालवा मृदभांड, जो ताम्रपाषाण मृदभांड में उत्कृष्टतम्। माना गया है,
- अहार और गिलुंद दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में स्थित ताम्रपाषाण काल के महत्त्वपूर्ण स्थल हैं।
- ताम्रपाषाण काल में सर्वप्रथम तांबे से औजार बनाने की शुरुआत हुई थी। इस काल में पत्थर एवं औजारों का साथ-साथ प्रयोग किया गया था।
- इस काल के लोग गेहूँ, चावल के अलावा बाजरे की खेती भी करते थे।
- उल्लेखनीय है कि वे लोग मसूर, उड़द और मूँग आदि सहित कई प्रकार के दलहन और मटर पैदा करते थे।
- अहार का प्राचीन नाम तांबवती अर्थात् तांबावाली है। अहार के लोगों को तांबा पास में मिलने के कारण धातुकर्म की जानकारी थी।
- जोरवे संस्कृति ग्रामीण थी। जोरवे संस्कृति मुख्य रूप से पश्चिमी महाराष्ट्र में पाई जाती थी। इस संस्कृति के निम्न पुरास्थल हैं- अहमदनगर जिले में जोरवे, नेवासा और दैमाबाद, पुणे जिले में चंदौली, सोनगाँव और इनामगाँव, प्रकाश और नासिक।
- जोरवे संस्कृति दैमाबाद और इनामगाँव में नगरीकरण के स्तर तक पहुँच गई थी।
- ताम्रपाषाण काल के लोग चाक पर बने काले व लाल मृदभांड का प्रयोग और चित्रित मृदभाण्डों का भी प्रयोग करते थे।
- दक्कन की काली मिट्टी में कपास की पैदावार की जाती थी।
- ताम्रपाषाण युग के लोग प्रायः पक्की ईंटों से परिचित नहीं थे। ये अपना घर कच्ची ईंटों से बनाते थे, परन्तु अधिकतर मकान गीली मिट्टी थोप कर बनाते थे। परन्तु अहाड़ के लोग पत्थर के बने घरों में रहते थे।
- महाराष्ट्र में कपास, सन और सेमल की रुई से बने धागे भी मिले हैं। इससे सिद्ध होता है कि वे लोग वस्त्र-निर्माण से सुपरिचित थे।
- इनामगाँव ताम्रपाषाण युग की एक बड़ी बस्ती थी। इसमें सौ से भी अधिक घर और कई कब्रें पाई गई हैं। यह बस्ती किलाबन्द और खाई। से घिरी हुई थी।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- ताम्रपाषाण काल में महाराष्ट्र के लोग मृतक को कलश में रखकर अपने घर में फर्श के अंदर उत्तर-दक्षिण स्थिति में दफनाते थे।
- इस काल में कब्र में मृत्तक के साथ मिट्टी की इंडिया और तांबे की कुछ वस्तुएँ भी रखी जाती थीं। उन लोगों का मानना था कि ये वस्तुएँ परलोक में मृतक के इस्तेमाल के लिये होती थीं।
- ताम्रपाषाण काल में मातृ-देवी की पूजा की जाती थी. इस काल की मिट्टी की स्त्री-मूर्तियाँ बड़ी संख्या में पाई गई हैं।
- इस काल में वृषभ (साँड़) को धार्मिक पशु माना जाता था। मालवा और राजस्थान में मिली रूढ़ शैली में बनी मिट्टी की वृषभ मूर्तिकाओं से यह साबित होता है कि वृषभ (साँड़) धार्मिक पंथ का प्रतीक था।
- इनामगाँव में मातृ-देवी की प्रतिमा मिली है जो पश्चिमी एशिया में पाई जाने वाली ऐसी प्रतिमाओं से मिलती है।

स्थल	**शवाधान विधियाँ**
पूर्वी भारत	आशिक शवाधान
पश्चिमी भारत	संपूर्ण शवाधान
दक्षिणी भारत	पूरब-पश्चिम दिशा
दक्षिणी भारत	उत्तर-दक्षिण दिशा

ताम्रपाषाण संस्कृति के संदर्भ में

- ताम्रपाषाण काल में बस्ती के ढाँचे और शव-संस्कार विधि दोनों से पता चलता है कि ताम्रपाषाण समाज में असमानता आरंभ हो चुकी थी।
- उल्लेखनीय है कि पश्चिमी महाराष्ट की चंदौली और नेवासा बस्तियों में पाया जाता है कि कुछ बच्चों के गलों में तांबे के मनकों का हार पहना कर दफनाया गया है, जबकि अन्य बच्चों की कब्रों में सामान के तौर पर कुछ बरतन मात्र हैं।
- इस काल में सरदार और उसके नातेदार आयताकार मकानों में बस्ती के केन्द्र स्थल में रहते थे।
- उल्लेखनीय है कि इनामगाँव में शिल्पी या पंसारी लोग पश्चिमी छोर पर रहते थे। आयताकार मकानों में सरदार वर्ग तथा गोल झोपड़ियों में सामान्य वर्ग के लोग रहते थे।
- मालवा संस्कृति नवदाटोली, एरण और नगदा में पाई जाती थी। यह संस्कृति हड़प्पा संस्कृति से पृथक मानी जाती है।

- जोरवे संस्कृति जो अंशतः विदर्भ और कोंकण को छोड़कर सारे महाराष्ट्र में फैली हुई थी। यह देश के दक्षिणी और पूर्वी भागों में ताम्रपाषाण बस्तियाँ हड़प्पा संस्कृति से स्वतंत्र रही थी।
- कायथा संस्कृति जो हड़प्पा संस्कृति की कनिष्ठ समकालीन है, इसके मृदभांड में कुछ प्राक् हड़प्पीय लक्षण है और साथ ही इस पर हड़प्पाई प्रभाव भी दिखाई देता है।
- गणेश्वर संस्कृति को उसके सूक्ष्म पाषाण वस्तुओं तथा अन्य पाषाण उपकरणों को देखते हुए प्राक हड़प्पाई ताम्रपाषाण संस्कृति कहा जा सकता है।
- ताम्रपाषाण अवस्था में अनाज, भवन, मृदभांड आदि में क्षेत्रीय अंतर भी दिखाई देते हैं। पूर्वी भारत चावल उपजाता था तो पश्चिमी भारत जौ और गेहूँ।
- मध्य प्रदेश में कायथा और एरण की और पश्चिमी महाराष्ट्र में इनामगाँव की बस्तियाँ किलाबंद थीं।
- नवदाटोली, मध्य प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण ताम्र-पाषाणिक पुरास्थल है जो नर्मदा नदी के तट पर बसा है। इस स्थान पर अब तक सबसे अधिक अनाज के भण्डार पाए गए हैं।।
- ताम्रपाषाण काल के लोग लिखने की कला नहीं जानते थे। उल्लेखनीय है कि वे नगरों में न रहकर ग्रामीण समुदाय में रहते थे। जबकि काँस्य युग के लोग नगरवासी हो गए थे।

स्थान	संस्कृति
दैमाबाद	जोरवे
एरण	मालवा
कालीबंगा	हड़प्पा
गिलुंद	ताम्रपाषाणिक

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

हड़प्पा संस्कृतिः कांस्य युग सभ्यता

हड़प्पा संस्कृति की विशेषताओं के संदर्भ में

- हड़प्पा संस्कृति एक नगरीय संस्कृति थी। इन नगरों में भवन ग्रीड पद्धति पर व्यवस्थित होते थे। उसके अनुसार सड़कें एक दूसरे को समकोण बनाती हुई काटती थीं और नगर अनेक खंडों में विभक्त थे।
- इन लोगों ने लेखन कला का आविष्कार किया था। इनकी लिपि चित्रलेखात्मक थी और चित्र के रूप में लिखा हर अक्षर किसी ध्वनि, भाव या वस्तु का सूचक है।
- इस संस्कृति में व्यापार, आदान-प्रदान तथा माप-तौल में 16 या उसके आवर्तकों का व्यवहार होता था, जैसे 16, 64, 160, 320 और 640 आदि । 16 के अनुपात की यह परंपरा भारत के आधुनिक काल तक चलती रही।
- हड़प्पा संस्कृति के लोग पत्थर और कांसे के बने औजारों का उपयोग करते थे।
- उल्लेखनीय है कि सिंधु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, राई, मटर आदि अनाज पैदा करते थे। बनावली में जौ का पुरावशेष मिला है।
- सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को है। कपास का उत्पादन सबसे पहले सिंधु क्षेत्र में होने के कारण यूनान के लोग इसे सिन्डन कहने लगे थे, जो सिंधु शब्द से निकला है। इस काल के लोग तिल और सरसों का उत्पादन करते थे।
- कालीबंगा में जुते हुए खेत के अवशेष पाए गए हैं।
- हड़प्पा संस्कृति में पशुपति महत्त्वपूर्ण देवता था। एक मुहर पर एक योगी को ध्यान मुद्रा में एक टांग पर दूसरी टांग डाले (पद्मासन) बैठा दिखाया गया है। इसके चारों ओर एक हाथी, एक बाघ और एक गैंडा मुहर पर चित्रित हैं। इस देवता को पशुपति महादेव बताया जाता है।
- इस काल के लोग कांस्य के निर्माण और प्रयोग से भी भली-भाँति परिचित थे। सामान्यतः धातु शिल्पियों द्वारा काँसा निर्माण तांबे में टिन मिलाकर किया जाता था।
- हड़प्पा संस्कृति अश्व केन्द्रित नहीं थी । वैदिक काल में आर्यों द्वारा घोड़े का प्रयोग मुख्य रूप से किया जाता था।

हड़प्पा संस्कृति में व्यापार के संदर्भ में

- हड़प्पा संस्कृति के लोगों के जीवन में व्यापार का बड़ा महत्त्व था। इसकी पुष्टि हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल में अनाज के बड़े-बड़े कोठारों से नहीं बल्कि एक बड़े भू-भाग में ढेर सारी मिट्टी की मुहरे और मानकीकृत माप-तौलों के अस्तित्व से भी होती है।
- इस काल के लोग व्यापार के लिये धातु के सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे। वे आदान-प्रदान वस्तु विनिमय द्वारा करते थे। वे मिट्टी की मुहरों का उपयोग करते थे।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

हड़प्पा संस्कृति की धार्मिक प्रथा के संदर्भ में

- हड़प्पा संस्कृति के लोग वृक्ष, पशु और मानव के स्वरूप में देवताओं की पूजा करते थे, परंतु ये अपने देवताओं के लिये मंदिर निर्माण नहीं करते थे। उस काल में मंदिर मिस्र और मेसोपोटामिया में बनाए जाते थे।
- हड़प्पा संस्कृति के लोग पृथ्वी को उर्वरता की देवी समझते थे और उसकी पूजा उसी तरह से करते थे। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा में पकी मिट्टी की मूर्तिका में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है। यह संभवतः पृथ्वी देवी की प्रतिमा है।
- सिंधु क्षेत्र के लोग वृक्ष व पशु पूजा करते थे। इनमें सबसे महत्त्व का

पशु एक सींग वाला यूनीकॉर्न (जो गैंडा हो सकता है), कूबड़ वाले साँड़ की भी पूजा की जाती थी।

- हड़प्पा संस्कृति के लोग भूत-प्रेत में विश्वास करते थे। उनके अनिष्ट से बचने के लिये तावीज पहनते थे।
- हड़प्पा संस्कृति का नाम सबसे पहले 1921 में पाकिस्तान के प्रांत में अवस्थित हड़प्पा नामक आधुनिक स्थल का पता चलने के कारण पड़ा है। यह सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में है।
- संस्कृति पश्चिमोत्तर भारतीय उपमहादेश में उदित होकर दक्षिण और पूर्व की ओर फैली। इसका विस्तार कश्मीर से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक और पश्चिम में बलूचिस्तान के मकरान समुद्र तट से लेकर दक्षिण में नर्मदा के मुहाने तक है।
- इस संस्कृति के परिपक्व अवस्था वाले नगरों में से धोलावीरा गुजरात के कच्छ क्षेत्र में अवस्थित है तथा राखीगढ़ी हरियाणा में घग्घर नदी पर स्थित है। दोनों नगरों में प्राक् हड़प्पा, हड़प्पाकालीन तथा उत्तर हड़प्पाकालीन की अवस्थाएँ मिलती हैं।

हड़प्पीय स्थल	**स्थिति (भारत)**
रंगपुर	गुजरात
कालीबंगा	राजस्थान
राखीगढ़ी	हरियाणा
मोहनजोदड़ो	सिंध

- इस संस्कृति की सर्वोत्तम कलाकृतियाँ उनकी 'मुहरें' हैं। अब तक लगभग 2000 सीलें प्राप्त हुई हैं। इनमें से अधिकांश मुहरों पर लघु लेखों के साथ-साथ एक सिंगी जानवर, भैंस, बाघ, बकरी आदि की आकृतियाँ उकेरी गई हैं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- सिंधु सभ्यता के लोगों के जीवन में व्यापार का बहुत महत्त्व था। शासकों का ध्यान क्षेत्र विजय की ओर नहीं था। सिंधु सभ्यता में अस्त्र-शस्त्रों का अभाव था।
- इस संस्कृति में शिल्पी धातु की खूबसूरत मूर्तियाँ बनाते थे। काँसे की नर्तकी उनकी मूर्तिकला का श्रेष्ठ नमूना है। परंतु यह लोग प्रस्तर शिल्प में पिछड़े हुए थे। प्राचीन मिस्र और मेसोपोटामिया की तरह यहाँ कोई महान प्रस्तर प्रतिमा नहीं मिलती है।
- हड़प्पा संस्कृति कई तत्त्वों के आधार पर पश्चिमी एशिया की संस्कृति से अलग है।
- इनकी विकसित नगर योजना प्रणाली के विपरीत मिस्र और मेसोपोटामिया में नगर बेतरतीब बढ़ते जाने की प्रवृत्ति थी। इन देशों में नगर योजना नहीं पाई जाती थी।
- हड़प्पा की चित्रात्मक लिपि का मिस्र और मेसोपोटामिया की लिपियों से कोई समानता नहीं है।
- उल्लेखनीय है कि हड़प्पाइयों की मुहरें व मृदभांड पर अंकित पशु-मंडल स्थानीय हैं।
- हड़प्पा संस्कृति के सभी नगरों में सभी मकान आयताकार हैं, जिनमें पक्का स्नानागार और सीढ़ीदार कुआँ संलग्न है। पश्चिमी एशिया के नगरों में इस तरह की प्रणाली नहीं पाई जाती थी।
- यह संस्कृति कांस्ययुगीन थी। इस काल के लोग कांस्य निर्माण पद्धति से परिचित थे। ये धातु की खूबसूरत मूर्तियाँ बनाते थे, परंतु इनके औजार ज्यादातर पत्थर के बने होते थे।
- लोथल गुजरात में खंभात की खाड़ी पर स्थित बंदरगाह नगर था।
- इस काल में नालों को बाँधों से घेरकर जलाशय बनाने की परिपाटी बलूचिस्तान और अफगानिस्तान में पाई जाती थी, परंतु नहर/नालों से सिंचाई का चलन नहीं था।
- इस काल में लकड़ी के हलों का प्रयोग किया जाता था। राजस्थान के कालीबंगा में हल से जोते हुए खेत के निशान पाए गए हैं।
- हड़प्पा संस्कृति के नगरों में पक्की ईंटों का इस्तेमाल विशेष बात है। क्योंकि मिस्र के समकालीन भवनों में धूप से सुखाई गई ईंटों का ही प्रयोग हुआ था
- हड़प्पा संस्कृति के अंतर्गत पंजाब, सिंध और बलूचिस्तान के भाग के साथ गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सीमांत भाग थे। इसका पूरा क्षेत्रफल लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर है। इसका क्षेत्र ईसा पूर्व तीसरी और दूसरी सहस्राब्दि में संसार की सभी संस्कृतियों से बड़ा था।
- हड़प्पा संस्कृति के परिपक्व अवस्था वाले नगरों में सुतकागेंडोर और सुरकोटदा समुद्रतटीय नगर थे।
- इस संस्कृति के सात नगरों को ही परिपक्व अवस्था वाले नगर कहा जा सकता है। उनमें हड़प्पा, पंजाब में और मोहनजोदड़ो (अर्थात् प्रेतों का टीला) सिंध में (पाकिस्तान) हैं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- हड़प्पा संस्कृति में समाज, शासक और सामान्य वर्ग में बँटा हुआ था। शासक वर्ग के लोग नगर दुर्ग में रहते थे। प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर एक-एक निम्न स्तर का शहर था, जहाँ ईंटों के मकानों में सामान्य लोग रहते थे।
- इस काल में लिंग पूजा का प्रचलन पाया जाता है, जो कालान्तर में। शिव की पूजा से गहन रूप से जुड़ गया। हड़प्पा में पत्थर से बने लिंग के अनेक प्रतीक मिले हैं।
- उत्तर हड़प्पा काल में गुजरात के लोथल में अग्नि-पूजा की परम्परा चली थी, किंतु इसके लिये मंदिरों का उपयोग नहीं होता था। मिस्र और मेसोपोटामिया के नितांत विपरीत किसी भी हड़प्पाई स्थल पर मंदिर नहीं पाया गया है।
- मेलुहा सिंधु संस्कृति का प्राचीन नाम है। 2350 ई.पू. के आसपास मेसोपोटामियाई अभिलेखों में मेलुहा के साथ व्यापारिक संबंधों की चर्चा है। मेसोपोटामिया के पुरालेखों में दो मध्यवर्ती व्यापार केन्द्रों का उल्लेख मिलता है दिलमन और माकन। ये दोनों मेसोपोटामिया और मेलुहा के बीच में हैं।

हड़प्पाई नगरों के संदर्भ में

- कालीबंगा राजस्थान के गंगानगर जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है। कालीबंगा का अर्थ है 'काले रंग की चूड़ियाँ । यहाँ पर हड़प्पा पूर्व और हड़प्पाकालीन अवस्थाएँ देखने को मिलती हैं।
- विशाल स्नानागार मोहनजोदड़ो का सबसे महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल है, जिसका जलाशय दुर्ग के टीले में है। यह ईंटों के स्थापत्य का सुंदर उदाहरण है।
- हड़प्पा संस्कृति मिस्रवासियों की तरह मातृ सत्तात्मक नहीं थी। मिस्र में सम्पत्ति/राज्य का उत्तराधिकार कन्या को मिलता था।
- इस संस्कृति में यूनीकॉर्न सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा उसके बाद कूबड़ वाले सांड़ का महत्त्व था।
- सिंधु प्रदेश में टेराकोटा (आग में पकी मिट्टी) की बनी मूर्तिकाएँ फिगरिन कहलाती थीं।
- हड़प्पा संस्कृति का नाम सिंधु नदी के क्षेत्र में विकसित होने के कारण सिंधु सभ्यता भी कहा जाता है। यह सिंधु व उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में विकसित हुई थी।
- मिस्र सभ्यता नील नदी के किनारे विकसित हुई थी। मिस्र के लोग नील नदी को आइसिस् देवी मानकर पूजा करते थे।
- मेसोपोटामिया सभ्यता का विकास दजला-फरात नदियों के क्षेत्र में हुआ था।

उत्तर हड़प्पा संस्कृति के संदर्भ में

- हड़प्पा संस्कृति के सुव्यवस्थित नगर-निवेश, व्यापक ईंट-संरचनाएँ लिखने की कला, मानक बाट-माप, दुर्गनगर, कांसे के औजारों का इस्तेमाल और काले रंग के मृदभांड से लेकर चित्रित लाल मृदभांड के निर्माण तक। इसमें शैलीगत एकरूपता समाप्त हो गई और शैली में विविधता आ गई।

- उत्तर- हड़प्पा संस्कृतियाँ मूलतः ताम्रपाषाणिक हैं, जिनमें पत्थर और तांबे के औजारों का उपयोग होता था। इनमें धातु के ऐसे उपकरण बनते थे, जिनकी ढलाई आसान है।
- उल्लेखनीय है कि इस संस्कृति के लोग गांवों में बस गए और खेती, पशुपालन, शिकार और मछली पकड़ने का व्यवसाय करने लगे थे।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

आर्यों का आगमन और ऋग्वैदिक युग

आर्यों के संदर्भ में

- आर्य मध्य एशिया से भारत की ओर आए। इनका मूल निवास स्थान आल्प्स पर्वत के पूर्वी क्षेत्र में यूरेशिया में था। यह बात आनुवंशिक आधार पर सिद्ध हो चुकी है।
- आयों का मुख्य व्यवसाय पशुचारण था, कृषि का स्थान गौण था।
- आर्य लोगों के जीवन में घोड़े का सबसे अधिक महत्त्व था। घोड़े की तेज गति के कारण आर्य अलग-अलग दिशाओं में फैले थे।

ऋग्वेद के संदर्भ में

- ऋग्वेद सबसे पहला और प्राचीनतम ग्रन्थ है। भारत में आयों की जानकारी इसी से मिलती है। इसमें आर्य शब्द का 36 बार उल्लेख हुआ है।
- ऋग्वेद में दस मंडल या भाग हैं, जिनमें मंडल 2 से 7 तक प्राचीनतम अंश हैं। प्रथम और दसवाँ मंडल सबसे बाद में जोड़े गए हैं।
- अवेस्ता ईरानी भाषा का प्राचीनतम ग्रन्थ है। ऋग्वेद की अनेक बातें अवेस्ता से मिलती हैं। दोनों ग्रन्थों में बहुत-से देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम समान हैं।

वैदिक संस्कृति के संदर्भ में

- सिंधु आर्यों की सबसे प्रमुख नदी थी। ऋग्वेद में सिंधु और उसकी पाँच सहायक नदियों का नामोल्लेख है। सरस्वती उनके द्वारा उल्लेखित दूसरी महत्वपूर्ण नदी थी, इसे नदीतम अर्थात् सर्वश्रेष्ठ नदी कहा गया था।
- आर्य लोगों ने जहाँ पहले निवास किया, वह प्रदेश सप्त सिंधु के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसमें अफगानिस्तान का भाग भी पड़ता है।
- आर्यों की शवदाह प्रथा के प्रचलन के साक्ष्य मध्य एशिया में दक्षिण तजाकिस्तान, पाकिस्तान की स्वात घाटी, पिराक क्षेत्र और गोमल (गोमती) घाटी में भी लगभग 1500 ई.पू. के मिलते हैं।
- ऋग्वेद में दस्यु यहाँ के मूल निवासियों को कहा जाता था। आयों के जिस राजा ने उन्हें पराजित किया, वह त्रसदस्यु कहलाया। ऋग्वेद में | दस्यु हत्या शब्द का बार-बार उल्लेख मिलता है। दस्यु लोग लिंग पूजा करते थे।
- ऋऋग्वेद में इन्द्र को पुरंदर कहा गया है, जिसका अर्थ है दुर्गों को तोड़ने वाला। इन्द्र आर्यों के प्रमुख देवता थे।
- आर्य लोग हर जगह इसलिये जीते गए क्योंकि उनके पास अश्वचालित रथ थे और उन्होंने पश्चिम एशिया और भारत में पहले-पहल इन रथों को प्रचलित किया था। उन्होंने काँसे के बेहतर हथियारों का भी प्रयोग किया था।

- पंचजन आर्यों के पाँच कबीलों का समुदाय कहलाता था। ये आपस में लड़ते रहते थे। और कभी-कभी आर्योत्तर जनों का सहारा भी लेते थे।
- दाशराज्ञ युद्ध भरत कुल के राजा सुदास और दस राजाओं के बीच हुआ था। यह युद्ध परुष्णी नदी जिसे आज रावी नदी के नाम से जाना जाता है, के तट पर हुआ था। इसमें राजा सुदास की जीत हुई और इस प्रकार आगे चलकर हमारे देश का नाम भारतवर्ष भरत कुल के नाम पर पड़ा।
- इस काल में गाय सबसे उत्तम धन मानी जाती थी। आयों की अधिकांश लड़ाईयाँ गायों को लेकर हुई हैं। ऋग्वेद में युद्ध का पर्याय गाविष्टि (गाय का अन्वेषण) है।
- आर्य लोग नगर में नहीं रहते थे, वे गढ़ बनाकर मिट्टी के घर वाले गाँवों में रहते थे।
- इस काल में तांबे या काँसे के अर्थ में 'अयस' शब्द का प्रयोग होता था। उन्हें धातु कर्म की जानकारी थी। आर्य लोगों में बढ़ई, रथकार, बुनकर और कुम्हार आदि शिल्पियों के उल्लेख मिलते हैं।
- इस काल में हरियाणा में भगवानपुरा नामक स्थल की और पंजाब में तीन स्थलों पर चित्रित धूसर मृदभांड के अवशेष पाए गए हैं। इनका काल ऋग्वेद के समकालीन है।
- ऋग्वेद काल में बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। इस काल में विवाह की आयु 16-17 वर्ष थी। विधवा विवाह का प्रचलन भी था।
- इस काल में रोमन समाज की तरह पितृतंत्रात्मक व्यवस्था का प्रचलन था । निरन्तर युद्ध होने के कारण लोग हमेशा वीर पुत्रों की कामना करते थे।
- इस काल में अदिति और उषा जो प्रभात समय का प्रतिरूप है, की पूजा होती थी। परंतु प्रार्थना में देवियों को देवताओं की स्थान प्राप्त नहीं था। तुलना प्रमुख
- ऋग्वेद में किसी तरह के न्यायाधिकारी का उल्लेख नहीं है। यहाँ समाज विरोधी हरकतों को रोकने तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिये गुप्तचर रखे जाते थे।
- ऋग्वैदिक काल में अधिकारी विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े थे। चरागाह या बड़े जत्थे का प्रधान व्राजपति कहलाता था।
- परिवारों के प्रधानों को कुलपा कहा जाता था।
- ग्रामणी आरम्भ में छोटी-सी कबायली लड़ाकू टोली का मुखिया होता था। बाद में जब ऐसी टोलियाँ स्थिरवासी हो गई, तब ग्रामणी मारे गाँव का मुखिया हो गया।
- उल्लेखनीय है कि व्रात, गण, ग्राम और सर्ध आदि नाम से विभिन्न कबायली टोलियाँ लड़ाई लड़ती थी। इस काल में कबायली ढंग का शासन था, जिसमें सैनिक तत्त्व प्रबल होता था।
- आर्य नाम का उल्लेख अनातोलिया (तुर्की) में उन्नीसवीं से सत्रहवीं सदी ई.पू. के हिट्टाइट अभिलेख में, ईराक में 1600 ई.पू. के कस्साइट अभिलेख में तथा सीरिया में मितन्नी अभिलेखों में मिलता है।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- ऋग्वेद में परिवार के लिये 'गृह' शब्द का प्रयोग होता था। इसमें माता, पिता, पुत्र, दास आदि के अलावा अन्य और भी लोग आते थे। उस समय पृथक कुटुंबों की स्थापना की दिशा में पारिवारिक संबंधों का विभेदीकरण बहुत अधिक नहीं था। कुटुंब एक बड़ी सम्मिलित इकाई थी।
- ऋग्वेद में कबीले के लिये दूसरा महत्त्वपूर्ण शब्द 'विश' का प्रयोग होता था। विश् को लड़ाई के उद्देश्य से ग्राम नामक टोलियों में बाँटा गया था। ऋग्वेद में इसका उल्लेख 170 बार हुआ है।
- उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद में 'जनपद' शब्द एक बार भी नहीं आया है।
- वैदिक काल के लोग देवताओं की उपासना आध्यात्मिक उत्थान या से संतति, पशु, अन्न, धान्य और आरोग्य आदि पाने की कामना से जन्म-मृत्यु के कष्टों से मुक्ति के लिये नहीं करते थे। वे अपने देवताओं करते थे।
- इस संस्कृति में देवताओं की उपासना की मुख्य रीति स्तुति-पाठ करना और यज्ञ-बलि अर्पित करना था। इस काल में स्तुति पाठ पर अधिक जोर था। यह सामूहिक भी होता था और अलग-अलग भी।
- इस काल में पुरोहितों को दक्षिणा में गाय और दासियाँ दी जाती थी। भूमि का दान नहीं होता था। इस काल में लोग गाय चराने, खेती करने और रहने के लिये भूमि पर अधिकार करते थे, परंतु भूमि निजी संपत्ति नहीं होती थी।
- आरंभिक आर्यों का निवास पूर्वी अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत में पंजाब और हरियाणा में था।
- ऋग्वेद में पुरोहित विश्वामित्र ने लोगों को आर्य बनाने के लिये गायत्री मंत्र की रचना की थी।
- ऋग्वेद में व्यवसाय के आधार पर समाज में वर्ण व्यवस्था का आरम्भ हुआ था, परंतु यह बहुत कड़ा (कट्टर) नहीं था। चतुर्थ वर्ण शूद्र कहलाता था। वह ऋग्वेद के अंत में दिखाई पड़ता है। क्योंकि इसका वर्णन दशम् मंडल में है, जो सबसे बाद में जोड़ा गया है।

देवता	**शक्तियाँ**
इन्द्र	वर्षा का देवता
वरुण	जल का देवता
मारुत	आंधी का देवता
सोम	वनस्पतियों का देवता

ऋग्वैदिक काल में राज्य व्यवस्था के संदर्भ में

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- ऋग्वैदिक काल में राजा का पद आनुवंशिक हो चुका था। वह राजन् (राजा) कहलाता था, परंतु उसके हाथ में असीमित अधिकार नहीं थे। उसे कबायली संघटनों से सलाह लेनी पड़ती थी। कबीले की आम सभा जो समिति कहलाती थी, यह अपने राजा को चुनती थी।
- ऋग्वेद में कुल के आधार पर बहुत से संघटनों का उल्लेख मिलता है, जैसे सभा, समिति, विदथ और गण। इनमें से सभा और समिति महत्त्वपूर्ण थे। राजा को इनका समर्थन आवश्यक होता था।
- इस काल में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। वे यज्ञ, सभा और विदथ में भाग लेती थीं।
- ऋग्वेद में अग्नि, इन्द्र, वरुण, और मित्र आदि देवताओं की स्तुतियाँ संगृहीत हैं।
- ऋग्वेद में इन्द्र को बादल का देवता माना गया है। अग्नि का स्थान दूसरा है। वे लोग मानते थे कि अग्नि में डाले जाने वाली आहुतियाँ धुआँ बनकर आकाश में जाकर अंततः देवताओं को मिल जाती हैं।
- पशुपति को हड़प्पा काल का मुख्य देवता माना गया है न कि ऋग्वैदिक काल का। अतः ऋग्वेद में पशुपति की स्तुति का वर्णन नहीं मिलता।

edusol Learn Anytime Anywhere

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

उत्तर वैदिक अवस्था: राज्य और वर्ण व्यवस्था की ओर

वैदिककालीन साहित्य के संदर्भ में

- वैदिक सूक्तों या मंत्रों के संग्रह को संहिता कहा जाता है। इसी के आधार पर आरंभिक वैदिक युग का वर्णन किया गया है।
- चारों वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) में से ऋग्वेद संहिता सबसे पुराना वैदिक ग्रन्थ है।
- ब्राह्मण ग्रन्थ की रचना वैदिक संहिता के बाद हुई है। इनमें वैदिक अनुष्ठान की विधियाँ संगृहीत हैं और उन अनुष्ठानों की सामाजिक एवं धार्मिक व्याख्या भी दी गई है। उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद काल के बाद रचे गए ग्रन्थों पर आधारित इतिहास उत्तर वैदिक काल कहलाता है।

संहिता	विषय वर्णन
ऋग्वेद	देवताओं की स्तुति
सामवेद	गायन
यजुर्वेद	ऋचाएँ तथा कर्मकाण्ड
अथर्ववेद	व्याधियों के निवारण हेतु तंत्र-मंत्र

वैदिक और उत्तर- वैदिक अवस्था में ग्रन्थों के रचना काल के संदर्भ में

- ऋग्वेद की रचना 1500-1000 ई. पू. के आस-पास के पश्चिमोत्तर भारत (पंजाब, हरियाणा) में हुई थी।
- उत्तर-वैदिककालीन ग्रन्थों की रचना 1000-500 ई.पू. में उत्तर गंगा के मैदान में हुई थी।

उत्तर- वैदिक काल के संदर्भ में

- इस काल में कृषि लोगों की जीविका का मुख्य साधन हो गई थी। वैदिक ग्रन्थों में बैल से हल जोते जाने की चर्चा है।
- वैदिक काल के लोग जौ तो उपजाते ही रहे, पर इस काल में चावल और गेहूँ भी उनकी मुख्य फसलों में शामिल हो गए। बाद में चलकर गेहूँ पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश का मुख्य खाद्य हो गया।
- • उल्लेखनीय है कि वैदिक ग्रन्थों में चावल का नाम ब्रीहि है।

- उत्तर वैदिक काल के लोग चार प्रकार के मृदभांडों से परिचित थे-काला व लाल मृदभांड, काली पॉलिशदार मृदभांड, चित्रित धूसर मृदभांड और लाल मृदभांड। इनमें लाल मृदभांड सबसे अधिक प्रचलित था। चित्रित धूसर मृदभांड उनके सर्वोपरि वैशिष्ट्य का सूचक है।

उत्तर- वैदिक काल में राजनीतिक संगठन के संदर्भ में

- इस काल में राजा अधिकाधिक शक्तिशाली हो गया था। राज्य में राजा का पद आनुवंशिक हो गया तथा ज्येष्ठ पुत्र को उत्तराधिकारी बनाया जाता था, परंतु राजा कोई स्थायी सेना नहीं रखता था। युद्ध के समय कबीले के जवान भर्ती कर लिये जाते थे।
- इस काल में सभा, समितियों के महत्त्व में कमी आ गई थी। विदध का नामोनिशान नहीं रहा। सभा, समिति अपनी जगह बनी रही. परंतु उनका रंग-ढंग बदल गया। उनमें राजाओं और अभिजात्यों का अधिकार हो गया था।
- राष्ट्र' शब्द जिसका अर्थ प्रदेश या क्षेत्र होता है. समय मिलने लगा था।

उत्तर वैदिक काल में किये जाने वाले यज्ञों के संदर्भ में

- उत्तर वैदिक काल में कर्मकांडीय विधान राजा को शक्तिशाली बनाने के लिये किये जाते थे। राजा राजसूय यज्ञ करता था. जिससे यह समझा जाता था कि उसे दिव्य शक्ति मिल गई।
- अश्वमेघ यज्ञ राज्य विस्तार के लिये किया जाता था। इस यज्ञ में राजा का घोड़ा छोड़ा जाता था। छोड़ा गया घोड़ा जिन-जिन क्षेत्रों से बेरोक टोक गुजरता था, उन सारे क्षेत्रों पर उस राजा का एकछत्र राज्य माना जाता था।
- उल्लेखनीय है कि राजा वाजपेय यज्ञ (रथदौड़) भी करता था। जिसमें राजा का रथ उसके अन्य सभी बंधुओं से आगे निकलता था। इन सारे अनुष्ठानों से प्रजा के चित्त पर राजा की बढ़ती हुई शक्ति और महिमा की गहरी छाप पड़ती थी।

उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा के संदर्भ में

- उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। उन्हें पुरुष के अधीनस्थ माना जाने लगा तथा उन्हें शिक्षा से वंचित किया जाने लगा।
- इस काल में स्त्रियों को सम्पति के अधिकार तथा उपनयन संस्कार से प्रतिबंधित कर दिया गया।
- इस काल में सभा, समिति तथा विदथ अपनी जगह बनी रही, परंतु उनका महत्त्व पहले जैसा नहीं था। अब सभा में स्त्रियों का प्रवेश निषेध हो गया।

उत्तर- वैदिक काल के संदर्भ में

- उत्तर-वैदिककालीन ग्रंथों में तीन उच्च वर्णों और शूद्रों के बीच विभाजक रेखा देखने को मिलती है। चतुर्थ वर्ण शुद्र की सामाजिक दशा में गिरावट आई। उन्हें उपनयन संस्कार से वंचित कर दिया गया और यहीं से उपनयन का अभाव शूद्र की दासता का द्योतक बन गया। वे गायत्री मंत्र का उच्चारण नहीं कर सकते थे।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- इस काल में मनुष्य का जीवन चार आश्रमों ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम में बाँटा गया। उल्लेखनीय है कि उत्तर-वैदिक काल में तीन आश्रमों का उल्लेख है। चतुर्थ आश्रम सुप्रतिष्ठित नहीं हुआ था।
- इस काल में आराधना मुख्य रूप से यज्ञों द्वारा होती थी। यज्ञों के साथ अनेकानेक अनुष्ठान व मंत्रविधियाँ प्रचलित हुई।
- उत्तर वैदिक काल में गोत्र- प्रथा स्थापित हुई। गोत्र शब्द का मूल अर्थ है गोष्ठ या वह स्थान जहाँ समूचे कुल का गोधन पाला जाता था, परंतु बाद में इसका अर्थ एक ही मूल पुरुष से उत्पन्न लोगों का समुदाय हो गया। फिर गोत्र से बाहर विवाह करने की प्रथा चल पड़ी।
- इस काल के अंतिम दौर में, पुरोहितों के प्रभुत्व और कर्मकांडों के विरुद्ध प्रबल प्रतिक्रिया शुरू हुई। यह प्रतिक्रिया पांचाल और विदेह के राज्य में विशेषकर हुई।
- उपनिषद ग्रन्थों की रचना 600 ई. पू. के आसपास हुई थी। इनका विषय दर्शन था, इनमें कर्मकांड की निंदा की गई है और यथार्थ विश्वास एवं ज्ञान को महत्त्व दिया गया। उपनिषदों में कहा गया है। कि अपनी आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और ब्रह्म के साथ आत्मा का संबंध ठीक से जानना चाहिये।
- इस काल में लौह धातु को श्याम या कृष्ण अयस कहा गया है। इस काल के लोग लोहे के बने हथियारों और औजारों का प्रयोग करते थे। विस्तार करने तथा ऊपरी गंगा के मैदानों के जंगलों को साफ करने में लोहे की कुल्हाड़ी का प्रयोग किया गया था। इस काल में लोहे के प्रयोग का प्रमाण मृतकों के साथ कब्रों में दबाए गए लोहे के औजार भारी मात्रा में खुदाई से मिले हैं।
- 'शतपथ' ब्राह्मण में हल के संबंध में वर्णन किया है।
- महाभारत महाकाव्य में वर्णित 'कुरु' कुल दो प्रमुख कबीलों भरत और पुरु एक होकर बना था। आरम्भ में ये लोग सरस्वती और दृषद्वती नदियों के प्रदेश में बसे । कुरू कुल का इतिहास महाभारत युद्ध को लेकर प्रसिद्ध है, जिस पर महाभारत महाकाव्य विख्यात है।
- इस काल में 'संगृहीत का कार्य कर एकत्र करना था।

वैदिक काल के राजनीतिक संगठन को बढ़ते क्रम में व्यवस्थित

कुल < ग्राम < विश् < जन < राष्ट्र

उत्तर- वैदिक काल के देवताओं के संदर्भ में

- उत्तर वैदिक काल में इन्द्र व अग्नि देवता (वैदिककालीन) अब उसने प्रमुख नहीं रहे थे। इनकी जगह सृजन के देवता प्रजापति को सर्वोच्च स्थान मिला था।

- विष्णु देवता इस काल में पालक और रक्षक देवता के रूप में प्रसिद्ध हुए थे। उल्लेखनीय है कि पशुओं के देवता रूद्र ने उत्तर वैदिक काल में महत्ता पाई थी।
- 'पूषन्' जो पशुओं की रक्षा करने वाला माना जाता था. शूद्रों का देवता हो गया था।

edusol Learn Anytime Anywhere

जैन और बौद्ध धर्म

जैन और बौद्ध धर्म के उदय के संदर्भ में

- वैदिकोत्तर काल में समाज चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित था। यह वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर निश्चित की गई थी। इसमें ब्राह्मणों को विशेषाधिकार दिये गए और वे समाज में सर्वोच्च होने का दावा करते थे। क्षत्रियों को दूसरा तथा वैश्य को तीसरा स्थान प्राप्त था । वैश्य वर्ण को कर चुकाने का दायित्व तथा चतुर्थ शूद्र वर्ण को तीनों वर्णों की सेवा का कर्त्तव्य था। इस तरह के वर्ण-विभाजन वाले समाज में तनाव पैदा होने की प्रतिक्रिया स्वरूप तथा ब्राह्मणों के श्रेष्ठता के विरुद्ध क्षत्रियों का खड़ा होना भी इसका अन्यतम कारण हुआ।
- पूर्वोत्तर भारत में अच्छी वर्षा होने के कारण घने जंगल छाए हुए थे। उन जंगलों को साफ करने के लिये लोहे के औजारों का इस्तेमाल होने लगा तो मध्य गंगा के मैदानों में भारी संख्या में लोग बसने लगे। इस प्रदेश में बड़ी-बड़ी बस्तियाँ बसने लगीं और खेती करने के लिये लोहे के हलों के लिये बड़ी संख्या में बैलों की जरूरत होने लगी। हालाँकि उस समय बैलों (वैदिक कर्मकाण्डों में बलि के कारण) की कमी थी, इसलिये नई कृषिमूलक अर्थव्यवस्था को चलाने के लिये पशु वध को रोकना आवश्यक था। अतः इन दोनों धर्मों में अहिंसा पर बल दिया गया।
- दोनों धर्मों का उदय तात्कालिक जन्ममूलक वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज की प्रतिक्रिया-स्वरूप हुआ था। उन्होंने आरंभिक अवस्था में वर्ण व्यवस्था को कोई महत्त्व नहीं दिया।
- दोनों धर्मों ने अहिंसा को विशेष स्थान दिया, क्योंकि अहिंसा से युद्धों का अंत हो सकता था। इसके फलस्वरूप व्यापार वाणिज्य में उन्नति हो सकती थी और असंख्य यज्ञों में बछड़ों और साँडों के लगातार मारे जाने से क्षीण होते पशुधन को बचाया जा सकता था। यह पशुधन कृषिमूलक अर्थव्यवस्था के लिये आवश्यक था।
- दोनों धर्मों के भिक्षुओं को आदेश था कि वे जीवन की विलासिता की वस्तुओं का प्रयोग न करें। वे दाताओं से उतना ही दान ग्रहण करें। जितना प्राण रक्षा के लिये आवश्यक हो। वे सरल, शुद्ध और संयमित जीवन के पक्षधर थे।
- जैन धर्म में धर्म के सिद्धांतों के उपदेष्टा तीर्थंकर कहलाते थे। इसमें 24 तीर्थंकर हुए थे। महावीर को चौबीसवाँ व अंतिम तीर्थंकर माना जाता है।
- जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव को माना जाता है। पाश्र्वनाथ तेइसव तीर्थंकर माने जाते हैं, जो वाराणसी के निवासी थे।
- महावीर की माता का नाम त्रिशला था, जो बिम्बिसार के ससुर लिच्छवी- नरेश चेतक की बहन थी। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था तथा वे क्षत्रिय कुल के प्रधान थे।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- जैन धर्म में पूर्वजन्म का अस्तित्व स्वीकार किया गया है। तीर्थंकर | महावीर के अनुसार, पूर्वजन्म में अर्जित किये गए पुण्य या पाप के अनुसार ही उच्च या निम्न कुल में जन्म होता है। उनके मतानुसार शुद्ध और अच्छे आचरण वाले निम्न जाति के लोग भी मोक्ष पा सकते हैं।
- कैवल्य द्वारा सुख-दुख पर विजय प्राप्त करने के कारण महावीर 'जिन' और उनके अनुयायी 'जैन' कहलाते थे। ।
- महावीर ने जैन धर्म के पाँच व्रतों में पाँचवां व्रत ब्रह्मचर्य को जोड़ा था
- जैन अनुयायियों के संघ में स्त्री और पुरुष दोनों को स्थान मिला था।
- जैन धर्म में सांसारिक बंधनों से छुटकारा पाने के उपाय बताए गए हैं। मोक्ष पाने के लिये कर्मकांडीय अनुष्ठान की आवश्यकता नहीं है। यह सम्यक् ज्ञान, सम्यक ध्यान और सम्यक् आचरण से प्राप्त किया जा सकता है। ये तीनों जैन धर्म के त्रिरत्न माने जाते हैं।
- कपिलवस्तु के निकट नेपाल के तराई में अवस्थित लुम्बिनी को महात्मा बुद्ध का जन्म स्थान माना जाता है। अन्य तीनों नगर महावीर से संबंधित हैं।
- वैशाली को महावीर का जन्म स्थान, पावापुरी को निर्वाण स्थान तथा चंपा में महावीर ने उपदेश दिये थे।

जैन धर्म के संदर्भ में

- जैन धर्म के उपदेशों को संकलित करने के लिये पाटलिपुत्र में एक परिषद् का आयोजन किया गया था।
- जैन धर्म में धर्मोपदेश के लिये आम लोगों के बोलचाल की प्राकृत भाषा को अपनाया गया तथा धार्मिक ग्रन्थों के लिये अर्द्ध-मागधी भाषा को। ये ग्रन्थ ईसा की छठी सदी में गुजरात के वलभी नामक स्थानमें जो महान विद्या का केन्द्र था, अंतिम रूप से संकलित किये गए।प्राकृत भाषा से कई क्षेत्रीय भाषाएँ विकसित हुई।
- बौद्धों की तरह जैन लोग आरम्भ में मूर्तिपूजक नहीं थे, बाद में वे महावीर और तीर्थंकरों की पूजा करने लगे। इसके लिये सुन्दर और विशाल प्रस्तर- प्रतिमाएँ विशेषकर कर्नाटक, गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश में निर्मित हुई।
- जैन धर्म ने देवताओं का अस्तित्व स्वीकार किया है, परंतु उनका स्थान 'जिन' से नीचे रखा गया है।
- पाँचवीं सदी में कर्नाटक में स्थापित जैन मठ 'बसदि' कहलाते थे।
- जैन धर्म में कृषि और युद्ध दोनों वर्जित हैं क्योंकि दोनों से जीव हिंसा होती है। फलत: जैन धर्मावलम्बियों में व्यापार और वाणिज्य करने वालों की संख्या अधिक थी।

महात्मा बुद्ध के संदर्भ में

- गौतम बुद्ध ने अपने ज्ञान का प्रथम प्रवचन वाराणसी के सारनाथ नामक स्थान पर दिया। बौद्ध धर्म में इसे धर्म चक्रप्रवर्तन कहा गया है।

- महात्मा बुद्ध ने अपना ध्यान सांसारिक समस्याओं में लगाया, वे व्यर्थ के वाद-विवादों में नहीं उलझे, चूँकि उस समय आत्मा और परमात्मा के विषय पर चर्चा जोरों से चल रही थी। बुद्ध कहते थे संसार दुःखमय है, मनुष्य की इच्छाएँ (लालसा) दुःख का कारण हैं, अगर इन पर विजय पाई जाए तो मनुष्य का निर्वाण संभव है।
- बौद्ध धर्म में मध्यम मार्ग को ही श्रेष्ठ मार्ग माना गया है। ये अत्यधिक विलासिता और अत्यधिक संयम को स्वीकार नहीं करते थे।
- बौद्ध धर्म में ईश्वर और आत्मा की सत्ता स्वीकार नहीं की गई है। बौद्ध धर्म शुरू से ही दार्शनिक वाद-विवादों के जंजाल में नहीं पड़ा, इसने लोगों के व्यावहारिक दुखों को दूर करना ही अपना उद्देश्य समझा।

बौद्ध धर्म में ह्रास के संदर्भ में

- ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिये अपने धर्म में सुधार किया। उन्होंने गोधन की रक्षा पर बल दिया तथा स्त्रियों और शूद्रों के लिये भी धर्म का मार्ग प्रशस्त किया।
- बौद्ध भिक्षु जनजीवन की मुख्य धारा से कटते गए। उन्होंने पालि भाषा को छोड़ दिया और संस्कृत भाषा को ग्रहण किया। बौद्ध विहार राजाओं से सम्पत्तियाँ दान में लेने लगे। विहारों में अपार संपत्ति आने से और स्त्रियों के प्रवेश होने से उनकी स्थिति और भी खराब हो गई। अब बौद्ध धर्म में कर्मकांडों को ज्यादा महत्त्व दिया जाने लगा।

•उत्तर वैदिक काल में दो उच्च वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय) को द्विज कहा जाता था। द्विज को जनेऊ पहनने का और वेद पढ़ने का अधिकार था। वैश्य को भी द्विज समूह में शामिल किया जाता था। परंतु शूद्रों को इससे वंचित रखा गया था।

नगर संस्कृति > लोहे का हल > पंचमार्क्ड > सोने के सिक्के

- भारत में सबसे प्राचीन सभ्यता 'हड़प्पा सभ्यता' अपनी नगर योजना के लिये प्रसिद्ध है।
- लोहे का ज्ञान कांसे के बाद वैदिक काल में 1000 ई.पू. में हुआ।
- भारत में सबसे प्राचीन सिक्के पंचमार्क्स/आहत सिक्के 6ठी शताब्दी ई.पू. में अस्तित्व में आए।
- सबसे पहले भारत में सोने के सिक्के हिंद-यवन शासकों (द्वितीय शताब्दी ई.पू.) ने जारी किये।
- वैश्यों में वणिक जो व्यापार करते थे, सेट्ठि कहलाते थे। क्षत्रियों के अतिरिक्त वैश्यों ने महावीर और गौतम बुद्ध दोनों की उदारतापूर्वक सहायता की थी।

जैन और बौद्ध धर्मों के समान धार्मिक विश्वास के संदर्भ में

- दोनों धर्म समान रूप से अहिंसा का उपदेश देते हैं। दोनों धर्मों के पंचव्रत में अहिंसा को स्थान दिया गया है।
- बौद्ध और जैन दोनों संप्रदाय सरल शुद्ध और संयमित जीवन के पक्षधर हैं। दोनों संप्रदाय के भिक्षुओं को आदेश था कि वे जीवन में विलास की वस्तुओं का उपयोग नहीं करें। उन्हें दाताओं से उतना ही ग्रहण करना था जितने से उनकी प्राण-रक्षा हो।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- मध्यम मार्ग (मध्यम प्रतिपदा) का मार्ग बौद्ध धर्म में अपनाया गया है, जैन धर्म में नहीं। बौद्ध धर्म के अनुसार न अत्यधिक विलास करना चाहिये न अत्यधिक संयम में रहना चाहिये। वे मध्यम मार्ग के प्रशंसक थे।

. जैन और बौद्ध धर्मों को सहायता देने में वैश्य वर्ग के आगे रहने के कारणों के संदर्भ में

- दोनों धर्मों में शांति और अहिंसा का उपदेश होता था, जिससे विभिन्न राजाओं के बीच होने वाले युद्धों का अंत हो सकता था। फलस्वरूप वैश्व वर्ग के व्यापार-वाणिज्य में उन्नति संभव थी।

- ब्राह्मणों की कानून संबंधी पुस्तकें, जो धर्मसूत्र कहलाती थीं, सूद पर धन लगाने के कारोबार को निंदनीय समझा जाता था और में सूद पर जीने वालों को अधम कहा जाता था। अतः जो वैश्य व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि होने के कारण महाजनी करते थे, वे समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये इन धर्मों (जैन एवं बौद्ध) की ओर आकर्षित हुए। व्यापार में सिक्कों के प्रचलन से व्यापार वाणिज्य बढ़ा और उससे समाज में वैश्यों का महत्त्व बढ़ा। स्वभावतः वे किसी ऐसे धर्म की। खोज में थे जहाँ उनकी सामाजिक स्थिति सुधरे। इसलिये उन्होंने उदारतापूर्वक दान दिये।

बौद्ध भिक्षु और ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों के संदर्भ में

- बौद्ध धर्म तथा ब्राह्मण धर्म के अनुयायी दोनों समाज में वर्ग/वर्णमूलक व्यवस्था के समर्थक थे। परंतु बौद्ध धर्म गुण और कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था मानते थे, जबकि ब्राह्मण जन्म के अनुसार मानते थे।

- उल्लेखनीय है कि बौद्ध भिक्षु संसार से विरक्त रहते थे और ब्राह्मणों की निंदा करते थे, परंतु दोनों के विचार परिवार का पालन करने, निजी सम्पत्ति की रक्षा करने और राजा का सम्मान करने पर समान थे।

बौद्ध धर्म के संदर्भ में

- बौद्ध धर्म ने अहिंसा और जीवमात्र के प्रति दया की भावना जगा कर देश में पशुधन की वृद्धि की। प्राचीनतम बौद्ध ग्रन्थ सुत्तनिपात में गाय को भोजन, रूप और सुख देने वाली (अन्नदा, वन्नदा और सुखदा) कहा गया है और इसी कारण उसकी रक्षा करने का उपदेश दिया गया है।

- बौद्ध धर्म में अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के लिये बौद्धों ने साहित्य-सर्जना में आमजन की भाषा पालि को अपनाया, जबकि जैन धर्म ने प्राकृत भाषा को।

- बौद्ध धर्म ने बौद्धिक और साहित्यिक जगत में भी चेतना जगाई। इसने लोगों को बताया कि किसी भी वस्तु को भली-भाँति गुण-दोषों का 'विवेचन करके ग्रहण करें, तथा अंधविश्वास की जगह तर्क के आधार पर विश्वास करें। इससे लोगों में 'बुद्धिवाद' का महत्त्व बढ़ा

बौद्ध धर्म के साहित्य के संदर्भ में

- बौद्ध धर्म के आरम्भिक पालि साहित्य को तीन कोटियों में बाँटा जा सकता है।

1. बुद्ध
2. (संघ और

3. धम्म

- बौद्ध साहित्य की तीसरी कोटि 'धम्म' में दार्शनिक विवेचन दिये गए हैं। उल्लेखनीय है कि प्रथम कोटि में 'बुद्ध' के वचन और उपदेश हैं। दूसरी कोटि 'संघ' में सदस्यों द्वारा पालनीय नियम बताए गए हैं।
- बौद्ध विहार महान विद्या केंद्र हो गए थे, जिन्हें आवासीय (छात्रावासीय) विश्वविद्यालय की संज्ञा दी जा सकती है। इनमें बिहार में नालंदा और विक्रमशीला तथा गुजरात में वलभी उल्लेखनीय है। सम्राट अशोक के शासनकाल में तक्षशिला महान बौद्ध विद्या केंद्र था।

बौद्ध धर्म के संदर्भ में

- प्राचीन भारत की कला पर बौद्ध धर्म का स्पष्ट प्रभाव है। भारत में पूजित पहली मानव प्रतिमाएँ बुद्ध की हैं। श्रद्धालु उपासकों ने बुद्ध के जीवन की अनेक घटनाओं को पत्थरों पर उकेरा है।
- भारत के पश्चिमोत्तर सीमांत में यूनान और भारत के मूर्तिकारों ने नए ढंग की कला की सृष्टि करने के लिये सम्मिलित रूप से प्रयास किया, जिसका परिणाम 'गंधार कला' शैली के नाम से विख्यात है।
- भिक्षुओं के निवास के लिये चट्टान तराश कर कमरे बनाए गए और। इस प्रकार गया की बराबर की पहाड़ियों और पश्चिम भारत में नासिक के आस-पास की पहाड़ियों में गुहा-वास्तुशिल्प का आरम्भ हुआ।।

बुद्ध के जीवन की चार महत्त्वपूर्ण घटनाओं और उनसे संबद्ध चारों स्थानों

घटनाएँ	**स्थान**
जन्म	**लुम्बिनी**
ज्ञानप्राप्ति	**बोधगया**
प्रथम प्रवचन	**सारनाथ**
निर्वाण	**कुशीनगर**

- गौड़ देश के शिवभक्त राजा शशांक ने बोधगया में उस बोधिवृक्ष को काट डाला जिसके नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।
- ब्राह्मण शासक पुष्यमित्र शुंग ने बौद्धों को सताया था।
- शैव संप्रदाय के हूण राजा मिहिरकुल ने सैकड़ों बौद्धों को मौत के घाट उतारा था।
- सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को ग्रहण किया तथा इस धर्म को दूसरे । देशों में फैलाया और इसे विश्व धर्म का रूप दिया।

बौद्ध धर्म के संदर्भ में

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- सम्राट अशोक ने बुद्ध के निर्वाण के दो सौ साल बाद बौद्ध धर्म ग्रहण किया। अशोक ने अपने धर्मदूतों के द्वारा इस धर्म को मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, श्रीलंका, बर्मा, तिब्बत तथा चीन और जापान के भागों में फैलाया और इसे विश्व धर्म का रूप दिया।
- बौद्ध धर्म के तीन प्रमुख अंग थेः बुद्ध, संघ और धम्म। संघ के तत्त्वावधान में सुगठित प्रचार की व्यवस्था होने से बुद्ध के जीवन काल में ही बौद्ध धर्म ने तेजी से प्रगति की। मगध, कोसल और कौशाम्बी के राजाओं और अनेक गणराज्यों ने बौद्ध धर्म को अपनाया
- बौद्ध धर्म पुनर्जन्म को मानता है। बौद्ध धर्म यह भी उपदेश देता है कि जो व्यक्ति दरिद्र भिक्षुओं को भीख देगा, वह अगले जन्म में धनवान बनेगा। उल्लेखनीय है कि बौद्ध धर्म के प्रतीत्य समुत्पाद (किसी वस्तु के होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति) में बारह क्रम है, जिसे द्वादश निदान भी कहते हैं।

edusol Learn Anytime Anywhere

जनपद – राज्य और प्रथम मगध साम्राज्य

•ईसा पूर्व छठी सदी से पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार में लोहे का व्यापक प्रयोग होने से बड़े-बड़े प्रादेशिक या जनपद राज्यों के निर्माण के लिये उपयुक्त परिस्थितियाँ बनीं।

•खेती के नए औजारों और उपकरणों की मदद से किसान आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा करने लगे, इसलिये राजा अपने सैनिकों के लिये और प्रशासनिक प्रयोजनों के लिये इस अनाज को जमा कर सकता था। इन भौतिक लाभों के कारण किसानों को अपनी जमीन से लगाव होना स्वाभाविक था, साथ ही वे अपने पड़ोस के क्षेत्रों में भी जमीन हड़प कर फैलने लगे। लोगों की जो प्रबल निष्ठा अपने जन या कबीले के प्रति थी, वह अब अपने जनपद या स्वसंबद्ध भूभाग के प्रति हो गई।

•पूर्व से शुरू करने पर सबसे पहले अंग जनपद था जिसमें आधुनिक मुंगेर और भागलपुर जिले पड़ते हैं। उसके बाद मगध जनपद जो आधुनिक पटना और गया जिले में तथा शाहाबाद का कुछ हिस्सा पड़ता था। उसके बाद काशी जनपद उसके पश्चिम में कोसल जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश में पड़ता था तथा सबसे पश्चिम में मत्स्य जनपद पड़ता था।

अंग – मगध – काशी – कोसल – मत्स्य	
महाजनपद	**राजधानी**
अंग	**चंपा**
मगध	**राजगीर**
काशी	**वाराणसी**
कोसल	**श्रावस्ती**

बिम्बिसार के संदर्भ में

- बिम्बिसार की पहली पत्नी कोसलराज की पुत्री और प्रसेनजित की बहन थी।
- उल्लेखनीय है कि बिम्बिसार ने वैवाहिक संबंधों से भी अपनी स्थिति को मजबूत किया। उसने तीन विवाह किये, प्रथम विवाह से काशी ग्राम दहेज स्वरूप मिला और कोसल के साथ शत्रुता समाप्त हो गई। उसकी दूसरी पत्नी वैशाली की लिच्छवि-राजकुमारी चेल्लणा थी. जिसने अजातशत्रु को जन्म दिया और तीसरी रानी पंजाब के मद्र कुल के प्रधान की पुत्री थी।
- बिम्बिसार ने अंग देश पर अधिकार कर लिया और शासन अपने पुत्र अजातशत्रु को सौंप दिया।

- उसने अपने राजवैद्य जीवक को अवन्ति राजा चण्डप्रद्योत महासेन के पीलिया रोग हो जाने पर इलाज करने के लिये उज्जैन भेजा था।

राज्य	राजधानी
मल्ल	कुशीनारा
वत्स	कौशांबी
लिच्छवि	वैशाली

अजातशत्रु के संदर्भ में

- अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके सिंहासन पर अधिकार किया था।
- अजातशत्रु ने राज्य विस्तार की आक्रामक नीति से काम लिया। उसने अपने समय में काशी और वैशाली को मगध में मिलाया और अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

मगध राज्य के संदर्भ में

- उदायिन अजातशत्रु के बाद मगध का राजा बना। उसके शासन की महत्त्वपूर्ण घटना है कि उसने पटना में गंगा और सोन के संगम पर एक किला बनवाया था।
- मगध पर शिशुनाग वंश के बाद नंद वंश का शासन हुआ। नंद वंश का महापद्म नंद ने कलिंग को जीतकर मगध शक्ति को बढ़ाया और विजय स्मारक के रूप में 'जिन' की मूर्ति भी उठा लाए थे। महापद्म नंद ने 'एकराट' की उपाधि धारण की थी।
- मगध पर शिशुनाग वंश के शासन के समय अवन्ति राज्य की शक्ति को समाप्त कर उसे मगध राज्य में मिला लिया था, इसके साथ ही अवन्ति और मगध के बीच की सौ साल पुरानी शत्रुता का अंत हो गया।
- मगध ही पहला राज्य था जिसने अपने पड़ोसियों के विरुद्ध युद्ध में हाथियों का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया। देश के पूर्वांचल से मगध के शासकों के पास हाथी पहुँचते थे।
- मगध साम्राज्य पर शासन करने वाले राजवंशों का सही क्रम इस प्रकार है:

हर्यक – वंश – शिशुनाग वंश – नंद वंश – मौर्य वंश

मगध का एक साम्राज्य के रूप में स्थापित होने के कारणों के संदर्भ में

- मगध राज्य के पास समृद्ध लौह खनिज के भंडार थे। जिसके कारण। वे प्रभावशाली हथियार बना सके। उनके विरोधी ऐसे हथियार आसानी से नहीं प्राप्त कर सकते थे

- मगध राज्य मध्य गंगा के मैदान के मध्य में पड़ता था। इस उर्वरक प्रदेश से जंगल साफ हो चुके थे। यहाँ भारी वर्षा होने के कारण सिंचाई के बिना भी अच्छी पैदावार की जाती थी। परिणामतः यहाँ के किसान काफी अनाज पैदा कर लेते थे और भरण-पोषण के बाद भी उनके पास काफी अनाज बचता था। शासक कर के रूप में इस फाजिल उपज को एकत्र कर लेते थे,
- मगध की दोनों राजधानियाँ- प्रथम राजगीर और द्वितीय पाटलिपुत्र सामरिक दृष्टि से परम महत्त्वपूर्ण स्थानों पर थी। राजगीर पाँच पहाड़ियों की श्रृंखला से घिरी थी इसलिये वह दुर्भेद्य था। मगध की दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र केन्द्र भाग में स्थित होने के कारण सभी दिशाओं से संचार संबंध स्थापित कर सकते थे। पाटलिपुत्र गंगा, गंडक और सोन नदियों के संगम पर स्थित थी। सोन और गंगा नदियाँ इसके पश्चिम और उत्तर में थीं, तो पुनपुन दक्षिण और पूर्व की ओर से घेरे हुए। थी। इस प्रकार पाटलिपुत्र एक जलदुर्ग था।

राजा	**राज्य**
चण्डप्रद्योत	**अवन्ति**
प्रसेनजित	**कोसल**
अजातशत्रु	**मगध**

ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण

1.516 ई.पू. में पश्चिमोत्तर भारत में ईरानी आक्रमण के संदर्भ में

- सर्वप्रथम ईरानी शासक दारयवहु (देरियस) ने 516 ई.पू. में पश्चिमतर भारत पर आक्रमण किया था। उसने पंजाब तथा सिंधु नदी के पश्चिम के इलाके और सिंध को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- उल्लेखनीय है कि ईरानी साम्राज्य में कुल मिलाकर अट्ठाइस क्षत्रपियाँ थीं। पंजाब व सिंध प्रदेश इसके बीसवाँ प्रांत या क्षत्रपी बना था।
- पंजाब का सिंधु नदी के पश्चिम वाला हिस्सा साम्राज्य का सबसे अधिक आबाद और उपजाऊ क्षेत्र था।
- पश्चिमोत्तर भारत में मगध की तरह कोई शक्तिशाली साम्राज्य नहीं था। छोटे-छोटे राज्य आपस में लड़ते रहते थे, और यह क्षेत्र समृद्ध भी था।

भारत और ईरान के मध्य संपर्क के परिणामों के संदर्भ में

- ईरानी लिपिकार भारत में लेखन का एक खास रूप लेकर आए जो खरोष्ठी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह लिपि अरबी की तरह दायों से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- मौर्य वास्तु कला पर ईरानी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अशोककालीन स्मारक, विशेष कर घंटा के आकार के गुंबज कुछ हद तक ईरानी प्रतिरूपों पर आधारित थे।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में ईरानी सिक्के भी मिलते हैं, जिनसे ईरान के साथ व्यापार होने के संकेत मिलते हैं।

भारत में सिकंदर की सफलता के संदर्भ में

- भारत में उस समय कोई केंद्रीय सत्ता नहीं थी। पश्चिमोत्तर भारत में छोटे-छोटे राज्य थे जो आपस में लड़ते रहते थे।
- उसके पास श्रेष्ठ सेना थी, इसलिये वह हर युद्ध में विजय प्राप्त करता गया।

सिकंदर के भारत पर आक्रमण के संदर्भ में

- 326 ई.पूर्व में सिकंदर के भारत पर आक्रमण के क्रम में उसका पहला सामना तक्षशिला के शासक आम्भि से हुआ था, परंतु झेलम नदी के किनारे पहुँचने पर सिकंदर का पहला और सबसे शक्तिशाली प्रतिरोध पोरस ने किया था। वह पोरस की बहादुरी और साहस से बड़ा प्रभावित हुआ। इसलिये उसने उसका राज्य वापस कर दिया और उसे अपना सहयोगी बना लिया पोरस का राज्य झेलम और चेनाब नदियों के मध्य था। सिकंदर का भारत अभियान 19 महीने का रहा था।

Telegram - https://t.me/edusolapp
Visit- https://edusoln.com/

- उसके आक्रमण के समय मगध पर नंद वंश का शासन था। यूनानी इतिहासकारों के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य नंद वंश की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिये सिकंदर से जाकर मिला था।
- उल्लेखनीय है कि, उस समय नंद वंश का राजा घनानंद का शासन था।

सिकंदर के आक्रमण के परिणाम के संदर्भ में

- इसके आक्रमण का सबसे महत्त्वपूर्ण परिणाम, भारत और यूनान के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष संपर्क की स्थापना था। सिकंदर के अभियान से चार भिन्न-भिन्न स्थलमार्गों और जलमार्गों के द्वार खुले। इससे यूनानी व्यापारियों और शिल्पियों के लिये व्यापार का मार्ग प्रशस्त हुआ
- तथा व्यापार की तत्कालीन सुविधा बढ़ी।
- उसने झेलम के तट पर बुकेफाल नगर और सिंध में सिकंदरिया नगर बसाया था, जो उपनिवेशों में सबसे महत्त्वपूर्ण थे।
- उसने अपने मित्र नियार्कस के नेतृत्व में सिंधु नदी के मुहाने से फरात नदी के मुहाने तक समुद्र तट का पता लगाने और बंदरगाहों को ढूँढने के लिये भेजा था।

edusol Learn Anytime Anywhere

बुद्धकाल में राज्य और वर्ण- समाज

छठी सदी ईसा पूर्व के संदर्भ में

- पुरातत्त्व के अनुसार छठी सदी ईसा पूर्व उत्तरी काला पॉलिशदार मृद्भांड अवस्था का आरम्भ काल है। इसकी बनावट उत्कृष्ट कोटि की थी तथा यह बहुत चिकना और चमकीला होता था। इस समय में ही गंगा के मैदानों में नगरीकरण की शुरुआत हुई। यह भारत का द्वितीय नगरीकरण का काल कहलाता है।
- इ.पू. तीसरी सदी में पकी ईंटों और छल्लेदार कुओं का प्रयोग देखने को मिलता है।
- वैदिक ग्रंथों में आए शतमान और निष्क जो वस्तुतः एक अलंकरण थे, मुद्रा के नाम माने जाते हैं।
- पालि ग्रंथों में गाँव के तीन प्रकार बताए गए हैं-पहले प्रकार में सामान्य गाँव है जिनमें विविध वर्णों और जातियों का निवास रहता था। ऐसे गाँवों की संख्या सबसे अधिक थी। दूसरे, प्रकार में उपनगरीय गाँव थे जिन्हें शिल्पी ग्राम कहते थे, ये गाँवों को नगरों से जोड़ते थे। तीसरे प्रकार में सीमांत ग्राम आते थे, जो जंगल से संलग्न देहातों की सीमा पर बसे थे।
- 'भोजक' पहले प्रकार के गाँव का मुखिया कहलाता था।
- किसान अपनी उपज का छठा भाग कर या राजांश के रूप में देते थे। कर की वसूली सीधे राजा के कर्मचारी करते थे।

छठी सदी ईसा पूर्व में व्यापार के संदर्भ में

- इस काल में शिल्पी और वाणिक दोनों अपने-अपने प्रमुखों के नेतृत्व में श्रेणियाँ बनाकर संगठित हो गए थे। इस काल की अठारह श्रेणियों का उल्लेख मिलता है, लेकिन विशेष रूप में उल्लेख केवल लुहारों,
- बढ़इयों, चर्मकारों और रंगकारों की श्रेणियों का हुआ है।
- वाराणसी इस काल का महान व्यापार केंद्र था। व्यापार मार्ग श्रावस्ती से पूर्व और दक्षिण की ओर निकलकर कपिलवस्तु और कुशीनगर। होते हुए वाराणसी तक गया था।
- इस काल में सबसे पहले धातु के सिक्कों का चलन आरंभ हुआ था। आरंभ में मुख्यतः ये सिक्के चांदी के होते थे। यद्यपि कुछ तांबे के भी सिक्के मिले हैं। ये आहत मुद्रा (पंचमार्कड) कहलाते हैं।

छठी सदी ईसा पूर्व में अधिकारी वर्ग के संदर्भ में

- इस काल में 'महामात्र' उच्च कोटि के अधिकारी कहलाते थे। वे कई तरह के कार्य करते थे, जैसे-मंत्री, सेनानायक, न्यायाधिकारी आदि।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- शौल्किक या शुल्काध्यक्ष चुंगी वसूल करने वाला अधिकारी होता था।। वह व्यापारियों से उनके माल पर चुंगी वसूल करता था।
- बलिसाधक वे अधिकारी होते थे जो किसानों से फसल का अनिवार्य रूप से देय हिस्सा वसूलते थे।

ईसा पूर्व छठी सदी में विधि व्यवस्था के संदर्भ में

- भारतीय विधि और न्याय व्यवस्था का उद्भव इसी काल में हुआ। पहले कबायली कानून चलते थे, जिसमें वर्ण-भेद का कोई स्थान नहीं था।
- धर्मसूत्रों में हर वर्ण के लिये अपने-अपने कर्त्तव्य तय कर दिये गए। और वर्णभेद के आधार पर ही व्यवहार विधि (सिविल लॉ) और दंड विधि (क्रिमिनल लॉ) तय हुई।

बुद्धकालीन गणतंत्रीय एवं राजतंत्रीय प्रणाली के संदर्भ में

- गणतंत्रों का संचालन अल्पतांत्रिक सभाएँ करती थीं जबकि राजतंत्रों में यह एक व्यक्ति राजन् करता था। गणतंत्रों की परंपरा मौर्य काल से कमजोर होना प्रारंभ हो गयी थी।

edusol Learn Anytime Anywhere

मौर्य युग

मौर्य साम्राज्य के संदर्भ में

- अशोक' के नाम का उल्लेख केवल प्रथम लघु शिलालेख की प्रतियों में किया गया है जो कर्नाटक के तीन स्थानों (मास्की, नूट्टूर और उदेगोलम) तथा मध्य प्रदेश के गुर्जरा से मिला है।
- किसान अपनी उपज का चौथे हिस्से से लेकर छठे हिस्से तक कर के रूप में देते थे।
- जिन किसानों को सिंचाई सुविधा दी गई थी, उनसे सिंचाई कर लिया जाता था।
- मौर्यों का शासन भारत में केवल तमिलनाडु तथा पूर्वोत्तर भारत के भाग को छोड़कर समस्त भारतीय उपमहाद्वीप में फैला हुआ था।

अशोक के अभिलेखों के संदर्भ में

- अशोक पहला भारतीय राजा हुआ जिसने अपने अभिलेखों के सहारे सीधे अपनी प्रजा को संबोधित किया। इन अभिलेखों में राजा के आदेश सूचित किये गए हैं।
- अशोक के अभिलेखों को पाँच श्रेणियों में बाँटा गया है: दीर्घ शिलालेख, लघु शिलालेख, पृथक शिलालेख, दीर्घ स्तंभलेख और लघु स्तंभलेख ।उल्लेखनीय है कि प्रथम लघु शिलालेख को छोड़कर अन्य सभी अभिलेखों में अशोक के नाम के स्थान पर केवल देवानांपिय पियदसि (देवों का प्यारा) उसकी उपाधि के रूप में मिलता है।
- अफगानिस्तान से प्राप्त अशोक के अभिलेखों की भाषा और लिपि आरामाइक एवं यूनानी दोनों हैं जबकि भारत में यह ब्राह्मी लिपि में लिखित हैं। किंतु पश्चिमोत्तर भाग में ये खरोष्ठी और आरामाइक लिपियों में हैं।

सम्राट अशोक के कलिंग युद्ध के संदर्भ में

- कलिंग युद्ध का वर्णन तेरहवें मुख्य शिलालेख में किया गया है।
- राजसिंहासन पर बैठने के पश्चात् सम्राट अशोक ने केवल एक युद्ध किया, जो कलिंग युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।
- ऐसा माना जाता है कि इस युद्ध में एक लाख लोग मारे गए थे। इसी संदर्भ में अशोक के अभिलेख शतसहस्र शब्द का प्रयोग हुआ है।
- अशोक के तेरहवें शिलालेख में बताया गया है कि कलिंग युद्ध उसके राज्याभिषेक के आठ वर्ष के बाद हुआ था।
- अशोक की गृह और विदेश नीति बौद्ध धर्म के आदर्श से प्रेरित थी। कलिंग युद्ध के पश्चात् उसने दूसरे राज्यों पर भौतिक विजय पाने की नीति छोड़ कर सांस्कृतिक विजय पाने की नीति अपनाई, दूसरे शब्दों में भेरी घोष के स्थान पर धम्म-घोष होने लगा।

अशोक की धम्म नीति के संदर्भ में

- अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद नितांत शांति की नीति नहीं अपनाई. प्रत्युत वह अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने की व्यावहारिक नीति पर चला। उसने विजय के बाद कलिंग को अपने कब्जे में रखा और अपनी सेना का विघटन नहीं किया।
- अशोक ने बौद्ध धर्म को ग्रहण किया और बौद्ध धर्म स्थानों की यात्राएँ कीं। उसकी इस यात्रा के लिये धम्मयात्रा शब्द का उल्लेख मिलता है।
- अशोक ने बौद्धों को तीसरे सम्मेलन (संगीति) का आयोजन करवाया था।
- उल्लेखनीय है कि, तीसरा बौध सम्मेलन का आयोजन पाटलिपुत्र में मोग्गलिपुत्त तिस्स की अध्यक्षता में हुआ था।

अशोक द्वारा नियुक्त अधिकारियों के संदर्भ में

- अशोक ने 'धम्ममहामात्र' की नियुक्ति समाज के विभिन्न वर्गों के बीच धर्म का प्रचार करने के लिये की थी।
- 'राजूक' को अधिकारियों को पुरस्कार और दंड देने का अधिकार दिया गया था।

अशोक द्वारा किये गए सामाजिक सुधारों के संदर्भ में

- अशोक कर्मकांडों का विरोधी था, विशेषकर स्त्रियों में प्रचलित अनुष्ठानों का विरोधी था। उसने कई तरह के पशु-पक्षियों की हिंसा पर रोक। लगा दी थी।
- उसने सभी सामाजिक उत्सवों पर रोक नहीं लगाई बल्कि ऐसे तड़क-भड़क वाले सामाजिक समारोहों पर रोक लगा दी जिनमें लोग रंगरेलियाँ मनाते थे, जो सामाजिक कुरीतियों के प्रतीक थे।
- अशोक ने देश में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उसने एक धर्म, एक भाषा और प्रायः एक लिपि के सूत्र में सारे देश को बाँध दिया। उसने सहनशील धार्मिक नीति चलाई। उसने प्रजा पर बौद्ध धर्म लादने की चेष्टा नहीं की, प्रत्युत उसने हर संप्रदाय के लिये दान दिये। उसके पास पर्याप्त साधन-संपदा होने के बाद भी कलिंग विजय के बाद और कोई युद्ध नहीं किया। इस अर्थ में वह अपने समय और अपनी पीढ़ी से बहुत आगे था।

▪ **ईसा पूर्व चौदहवीं सदी में मिश्र के शासक अखनातून ने शांतिवादी नीति को अपनाया था।**

edusol Learn Anytime Anywhere

मौर्य शासन का महत्त्व

मौर्य काल के संदर्भ में

- कौटिल्य ने राजा को 'धर्म-प्रवर्तक' अर्थात् सामाजिक व्यवस्था का संचालक कहा है। अशोक ने धर्म का प्रवर्तन किया और उसके मूलतत्त्वों को सारे देश में समझाने और स्थापित करने के लिये। अधिकारियों की नियुक्ति की।
- मौर्य शासन काल में शीर्षस्थ अधिकारी 'तीर्थ' कहलाते थे।
- 'पण' 3/4 तोले के बराबर चांदी का सिक्का होता था। यह मुद्रा का प्रकार था।

मौर्य काल में अधिकारी वर्ग के संदर्भ में

- समाहर्ता' कर निर्धारण का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
- 'सन्निधाता' राजकीय कोषागार और भंडागार का संरक्षक होता था।
- उल्लेखनीय है कि राज्य में समाहर्ता के कर निर्धारण के चलते लाभ-हानि होती थी, इसलिये उसे अधिक महत्त्व दिया जाता था।

मौर्य काल में कृषकों के संदर्भ में

- मौर्य काल में अधिकारी जमीन को मापता और उन नहरों का निरीक्षण करता था जिनसे होकर पानी छोटी नहरों में पहुँचता था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कृषि कार्यों में दासों के लगाए जाने की व्यवस्था का वर्णन मिलता है, जो महत्त्वपूर्ण सामाजिक विकास का परिचायक था। मौर्य काल में ही दासों को कृषि कार्यों में बड़े पैमाने पर लगाया गया।
- राज्य कृषकों की भलाई के लिये सिंचाई और जल वितरण की व्यवस्था करता था।
- इस काल में कर निर्धारण की सुगठित प्रणाली का विकास किया गया।

मौर्य शासकों द्वारा एक मजबूत केन्द्रीय शासन स्थापित करने के संदर्भ में

- केंद्रीय नियंत्रण पाटलिपुत्र की अनुकूल अवस्थिति के कारण संभव हुआ।
- यहाँ से जलमार्ग के द्वारा कर्मचारी चारों और आ-जा सकते थे।
- पूरे साम्राज्य में सड़कों का जाल बिछा हुआ था, इस सुगठित सड़क मार्ग प्रणाली में पाटलिपुत्र से एक राजमार्ग वैशाली और चम्पारण होते हुए नेपाल तक जाता था।
- उल्लेखनीय है कि मेगास्थनीज ने एक सड़क की चर्चा की है जो पश्चिमोत्तर भारत को पटना से जोड़ती थी।

मौर्य काल की वास्तुकला के संदर्भ में

edusol Learn Anytime Anywhere

- पत्थर के स्तम्भ वाराणसी के पास चुनार में तैयार किये जाते थे और यहीं से उत्तरी और दक्षिणी भारत में पहुँचाए जाते थे। जबकि अन्य तीनों कथन सत्य हैं।
- इस काल में पत्थर की इमारत बनाने का काम भारी पैमाने पर शुरू हुआ।
- मौर्य शिल्पियों ने बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिये चट्टानों को काट कर गुफाएँ बनाने की परंपरा भी शुरू की। इसका सबसे पुराना उदाहरण बराबर की गुफाएँ हैं।

गंगा के मैदान में नई भौतिक संस्कृति के विकास के संदर्भ में

- गंगा के मैदान की इस नई भौतिक संस्कृति के आधार थे- लोहे का प्रचुर प्रयोग, आहत मुद्राओं की बहुतायत लेखन कला का प्रयोग. उत्तरी काला पॉलिशदार मृदभांड नाम से प्रसिद्ध मिट्टी के बरतनों की भरमार, पकी ईंटों और छल्लेदार कुओं का प्रचलन और सबसे ऊपर पूर्वोत्तर भारत में नगरों का उदय ।

•अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ था। वृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग के द्वारा की गई और शुंग वंश की नींव रखी।

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों के संदर्भ में

- अशोक की धार्मिक नीति ब्राह्मणों के विरुद्ध थी। उसने पशु-पक्षियों के वध को निषिद्ध कर दिया और कर्मकांडीय अनुष्ठानों पर रोक लगाई जिसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों की आय में कमी आई, और ब्राह्मणों में उसके प्रति विद्वेष की भावना जागी। मौर्य साम्राज्य के खंडहर पर खड़े हुए नए राज्यों के शासक ब्राह्मण हुए।
- सेना और प्रशासनिक अधिकारियों पर होने वाले भारी खर्च के बोझ से मौर्य साम्राज्य के सामने वित्तीय संकट उत्पन्न हो गया था। अशोक ने बौद्ध भिक्षुओं को इतना दान दिया कि राजकोष ही खाली हो गया। अंतिम अवस्था में अपने खर्च को पूरा करने के लिये मौयों को सोने की देवप्रतिमाएँ तक गलानी पड़ी।
- साम्राज्य के टूटने का एक महत्त्वपूर्ण कारण था प्रांतों में दमनकारी। शासन। अशोक के कलिंग अभिलेख में बताया गया है कि प्रांतों में हो रहे अत्याचारों से वह बड़ा चिंतित था।

मौर्य काल के संदर्भ में

- मौर्य शासन में मयूर, पर्वत और अर्ध-चंद्र की छापवाले आहत रजत-मुद्राएँ मान्य थी। ये मुद्राएँ कर की वसूली और अधिकारियों के वेतन भुगतान में सुविधाप्रद हुई होंगी और अपनी शुद्ध समरूपता के कारण व्यापक क्षेत्र में बाजार की लेन-देन में सुविधा के साथ चलती थी।
- प्रांतों में हो रहे अत्याचारों को दूर करने के लिये अशोक ने तोसली, उज्जैन और तक्षशिला के अधिकारियों के स्थानांतरण की परिपाटी चलाई।
- मौर्य काल में ही पूर्वोत्तर भारत में सर्वप्रथम पकाई हुई ईंट का प्रयोग हुआ। मकान ईंटों के भी बनते थे और लकड़ी के भी।
- प्रायद्वीपीय भारत में राज्य स्थापित करने की प्रेरणा न केवल चेदियों और सातवाहनों को बल्कि चेरों (केरलपुत्रों), चोलों और पाण्ड्यों को भी मौर्यों से ही मिली है।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

चीन की दीवार के संदर्भ में

- चीन की दीवार का निर्माण राजा शीह हुआँग ती ने लगभग 220 ई.पू. में सीथियन शकों के हमले से अपने साम्राज्य की सुरक्षा के और लिये करवाया।
- यूनानियों ने उत्तर अफगानिस्तान में बैक्ट्रिया नामक राज्य स्थापित किया था।
- यूनानियों ने सर्वप्रथम 206 ई. पू. में भारत पर आक्रमण किया था

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

मध्य एशिया से संपर्क और उनके परिणाम

मौर्योत्तर काल के संदर्भ में

- मौर्योत्तर काल में पूर्वी भारत, मध्य भारत और दक्कन में मौर्यों के स्थान पर शुंग, कण्व और सातवाहन शासक सत्ता में आए।
- इस काल में मध्य एशियाई लोगों के आने से मध्य एशिया और भारत के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए परिणामस्वरूप भारत को मध्य एशिया से भारी मात्रा में सोना प्राप्त हुआ और रेशम मार्ग पर नियंत्रण कर लिया।
- मौर्यो के स्थान पर मध्य एशिया से आए कई शासकों में कुषाण सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए, परंतु मध्य एशिया से आए शासकों में हिन्द-यूनानियों ने भारत में पहली बार राजाओं के नाम वाले सिक्के जारी किये।

मध्य एशिया के शासकों द्वारा भारत पर आक्रमण करने के कारणों के संदर्भ में

- चीन की महादीवार बनने के बाद शक शासकों ने अपना राज्य विस्तार यूनानियों और पार्थियनों की ओर करना शुरू किया। शकों से पराजित होकर बैक्ट्रियाई यूनानी भारत में विस्तार के लिये आगे बढ़ने लगे।
- सेल्यूकस द्वारा स्थापित निर्बल साम्राज्य मध्य एशियाई आक्रमण का महत्त्वपूर्ण कारण था। शकों के बढ़ते दबाव के कारण परवर्ती यूनानी शासक इस क्षेत्र में सत्ता नहीं बनाए रख सके।
- अशोक के निर्बल उत्तराधिकारी इन बाहरी आक्रमणों का सामना नहीं। कर सके। वंशानुगत साम्राज्य तभी तक बने रह सकते हैं, जब तक योग्य शासकों की श्रृंखला बनी रहे।

भारत पर मध्य एशियाई आक्रमणों के संदर्भ में

- भारत पर मध्य एशियाई आक्रमणकारियों का सही कालानुक्रम के संदर्भ में विकल्प (b) सही है। हिंद-यूनानियों या बैक्ट्रियाई-यूनानियों ने ईसा पूर्व दूसरी सदी के आरम्भ में पश्चिमोत्तर भारत के विशाल क्षेत्र पर अधिकार किया। यूनानियों के बाद शक आए। इनकी पाँच शाखाएँ थीं। पश्चिमोत्तर भारत में शकों के अधिपत्य के बाद पार्थियाई (पहलव) लोगों का आधिपत्य हुआ। पार्थियाइयों के बाद कुषाण आए, जो यूची और तोखारी भी कहलाते हैं।

यूनानी → शक→ पहलव→ कुषाण

भारत में यूनानी अधिपत्य के संदर्भ में

- हिन्द-यूनानियों ने पश्चिमोत्तर भारत के विशाल क्षेत्र पर अधिकार | किया था। सबसे प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनांदर था। उसे मिलिन्द नाम से भी जाना जाता था। उसे नागसेन ने बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी। उसकी राजधानी पंजाब में शाकल (आधुनिक सियालकोट) में थी।

- भारत के इतिहास में हिन्द-यूनानी शासन का महत्त्व इसलिये है कि यूनानी शासकों ने भारी संख्या में सिक्के जारी किये सबसे पहले भारत में हिन्द-यूनानी शासकों ने ही सोने के सिक्के जारी किये थे।
- भारत में सबसे पहले हिन्द-यूनानी शासकों ने राजाओं के नाम वाले सिक्के जारी किये थे।
- मिलिन्द पञ्हो' अर्थात् मिलिन्द के प्रश्न में यूनानी शासक मिनांदर द्वारा नागसेन से बौद्ध-धर्म पर पूछे गए प्रश्नों व नागसेन द्वारा दिये गए उत्तरों का एक पुस्तक के रूप में संकलन है।
- हिन्द-यूनानी शासकों ने भारत के पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में यूनान की कला का प्रचलन आरम्भ किया, जिसे 'हेलेनिस्टिक आर्ट' कहते हैं। यह कला विशुद्ध यूनानी नहीं थी। सिकंदर की मृत्यु के बाद विजित गैर-यूनानियों के साथ यूनानियों के संपर्क से इसका उदय हुआ था। भारत में गांधार कला इसका उत्तम उदाहरण है।

भारत में शक आधिपत्य के संदर्भ में

- शकों द्वारा स्थापित पाँच शाखाएँ भारत और अफगानिस्तान के अलग-अलग भागों में थी। इनकी दूसरी शाखा पंजाब में बसी, जिसकी राजधानी तक्षशिला थी। मथुरा में तीसरी शाखा थी, जहाँ उन्होंने दो सदियों तक राज्य किया था।
- सर्वाधिक प्रसिद्ध शक शासक रुद्रदामन प्रथम था। उसका शासन सिंध, कोंकण, नर्मदा घाटी, मालवा, काठियावाड़ और गुजरात के बड़े भाग में था।
- रूद्रदामन संस्कृत का बड़ा प्रेमी था। उसने सबसे विशुद्ध संस्कृत भाषा में लम्बा अभिलेख जारी किया।
- उल्लेखनीय है कि इससे पहले जो लम्बे अभिलेख देश में पाए गए थे, सभी प्राकृत भाषा में रचित हैं।

•रुद्रदामन प्रथम ने गुजरात काठियावाड़ के अर्धशुष्क क्षेत्र की मशहूर झील सुदर्शन का जीर्णोद्धार किया था।

• उल्लेखनीय है कि सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के आदेश से गिरनार में नियुक्त राज्यपाल 'पुष्यगुप्त वैश्य' ने करवाया था। सम्राट अशोक के महामात्य तुषास्प ने इस झील का पुनर्निर्माण करवाकर इसे मजबूती प्रदान की।

शक और विक्रम संवत् के संदर्भ में

- 57-58 ई. में उज्जैन के शासक ने, जो अपने आप को
-
- विक्रमादित्य कहता था, शकों पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में 57 ई. पू. से विक्रम संवत् आरम्भ किया। अतः कथन (1) असत्य है।
- शक संवत् कुषाण शासक कनिष्क ने 78 ई. में चलाया था।
- वर्तमान में भारत सरकार द्वारा शक संवत् प्रयोग में लाया जाता है।

पहलव शासकों के संदर्भ में

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- पहलव यूनानियों और शकों के विपरीत ईसा की पहली सदी में पश्चिमोत्तर भारत के एक छोटे से भाग पर ही अधिकार कर सके।
- सबसे प्रसिद्ध पहलव शासक गोंदोफर्निस था।
- पहलव लोगों का मूल निवास स्थान ईरान था ।
- उनके शासनकाल में सेंट टॉमस ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये भारत आया था।

कुषाण शासकों के भारत में आधिपत्य के संदर्भ में

- उनका साम्राज्य अमुदरिया से गंगा तक मध्य एशिया के खुरासान से उत्तर प्रदेश के वाराणसी तक फैला था। कुषाणों ने सोवियत गणराज्य में शामिल मध्य एशिया का हिस्सा ईरान, अफगानिस्तान और पूरे पाकिस्तान पर अधिकार कर लिया था।
- कैडफाइसिस द्वितीय ने बड़ी मात्रा में स्वर्ण मुद्राएँ जारी की थी।
- कुषाणों की पहली राजधानी आधुनिक पाकिस्तान में अवस्थित पुरुषपुर या पेशावर में थी। उल्लेखनीय है कि मथुरा में कुषाणों के सिक्के, अभिलेख और मूर्तियाँ मिले हैं, इससे प्रकट होता है कि मथुरा कुषाणों । की द्वितीय राजधानी थी।

कुषाण शासक कनिष्क के संदर्भ में

- वह बौद्ध धर्म का संरक्षक था, उसने बड़ी उदारता से बौद्ध धर्म का संपोषण-संरक्षण किया। वह महायान संप्रदाय को मानता था।
- उसने कश्मीर में बौद्धों का सम्मेलन आयोजित करवाया, जिसमें बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय को अंतिम रूप दिया गया।
- कुषाण शासकों में कैडफाइसिस प्रथम ने हिन्दुकुश के दक्षिण में रोमन सिक्कों की नकल करके बड़ी मात्रा में तांबे के सिक्के ढलवाए थे।
- उल्लेखनीय है कि कुषाण शासकों ने स्वर्ण एवं ताम्र दोनों ही प्रकार के सिक्कों को व्यापक पैमाने पर प्रचलित किया था।

मध्य एशिया से संपर्क के परिणामस्वरूप भारत पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में

- मध्य एशियाई लोगों के पास अपनी लिपि, लिखित भाषा और कोई सुव्यवस्थित धर्म नहीं था। इसलिये उन्होंने संस्कृति के इन उपादानों को भारत से लिया। वे भारतीय समाज के अभिन्न अंग बन गए।
- इस काल की एक विशेषता ईंटों के कुँओं का निर्माण है।
- इस काल में व्यापक पैमाने पर भवन-निर्माण के कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति हुई और इनके बर्तन भी असाधारण प्रकार के फुहारों और टोटियों। वाले थे।

edusol Learn Anytime Anywhere

- इनके पास बड़े पैमाने पर उत्तम अश्वारोही सेना थी। उन्होंने अश्वारोहण की परंपरा चलाई। उन्होंने लगाम और जीन का प्रयोग प्रचलित किया था। वे रस्सी का बना एक प्रकार का अंगूठा रकाब भी लगाते थे. जिससे उन्हें घुड़सवारी में सुविधा होती थी।

भारत तथा मध्य एशियाई संपर्क तथा व्यापार के संदर्भ में

- मध्य एशिया और भारत के बीच घने संपर्क के परिणामस्वरूप भारत को मध्य एशिया के अल्ताई पहाड़ों से भारी मात्रा में सोना प्राप्त हुआ। इसके अलावा रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार के द्वारा भी सांना प्राप्त होता था।
- कुषाणों ने रेशम के प्रख्यात मार्ग पर नियंत्रण कर लिया था जो चीन से चलकर कुषाण साम्राज्य में शामिल मध्य एशिया और अफगानिस्तान से गुजरते हुए ईरान जाता था और पूर्वी भूमध्यसागरीय अंचल में रोमन साम्राज्य के अंतर्गत पश्चिम एशिया तक जाता था।

मध्य एशियाई विजेताओं की राजव्यवस्था के संदर्भ में

- इन विजेताओं ने अनगिनत छोटे-छोटे राजाओं को समाप्त कर एक तरह की सामंतवादी व्यवस्था का प्रारम्भ किया।
- शक और कुषाण राजा देवता के अवतार माने जाते थे। कुषाण राजा देवपुत्र कहलाते थे। यह उपाधि उन्होंने चीनियों से ली थी. जो अपने राजा को स्वर्ग का पुत्र कहते थे।
- इस काल में कुछ अनोखी प्रथाएँ भी शुरू हुई, जैसे- एक ही समय दो आनुवांशिक राजाओं का संयुक्त शासन जिसमें पिता और पुत्र दोनों को एक ही समय राज्य पर संयुक्त रूप से शासन करते थे

मध्य एशियाई संपर्क से धार्मिक विकास के संदर्भ में

- मध्य एशियाई शासकों ने भारत आकर भारतीय धर्मों को अपना लिया। कुछ शासकों ने वैष्णव धर्म अपना लिया था। यूनानी राजदूत हिलियोदोरस ने मध्य प्रदेश स्थित विदिशा में ईसा पूर्व दूसरी सदी के मध्य में वासुदेव की आराधना के लिये एक स्तंभ खड़ा किया तथा यूनानी शासक मिनांडर ने बौद्ध धर्म अपनाया था। कुषाण शासक शिव और बुद्ध दोनों के उपासक थे। कई कुषाण शासक वैष्णव भी हो गए थे।
- बौद्ध धर्म के नियमों में उदारता आने के फलस्वरूप महायान संप्रदाय का उदय हुआ। कुषाण शासक कनिष्क महायान का संरक्षक था।
- कनिष्क ने कश्मीर में चौथे बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया, जिसमें बौद्ध साहित्य के तीनों पिटकों की पूरी तरह व्याख्या की गई थी। कनिष्क ने इस ग्रंथ को लाल ताम्रपत्रों पर खुदवाया और उसे प्रस्तरपात्र में रखकर उसके ऊपर स्तूप का निर्माण करवाया।
- ईसवी सन् के आरंभ में बौद्ध धर्म से संबंधित वस्तुओं, प्रतीकों की पूजा की जाती थी। अब उनका स्थान बुद्ध की प्रतिमा ने ले लिया और उनकी मूर्ति पूजा होने लगी।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंड और अमरावती बौद्ध कला के महान केंद्र बन गए थे, जहाँ बुद्ध के जीवन की कथाएँ अनगिनत पट्टों पर चित्रित की गई थी।
- बौद्ध धर्म से संबंधित सबसे पुराने पट्टचित्र- गया. साँची और भरहुत में पाए गए, जो ईसा पूर्व दूसरी सदी के हैं।

मध्य एशिया से संपर्क से कला और साहित्य के संदर्भ में

- मध्य एशिया से आए शासकों ने नई कला शैलियों का विकास किया, जैसे- गांधार और मथुरा इनमें बौद्ध धर्म के प्रभाव से स्थानीय और भारतीय दोनों लक्षणों का मिश्रण पाया जाता है।
- महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएँ गांधार और मथुरा शैली दोनों में पाई जाती हैं। महात्मा बुद्ध की प्रतिमाएँ यूनान और रोम की मिश्रित शैली में बनाई गई, बुद्ध के बाल यूनानी रोमन शैली में बनाए गए। मथुरा मूलतः देशी कला का केंद्र था, परंतु गांधार शैली का प्रभाव मथुरा में भी पहुँचा था और मथुरा शैली में महात्मा बुद्ध की विलक्षण प्रतिमाएँ बनी हैं, उनकी प्रतिमायें मथुरा और गांधार दोनों शैलियों में बनाई जाती थी।
- अश्वघोष को कुषाणों का संरक्षण प्राप्त था। उन्होंने सौन्दरनन्द नामक काव्य की रचना संस्कृत भाषा में की है।
- यूनानियों ने परदे का प्रचलन आरंभ कर भारतीय नाट्यकला के विकास में भी योगदान दिया। चूँकि परदा यूनानियों की देन था इसलिये वह यवनिका के नाम से विदित हुआ।

कुषाण काल के साहित्यिक ग्रंथों के संदर्भ में

- महायान बौद्ध संप्रदाय की प्रगति के फलस्वरूप अनगिनत अवदानों की रचना हुई। अवदानों का अन्यतम उद्देश्य लोगों को महायान के उद्देश्यों से अवगत कराना था। इस कोटि की प्रमुख कृतियाँ हैं- महावस्तु और दिव्यावदान।
- 'बुद्धचरित' की रचना अश्वघोष ने की थी। इसमें बुद्ध के जीवन का वर्णन है।
- भारतीय चिकित्सा ग्रंथ 'चरक संहिता' में वनस्पतियों से निर्मित औषधियों का वर्णन किया गया है, जबकि 'सुश्रुत संहिता' शल्य चिकित्सा ग्रंथ है। इसमें शल्य विधि का वर्णन किया गया है।

भारत पर यूनानी प्रभाव के संदर्भ में

- भारतीयों का खगोल और ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान यूनानियों से प्रभावित था। यूनानी शब्द होरोस्कोप संस्कृत में 'होराशास्त्र' हो गया, जिसका अर्थ ज्योतिषशास्त्र होता है।
- यूनानियों ने सेनानी-शासन (मिलिट्री गवर्नरशिप) की परिपाटी भी चलाई। वे इसके लिये शासक सेनानियों की नियुक्ति करते थे
- 'स्ट्रेटेगोस' यूनानी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है शासक सेनानी। इन शासकों की आवश्यकता जीते गए प्रदेश पर नए राजाओं का प्रभाव जमाने के लिये होती थी।

मध्य एशियाई संपर्क से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के संदर्भ में

- मध्य एशिया से आए विदेशी शासकों ने संस्कृत साहित्य का संरक्षण सम्पोषण किया। संस्कृत काव्यशैली का पहला नमूना रुद्रदामन द्वारा निर्मित काठियावाड़ में जूनागढ़ अभिलेख है, जिसका समय लगभग 150 ई. है।
- प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीयों को मध्य एशियाई लोगों के संपर्क से लाभ हुआ था। भारत में इस काल में चमड़े के जूते बनाने का प्रचलन शुरू हुआ।
- शीशे के काम पर विशेष रूप से मध्य एशियाई लोगों का प्रभाव पड़ा था। इस काल सीसे के काम में बड़े पैमाने पर प्रगति हुई।
- आरंभिक कुषाणों ने बड़ी संख्या में स्वर्ण मुद्राएँ जारी की। उनकी स्वर्ण मुद्राएँ गुप्त शासकों की स्वर्ण मुद्राओं से उत्कृष्ट थीं।

edusol Learn Anytime Anywhere

सातवाहन युग

सातवाहन राज्य के संदर्भ में

- सातवाहन शासकों ने कण्वों को पराजित कर मध्य भारत और दक्कन में सत्ता स्थापित की थी।
- आरंभिक सातवाहन शासकों का राज्य उत्तरी महाराष्ट्र में था, जहाँ उनके प्राचीनतम सिक्के और अधिकांश आरंभिक अभिलेख मिले हैं। उन्होंने अपनी सत्ता ऊपरी गोदावरी घाटी में स्थापित की।
- सातवाहन राज्य का विस्तार कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में था। उनके सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी शक थे। शकों का राज्य दक्कन और पश्चिमी भारत में स्थापित हुआ।

सातवाहन राज्य के उदय में सहायक परिस्थितियों के संदर्भ में

- सातवाहन राज्य का उदय ऊपरी गोदावरी घाटी में हुआ था। वहाँ पर लोहे के फाल का प्रयोग, धान रोपण विधि से धान का प्रचुर उत्पादन होता था। नगरीकरण में अमरावती व नागार्जुनकोंड प्रमुख नगर तथा लेखन कला आदि सातवाहन राज्य के उदय की विशेषताएँ थीं।

गौतमीपुत्र शातकर्णि के संदर्भ में

- गौतमीपुत्र शातकर्णि ने सातवाहन वंश के ऐश्वर्य को फिर से स्थापित किया था। उसने अपने आपको 'एकमात्र ब्राह्मण' कहा था।
- उसने क्षहरात वंश के शासक नहपान को हराया था। उल्लेखनीय है। कि नहपान के 8000 से अधिक चांदी के सिक्के नासिक के पास मिले हैं, उन पर सातवाहन राजा द्वारा फिर से ढलाए जाने के चिह्न हैं।
- उसके समय में शासन उत्तर में मालवा से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक फैला हुआ था।

वासिष्ठीपुत्र पुलुमायिन् के संदर्भ में

- इसके काल में सातवाहन साम्राज्य की राजधानी आंध्र प्रदेश के औरंगाबाद जिले में गोदावरी नदी के किनारे पैठन या प्रतिष्ठान बनी।
- सौराष्ट्र (काठियावाड़) के शक शासक रुद्रदामन प्रथम ने उसे दो बार पराजित किया था।

सातवाहन काल की भौतिक संस्कृति के संदर्भ में

- सातवाहन राजा यज्ञश्री सातकर्णि व्यापार और जलयात्रा का प्रेमी था। इसके सिक्कों पर जहाज का चित्र अंकित है, जो जलयात्रा और समुद्री व्यापार के प्रति उसके प्रेम का परिचायक है।

- सातवाहनों ने स्वर्ण का प्रयोग बहुमूल्य धातु के रूप में किया था। उन्होंने कुषाणों की तरह सोने के सिक्के नहीं चलाए। इनके सिक्के अधिकांश सीसे (लेड) के बने होते थे। इसके अलावा पोटीन, तांबे और काँसे की मुद्राएँ भी इन्होंने चलाई।
- सातवाहन दक्कन में कपास का उत्पादन करते थे। विदेशी विवरणों में आंध्र प्रदेश कपास के उत्पाद के लिये प्रसिद्ध था।
- दक्कन के बड़े हिस्से में परम उन्नत ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकसित हुई।

सातवाहन साम्राज्य के संदर्भ में

- शक शासक रुद्रदामन प्रथम ने सातवाहन शासक वासिष्ठीपुत्र पुलुमायिन् को दो बार पराजित किया था, परंतु वैवाहिक संबंध होने के कारण उसका नाश नहीं किया।
- दक्कन के लोगों ने उत्तरी भारत से सिक्के, पकी ईंट, छल्लेदार कुएँ और लेखन कला आदि का प्रयोग सीखा।
- करीमनगर जिले के पेड़बंकुर में पकी ईंट तथा द्वितीय शताब्दी ईसवीं के ईंटों के बने बाइस कुएँ पाए गए हैं।
- सातवाहन काल के मिले रोमन सिक्कों से सातवाहन-रोमन के बीच बढ़ते व्यापार के संकेत मिलते हैं।

सातवाहन साम्राज्य के सामाजिक संगठन के संदर्भ में

- सातवाहनों ने सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमि अनुदान के रूप में देने की प्रथा चलाई थी। वे ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को कर मुक्त ग्राम दान में देते थे।
- सातवाहनों में हमें मातृसत्तात्मक समाज का आभास मिलता है। उनके राजाओं के नाम उनकी माताओं के नाम पर रखने की प्रथा थी, परंतु सारतः सातवाहन राजकुल पितृसत्तात्मक था, क्योंकि राजसिंहासन का उत्तराधिकारी पुत्र ही होता था।
- इस काल में शिल्प और वाणिज्य में प्रगति व्यापक पैमाने पर हुई। वणिक लोग अपने-अपने नगर का नाम अपने नाम से जोड़ने लगे।

सातवाहन काल के प्रशासनिक तंत्र के संदर्भ में

- सातवाहन साम्राज्य में कई प्रशासनिक इकाइयों मीयों के समान थी। इनके समय में जिले के लिये आहार शब्द, जो अशोक के समय प्रयुक्त होता था तथा उनके अधिकारी मौर्य काल की तरह अमात्य और महामात्य कहलाते थे।
- सातवाहनों के प्रशासन में कुछ विशेष सैनिक और सामंतवादी लक्षण दिखाई पड़ते हैं। सेनापति को प्रांत का शासनाध्यक्ष या गर्वनर बनाया जाता था. ताकि दक्कन के जनजातीय लोगों को प्रशासनिक नियंत्रण में रखा जा सके।

- गोल्मिक ग्राम का प्रधान कहलाता था। इसे ग्रामीण क्षेत्रों के प्रशासन का काम सौंपा जाता था। यह एक सैनिक टुकड़ी का प्रधान होता था, जिसमें नौ रथ, नौ हाथी, पच्चीस घोड़े और पैंतालीस पैदल सैनिक होते थे। वह ग्रामीण क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाए रखता था।
- सातवाहन काल में ब्राह्मणों और बौद्धों को कर मुक्त भूमि दी गई। दोनों को शासकीय संरक्षण प्राप्त था। महाराष्ट्र पश्चिमी दक्कन के नासिक और जुनार क्षेत्रों में व्यापारियों से संरक्षण प्राप्त कर बौद्ध धर्म फूला फला ।
- सातवाहन शासक ब्राह्मण थे और उन्होंने ब्राह्मणवाद के विजयाभियान का नेतृत्व किया। आरंभ से ही राजाओं और रानियों ने अश्वमेध, वाजपेय आदि वैदिक यज्ञ किये।
- इस काल में बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का उत्कर्ष हुआ था।
- सातवाहन राज्य में सामंतों की तीन श्रेणियाँ थी। पहली श्रेणी का सामंत राजा कहलाता था। द्वितीय श्रेणी का महाभोज तथा तृतीय श्रेणी का सेनापति।
- आंध्र प्रदेश के नागार्जुनकोंड और अमरावती नगर सातवाहनों के शासन में तथा विशेषकर उनके उत्तराधिकारी इक्ष्वाकुओं के शासन में बौद्ध संस्कृति के महत्त्वपूर्ण केंद्र बने।

सातवाहन काल के चैत्य और विहार के संदर्भ में

- सर्वाधिक प्रसिद्ध चैत्य कार्ले का है, जो पश्चिमी दक्कन में स्थित है।
- चैत्य और विहार ठोस चट्टनों को काट बनाए जाते थे। यह विशाल शिला- वास्तुकला का प्रभावोत्पादक उदाहरण है। चैत्य अनेकानेक स्तंभों पर खड़ा हॉल जैसा होता था और विहार में एक केंद्रीय शाला होती. थी, जिसमें सामने के बरामदे की ओर एक द्वार रहता था।
- चैत्य बौद्धों के मंदिर का काम करता था और विहार भिक्षु निवास का। विहार चैत्यों के पास बनाए गए। उनका उपयोग वर्षाकाल में भिक्षुओं के निवास के लिये होता था।
- नागार्जुनकोंड के स्तूपों में भित्ति प्रतिमाएँ नहीं मिलती हैं। इसमें बौद्ध स्मारकों के साथ-साथ पुराने ईंट से बने हिन्दू मंदिर भी हैं। उल्लेखनीय है कि यह सातवाहनों के उत्तराधिकारी इक्ष्वाकुओं के काल में उत्कर्ष के शिखर पर थे।
- अमरावती के स्तूपों में भित्ति प्रतिमाएँ मिलती हैं। इनमें बुद्ध के जीवन के विभिन्न दृश्य चित्रित हैं।

सातवाहनों की भाषा के संदर्भ में

- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत थी।
- इनके सभी अभिलेख प्राकृत भाषा में और ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं।
- गाथाहासत्तसई (गाथासप्तशती) हाल नामक सातवाहन राजा की रचना है। इसमें सभी सात सौ श्लोक प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं।

edusol Learn Anytime Anywhere

सुदूर दक्षिण में इतिहास का आरम्भ

महापाषाणिक संस्कृति के संदर्भ में

- महापाषाण कब्रों में वस्तुओं के साथ त्रिशूल भी रखा जाता था जिसका संबंध बाद में शिव के साथ जुड़ गया
- महापाषाण कब्रों में शवों के साथ खेती के औजार भी दफनाए जाते थे लेकिन कम मात्रा में। इसमें युद्ध और शिकार के हथियार अधिक होते थे। इससे संकेत मिलता है कि महापाषाणिक लोग उन्नत खेती नहीं करते थे।
- महापाषाणकालीन प्रायद्वीपीय भारत में कई तरह के मृद्भाण्डों का प्रयोग किया जाता था, जिनमें लाल मृद्भांड भी शामिल है। परंतु काले व लाल मृद्भांड उन लोगों में अधिक प्रचलित थे।
- अशोक के अभिलेखों में चोल, पाण्ड्य, चेर (केरलपुत्र) और सतियपुत्रों शासकों के उल्लेख मिलते हैं। जो कि भौतिक संस्कृति की उत्तर महापाषाणिक अवस्था के लोग थे।

महापाषाणिक लोगों के संदर्भ में

- तमिलनाडु के दक्षिणी जिलों में रहने वाले महापाषाणिक लोगों द्वारा मृतक के अस्थिपंजर लाल कलश में डालकर गड्ढों में दफनाए जाते थे; यही कलश शवाधान कहलाता था।
- अशोक की उपाधि 'देवानांपिय पियदसि' एक तमिल राजा ने अपनाई थी।

पाण्ड्य राज्य के संदर्भ में

- पाण्ड्य राज्य भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भाग में अवस्थित था। इसमें तमिलनाडु के आधुनिक तिन्नवेल्ली, रामनद और मदुरा जिले शामिल हैं।
- पाण्ड्यों का उल्लेख सर्वप्रथम मेगास्थनीज ने किया है। और उसने इसे मोतियों का देश कहा है।
- मेगास्थनीज के अनुसार पाण्ड्य राज्य में शासन स्त्री के हाथों में था जिससे यह लक्षित होता है कि पाण्ड्य समाज में कुछ मातृसत्तात्मक प्रभाव था।
- पांड्य राजाओं ने रोमन सम्राट ऑगस्टस के दरबार में राजदूत भेजे। उल्लेखनीय है कि यह राज्य रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार में लाभ की स्थिति में था जिससे यह धनवान और समृद्ध था।

चोल राज्य के संदर्भ में

- चोल राज्य पेन्नार और वेलार नदियों के बीच पाण्ड्य राज्य क्षेत्र के पूर्वोत्तर में स्थित था। यह मध्यकाल के आरंभ में चोलमंडलम् (कोरोमंडल) कहलाता था।
- उसकी राजधानी 'पुहार' थी जिसकी पहचान कावेरीपट्टनम से की गई है।

- पुहार की स्थापना दूसरी सदी के प्रख्यात चोल राजा कारैकाल ने की थी।
- ईसा पूर्व दूसरी सदी के मध्य में एलारा नामक चोल राजा ने श्रीलंका को जीतकर पचास वर्षों तक शासन किया था।
- चोल राजनीतिक सत्ता का केंद्र उरैयूर था जो सूती कपड़े के व्यापार के लिये मशहूर है।
- चेर पाण्ड्य क्षेत्र के उत्तर-पश्चिम में स्थित था जो आधुनिक केरल राज्य और तमिलनाडु के बीच एक सकरी पट्टी के रूप में था।
- चेर राजा सेंगुदटुवन को लाल या भला चेर भी कहा जाता था।

सुदूर दक्षिण राज्यों के व्यापार के संदर्भ में

- इन राज्यों का व्यापार पश्चिम के साथ गोल मिर्च की मांग, हाथी दाँत और समुद्र से प्राप्त मोतियों के कारण लाभ की स्थिति में था,
- इनका व्यापार एक ओर यूनानी या मिस्र के हेलेनिस्टिक राज्य और अरब के साथ तथा दूसरी ओर मलय द्वीपसमूह तथा चीन के साथ व्यापारिक संबंध थे।

उपाधि	**संबंधित वर्ग**
वल्लाल	**धनी किसान**
अरसर	**शासक वर्ग**
कडैसियर	**खेत मजदूर**

तमिल राज्य के संदर्भ में

- पाण्ड्य राज्य में अश्व समुद्र के रास्ते से मंगवाए जाते थे।
- 'एनाडि' की उपाधि सेनाध्यक्षों को औपचारिक अनुष्ठान के साथ दी जाती थी।
- परियार लोग खेत मजदूर थे, साथ ही ये लोग पशु चर्म का कार्य भी करते थे, और चटाई के रूप में इनका इस्तेमाल करते थे।

संगम साहित्य के संदर्भ में

- संगम तमिल कवियों का संघ या सम्मेलन है, जो मदुरै में राजाश्रय में आयोजित होते थे।
- संगम साहित्य में आख्यानात्मक ग्रंथों को वीरगाथा काव्य कहते हैं, जिसमें वीर पुरुषों की कीर्ति और युद्धों का वर्णन किया गया है।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- संगम को मोटे तौर पर दो समूहों में बाँटा जा सकता है आख्यानात्मक और उपदेशात्मक। आख्यानात्मक ग्रंथ मेलकणक्कु अर्थात् अठारह मुख्य ग्रंथ और उपदेशात्मक ग्रंथ कीलकणक्कु अर्थात् अठारह लघु ग्रंथ कहलाते हैं।

संगम राज्यों की धार्मिक संस्कृति के संदर्भ में

- तमिल देश में ईसा सन् की आरंभिक सदियों में जो राज्य स्थापित हुए थे उनका विकास ब्राह्मण संस्कृति के प्रभाव से हुआ। राजा वैदिक यज्ञ करते थे,
- इस काल में इन राज्यों में शवदाह की प्रथा आरम्भ हुई. परंतु महापाषाण अवस्था से चली आ रही दफनाने की प्रथा भी चलती रही।
- पहाड़ी प्रदेशों के लोगों के मुख्य स्थानीय देवता मुरुगन थे, जो आरम्भिक मध्यकाल में सुब्रामनियम या सुब्रह्मण्यम कहलाने लगे।
- स्मारक को वीरकल कहा जाता था. चूँकि गाय या अन्य वस्तुओं के लिये लड़कर मरने वाले वीरों के सम्मान में वीरकल अर्थात् स्मारक स्वरूप प्रस्तर खड़ा किया जाता था।

संगम ग्रंथों के संदर्भ में

- संगम साहित्य तोलकाप्पियम ग्रंथ व्याकरण और अलंकार शास्त्र कहलाता है।
- तिरुक्कुरल में दार्शनिक विचार और सूक्तियाँ हैं।
- तमिल काव्य में दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं जिनके नाम है- सिलप्पदिकारम और मणिमेकले। इन दोनों की रचना ईसा की छठी सदी के आसपास हुई।
- उल्लेखनीय है कि सिलप्पदिकारम एक प्रेमकथा है जिसमें कोवलन नामक व्यापारी और माधवी नामक गणिका के प्रेम-प्रसंग का वर्णन है। मणिमेकले में कोवलन और माधवी की कन्या के साहसिक जीवन का वर्णन किया गया है।

edusol Learn Anytime Anywhere

मौर्योत्तर युग में शिल्प, व्यापार और नगर

मौर्योत्तर काल में व्यापार के संदर्भ में

- इस काल में कपड़ा बनाने, रेशम बुनने और वस्त्रों एवं विलास की वस्तुओं के निर्माण में भी प्रगति हुई तथा मथुरा शाटक नामक विशेष प्रकार के वस्त्र के निर्माण का बड़ा केंद्र बन गया था।
- दक्षिण भारत के कई नगरों में रंगरेजी उन्नत शिल्प थी। तमिलनाडु में तिरुचिरापल्ली नगर के उपान्तवर्ती उरैयूर में ईंटों का बने रंगाई के हौज मिले हैं।
- शकों, कुषाणों और सातवाहनों का प्रथम तमिल राज्यों का युग प्राचीन भारत के शिल्प और वाणिज्य के इतिहास में चरम उत्कर्ष का काल था।

मौर्योत्तर काल के व्यापार के संदर्भ में

- शिल्पी वर्ग आपस में संगठित थे और उस संगठन का नाम श्रेणी था। इस काल में चौबीस-पच्चीस श्रेणियाँ प्रचलित थी।
- भारत में कांच ढालने की जानकारी ईसवी सन् के आरंभ में हुई और भारतीयों ने इस कला को शिखर तक पहुंचाया
- इस काल की सबसे बड़ी आर्थिक प्रक्रिया भारत और पूर्वी रोमन साम्राज्य के बीच समृद्ध व्यापार था। आरंभ में यह व्यापार अधिकतर स्थल मार्ग द्वारा होता था। ईसा पूर्व पहली सदी से शकों पार्थियनों और कुषाणों की गतिरोध के कारण व्यापार में संकट उत्पन्न हो गया। परंतु ईसा की पहली सदी से व्यापार मुख्यतः समुद्री मार्ग से होने लगा। समुद्र से व्यापार करने में ईसा पूर्व में मानसून पवनों की दिशा ज्ञात होने पर नाविक अरब सागर के पूर्वी तटों से उसके पश्चिमी तटों तक का सफर काफी कम समय में कर सकते थे।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत से पश्चिमी समुद्र तक दोनों ओर से व्यापार मार्ग तक्षशिला में एक दूसरे को काटते थे, और मध्य एशिया से गुजरने वाले रेशम मार्ग से भी जुड़े थे।
- पहला मार्ग उत्तर से सीधे दक्षिण की ओर जाता था और तक्षशिला को निचली सिंधु घाटी से जोड़ता था तथा वहाँ से भड़ौच तक जाता था।
- उल्लेखनीय है कि दूसरा मार्ग उत्तरापथ के नाम से जाना जाता था। वह तक्षशिला से चलकर आधुनिक पंजाब से होते हुए यमुना के पश्चिम तट तक पहुँचता और यमुना का अनुसरण करते हुए दक्षिण की ओर मथुरा पहुँचता फिर वहाँ से मालवा और उज्जैन पहुँच कर पश्चिमी समुद्र तट पर भड़ौच तक जाता था।

मौर्योत्तर काल में विदेश व्यापार संदर्भ में

- रोमन साम्राज्य ने सबसे पहले देश के सुदूर दक्षिणी हिस्से से व्यापार आरंभ किया; इसलिये सबसे पहले सिक्के तमिल राज्यों में मिले हैं।
- रोम वाले दक्षिण भारत से मसाले, मलमल, मोती, रत्न और माणिक्य का आयात करते थे।
- उल्लेखनीय है कि लोहे की वस्तुएँ विशेषकर बर्तन, हाथी दाँत, रत्न और पशु जिनकी गिनती विलासिता की वस्तुओं में थी, उनका भी निर्यात रोमन साम्राज्य में किया जाता था।
- प्राचीन रेशम मार्ग चीन से अफगानिस्तान और ईरान से गुजरने वाले मार्ग से रेशम भेजा जाता था, परंतु पार्थियनों द्वारा ईरान पर अधिकार कर लेने के बाद इस मार्ग में गतिरोध उत्पन्न हो गया, तब यह मार्ग कुछ बदलकर भारतीय उपमहादेश के पश्चिमोत्तर भाग से होते हुए। रेशम पश्चिमी भारत के बंदरगाहों पर आने लगा। कभी-कभी चीन से रेशम भारत के पूर्वी समुद्र तट होते हुए भी यहाँ आता था।
- मौर्योत्तर काल में सिक्कों की ढलाई महत्वपूर्ण शिल्प थी। यह काल सोना, चांदी, तांबा, कांसा, सीसा और पोटीन के सिक्के बनाने के लिये मशहूर है।
- रोम के लोगों को भारतीय गोल मिर्च बहुत प्रिय थी, इसलिये रोम पूरब से गोल मिर्च मंगवाने पर अत्यधिक खर्च करता था। जिससे कि संस्कृत में गोल मिर्च का नाम ही यवनप्रिय पड़ गया।
- रोम के सम्राट ने न केवल फारस की खाड़ी का पता लगाया बल्कि उसने मस्कट पर विजय भी प्राप्त की। उसके व्यापार और विजय के फलस्वरूप रोमन वस्तुएँ अफगानिस्तान और पश्चिमोत्तर भारत पहुँची।
- भारत में नगरीकरण कुषाण काल में उत्कर्ष के शिखर पर पहुँचा था।
- उल्लेखनीय है कि मालवा और पश्चिमी भारत शक शासकों के काल में समृद्ध थे।
- कुषाण काल में उज्जयिनी महत्त्वपूर्ण नगर था, जहाँ से दो मार्ग पहला कौशाम्बी से और दूसरा मथुरा जाने वाले मार्ग से मिलता था। उज्जयिनी से गोमेद और इन्द्रगोप (कार्नेलियन) पत्थरों का निर्यात होता था।
- कुषाण और सातवाहन साम्राज्यों में नगरों की उन्नति इसलिये हुई कि रोमन साम्रज्य के साथ व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था।
- पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नगरों की समृद्ध का कारण कुषाण साम्राज्य की शक्ति का केंद्र पश्चिमोत्तर भारत था और यहाँ से व्यापार रोमन साम्राज्य के साथ होता था,
- कुषाण साम्राज्य में मार्गों की सुरक्षा का प्रबंध किया गया था। भारत में अधिकतर कुषाण नगर मथुरा से तक्षशिला जाने वाले पश्चिमोत्तर मार्ग या उत्तरापथ पर पड़ते थे। ईसा की तीसरी सदी में उसके अंत होने से इन नगरों का पतन शुरू हो गया था।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

गुप्त साम्राज्य का उद्भव और विकास

गुप्त साम्राज्य के उद्भव के संदर्भ में

- गुप्त शासकों ने जीन, लगाम, बटन वाले कोट, पतलून और जूतों का इस्तेमाल करना कुषाणों से सीखा था। इन सबसे उनमें गतिशीलता आई और उनके घुड़सवारों की कार्य क्षमता में वृद्धि हुई।
- गुप्त काल में बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र था, क्योंकि आरंभिक गुप्त मुद्राएँ और अभिलेख इसी स्थान पर पाए गए हैं।

गुप्त साम्राज्य के उद्भव व विकास के कारणों के संदर्भ में

- गुप्त राजाओं को कई भौतिक सुविधाएँ प्राप्त थी। उनके कार्य क्षेत्र का मुख्य प्रांगण मध्य- देश की उर्वर भूमि थी, जिसमें बिहार और उत्तर प्रदेश आते हैं, और वहा से अच्छी उपज प्राप्त होती थी।
- वे लोग मध्य भारत और दक्षिण बिहार के लौह अयस्क का उपयोग कर अच्छे औजार और उपकरण बनाते थे।
- इस काल में बायजेन्टाइन साम्राज्य अर्थात् पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ रेशम का व्यापार करने वाले उत्तर भारत के इलाके उनके पड़ोस में स्थित थे, अतः उन्होंने इस निकटता का फायदा व्यापार बढ़ाने में किया।

प्राचीन काल में भारत के राजवंशों के संबंध में

- भारत में कुषाण सत्ता 230 ई. के आसपास आकर समाप्त हो गई। उसके बाद मध्य भारत का बड़ा-सा भाग मुरुण्डों के अधिकार क्षेत्र । में आया। मुरुण्डों की सत्ता 250 ई. तक रही, उसके बाद 275 ई. में गुप्त वंश के आधिपत्य में सत्ता स्थापित हुई, उसके बाद मौखरि राजवंश ने हूणों को पराजित कर पूर्वी भारत पर शासन कायम किया और कन्नौज। में सत्ता स्थापित की।

कुषाण- मुरुण्ड – गुप्त – मौखरि

चंद्रगुप्त प्रथम के संदर्भ में

- चंद्रगुप्त प्रथम (319-334ई.) गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध राजा हुआ। उसने लिच्छवि राजकुमारी से विवाह किया। इससे उसकी सत्ता को बल मिला।
- चंद्रगुप्त प्रथम महान शासक हुआ और उसने 319-20 ई. में अपने राज्यारोहण के स्मारक के रूप में गुप्त संवत् चलाया

समुद्रगुप्त के संदर्भ में

- चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त ने गुप्त राज्य का व्यापक विस्तार किया।

- उल्लेखनीय है कि उसके द्वारा विजित प्रदेश पाँच समूहों में बाँटा जा सकता है- प्रथम समूह में गंगा-यमुना दोआब, द्वितीय समूह में पूर्वी हिमालय के राज्यों और कुछ सीमावर्ती राज्य, तृतीय समूह में अटविक राज्य विध्य क्षेत्र में पड़ते थे. चतुर्थ समूह में पूर्वी दक्कन और दक्षिण भारत के बारह शासक और पाँचवें समूह में शक और कुषाणों के नाम हैं, जिनमें कुछ अफगानिस्तान का क्षेत्र भी आता था।
- समुद्रगुप्त की नीतियाँ अशोक की नीतियों के विपरीत थी, जहाँ अशोक शांति और अनाक्रमण की नीति में विश्वास करता था तो समुद्रगुप्त हिंसा और विजय में आनंद पाता था।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने गया में बुद्ध का मंदिर बनवाने की अनुमति प्राप्त करने के लिये समुद्रगुप्त के पास अपना दूत भेजा था। अनुमति मिलने के बाद यह मंदिर बौद्ध विहार के रूप में विकसित हो गया।
- समुद्रगुप्त को उसकी बहादुरी और कौशल के कारण भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

चंद्रगुप्त द्वितीय के संदर्भ में

- चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में चीनी यात्री फाहियान भारत आया और यहाँ के लोगों के जीवन के बारे में विस्तृत विवरण लिखा।
- उल्लेखनीय है कि उसने वैवाहिक संबंध और विजय दोनों के सहारे साम्राज्य की सीमा बढ़ाई। चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी कन्या प्रभावती का विवाह वाकाटक राजा से कराया जो मध्य भारत में शासन करता था। वाकाटक राजा की मृत्यु के बाद चंद्रगुप्त द्वितीय अप्रत्यक्ष रूप से अपनी कन्या के माध्यम से शासन करता था। इसका साक्ष्य भूमिदान संबंधी उसके अभिलेख है, जिस पर गुप्तकालीन प्राच्य शैली का प्रभाव है
- कालिदास और अमर सिंह दोनों चंद्रगुप्त द्वितीय के उज्जैन दरबार में रहते थे।

गुप्त शासकों के संदर्भ में

- इलाहाबाद की प्रशस्ति (प्रशंसात्मक अभिलेख) में समुद्रगुप्त के विजयों के बारे में वर्णन किया गया है कि उसे कभी पराजय का सामना। नहीं करना पड़ा।
- दिल्ली में कुतुब मीनार के पास खड़े एक लौह स्तंभ पर खुदे हुए अभिलेख में चन्द्र नामक किसी राजा का कीर्तिवर्णन किया गया है. जिसे चंद्रगुप्त द्वितीय के बारे में माना जाता है।

गुप्त साम्राज्य के पतन के संदर्भ में

- चंद्रगुप्त द्वितीय के उत्तराधिकारियों में स्कन्दगुप्त ने हूणों से कड़ा मुकाबला किया परन्तु उसके बाद के उत्तराधिकारी हुणों के सामने ठहर नहीं सके।
- हूण अच्छे योद्धा होने के साथ-साथ बेजोड़ घुड़सवार थे और वे धातु के बने रकाबों का इस्तेमाल करते थे। वे उत्तम धनुर्धर होने के कारण न केवल ईरान में बल्कि भारत में भी सफल हुए,
- गुप्त शासकों के सामंतों ने विद्रोह कर साम्राज्य को कमजोर बना दिया। उत्तरी बंगाल में नियुक्त सामंतों ने विद्रोह कर स्वतंत्र राज्य बनाना शुरू कर दिया था।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- मालवा के औलिकर सामंत वंश के यशोधर्मन ने हूणों को हरा कर गुप्त शासकों को कड़ी चुनौती दी और सारे उत्तर भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के उपलक्ष्य में 532 ई. में विजय स्तंभ स्थापित किये।

गुप्त काल का जीवन

गुप्त काल की प्रशासन-पद्धति के संदर्भ में

- गुप्त राजाओं ने परमेश्वर, महाराजाधिराज, परमभट्टारक आदि आडंबरपूर्ण उपाधियाँ धारण की थी।
- इस काल में राजपद वंशानुगत था, परन्तु राजसत्ता ज्येष्ठाधिकार की अटल प्रथा के अभाव में सीमित थी। राजसिंहासन हमेशा ज्येष्ठ पुत्र को ही नहीं मिलता था।
- इस काल के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी का चित्र अंकित होता था। उनको विष्णु की पत्नी माना जाता था और विष्णु मुख्य देवता हो गए थे।

गुप्त काल की कर प्रणाली के संदर्भ में

- गुप्त काल में भूमि संबंधी करों की संख्या बढ़ गई, परन्तु वाणिज्य-करों की संख्या में कमी आई।
- इस काल में राज्य उपज का चौथे भाग से लेकर छठे भाग तक कर के रूप में लेता था।
- उल्लेखनीय है कि जब भी राजकीय सेना गाँवों से गुजरती थी तो उसे खिलाने-पिलाने का कार्य स्थानीय प्रजा का कर्त्तव्य होता था। ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले राजकीय अधिकारी अपने निर्वाह के लिये किसानों से पशु, अन्न आदि वस्तुएँ लेते थे
- मध्य और पश्चिम भारत में ग्रामवासियों से सरकारी सेना और अधिकारियों की सेवा के लिये बेगार (निःशुल्क श्रम) भी करवाया जाता। था, जो विष्टि कहलाता था।

गुप्त काल में राज्य के वर्गीकरण के संदर्भ में

- राज्य के वर्गीकरण का बढ़ता अनुक्रम इस प्रकार है- ग्राम < वीथियाँ<विषय < भुक्ति < राज्य
- गुप्त राजाओं ने प्रांतीय और स्थानीय शासन की पद्धति चलाई। राज्य कई भुक्तियों अर्थात् प्रांतों में विभाजित था और हर भुक्ति एक-एक उपरिक के प्रभार में रहती थी। भुक्तियाँ कई विषयों अर्थात् जिलों में विभाजित थी। हर विषय का प्रभारी विषयपति होता था। पूर्वी भारत में प्रत्येक विषय को वीथियों में बाँटा गया था और वीथियाँ ग्रामों में विभाजित थी।

गुप्त साम्राज्य के संदर्भ में

- गुप्त साम्राज्य के सबसे बड़े अधिकारी कुमारामात्य होते थे। उन्हें राजा उनके प्रांत में ही नियुक्त करता था, वे नकद वेतन पाते थे।
- गुप्त राजा सामंतों को गरुड़ छाप वाले राजकीय शासन-पत्र जारी करते थे।

- उल्लेखनीय है कि सीमावर्ती सामंतों को तीन जिम्मेवारियाँ पूरी करनी होती थी। पहली, वे सम्राट के दरबार में उपस्थित होकर सम्मान प्रकट करते दूसरी नजराना चढ़ाते और तीसरी, विवाहार्थ अपनी पुत्री समर्पित करते थे। इसके बदले उन्हें अपने क्षेत्र पर अधिकार का शासनपत्र (सनद) मिलता था।
- इस काल में पुरोहितों और अन्य धर्माचार्यों को करमुक्त भूमि दानस्वरूप जाती थी और उन्हें वैसे सभी कर उगाहने का अधिकार भी दे दिया जाता, जो अन्यथा राजकोष में जाते थे। जो ग्राम दे दिये जाते थे उनमें राजा के अधिकारियों और अमलों को प्रवेश करने का हक नहीं रहता था,
- प्राचीन भारत के गुप्त राजाओं ने सबसे अधिक स्वर्णमुद्राएँ जारी | की, जो उनके अभिलेखों में दीनार कही गई है।

गुप्त काल की अर्थव्यवस्था के संदर्भ में

- गुप्त शासकों ने गुजरात विजय के बाद बड़ी संख्या में चांदी के सिक्के जारी किये, जो केवल स्थानीय लेन-देन मे चलते थे, क्योंकि पश्चिमी क्षत्रपों के यहाँ चांदी के सिक्कों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।
- पूर्वकाल की तुलना में इस काल में सुदूर व्यापार में ह्रास हो गया। 550 ई. तक भारत पूर्वी रोमन के साथ कुछ-कुछ व्यापार कर रहा था लेकिन 550 ई. के आस-पास पूर्वी रोमन ने चीनियों से रेशम पैदा करने की कला सीख ली। इससे भारत के निर्यात एवं व्यापार पर बुरा असर पड़ा।
- गुप्त काल में ब्राह्मण पुरोहितों का भूस्वामी के रूप में उदय होने से किसानों के हितों पर विपरीत प्रभाव पड़ा और उनकी आर्थिक स्थिति में गिरावट आई। मध्य और पश्चिमी भारत में किसानों से बेगार लिया जाने लगा।

गुप्तकालीन समाज के संदर्भ में

- गुप्त काल में शूद्रों की सामाजिक स्थिति में सुधार आया था। उन्हें रामायण, महाभारत और पुराण सुनने का अधिकार प्राप्त हुआ। उनके लिये कृष्ण का पूजन विहित किया गया। उल्लेखनीय है कि इस काल में उच्च वर्ग की स्त्रियों को स्वतंत्र जीवन निर्वाह का साधन प्राप्त नहीं था, परन्तु निचले दो वर्णों की स्त्रियों की स्वतंत्र जीवन निर्वाह का अधिकार मिल गया था।
- पाँचवीं सदी में रचित नारद स्मृति में ब्राह्मणों को मिले विशेषाधिकारों
- का वर्णन किया गया है।
- इस काल में पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पत्नी को निजी संपत्ति समझा जाने लगा और मृत्यु में भी साथ देने की उम्मीद की जाने लगी। इस काल में सती प्रथा का प्रचलन था. इसका उदाहरण 510 ई. में एक अभिलेख से मिलता है।

गुप्त काल में बौद्ध धर्म के संदर्भ में

- गुप्त काल में बौद्ध धर्म को राजाश्रय मिलना समाप्त हो गया। जो स्थान अशोक व कनिष्क काल में था, वह अब नहीं रहा।
- इस काल में कुछ स्तूपों और विहारों का निर्माण हुआ और नालंदा बौद्ध शिक्षा का केंद्र बन गया।

- इस काल में आकर महायान बौद्ध धर्म की तुलना में भागवत या वैष्णव संप्रदाय अधिक प्रभावी हो गया। इसने अवतारवाद का उपदेश दिया और इतिहास को विष्णु के दस अवतारों के चक्र के रूप में प्रतिपादित किया।

गुप्त काल में धार्मिक आस्थाओं के संदर्भ में

- भागवत धर्म का केंद्र बिंदु भगवत् या विष्णु की पूजा है। गुप्त काल विष्णु के दस अवतारों में का वर्णन किया गया है। छठी सदी में आकर विष्णु की गणना शिव और ब्रह्मा के साथ त्रिदेव में होने लगी। परंतु फिर भी यह मुख्य देवता हो गया।
- भागवत संप्रदाय के मुख्य तत्त्व है भक्ति और अहिंसा। भक्ति का अर्थ प्रेममय निष्ठा निवेदन और अहिंसा का अर्थ है किसी जीव का वध नहीं करना है
- गुप्त काल में मूर्तिपूजा ब्राह्मणीय धर्म का सामान्य लक्षण हो गई।
- उल्लेखनीय है कि गुप्तवंशीय राजाओं ने विभिन्न धार्मिक संप्रदायों के प्रति सहनशीलता का मार्ग अपनाया।
- इस काल में विष्णु के उपासकों के लिये विष्णु सहस्त्रनाम आदि बहुत से स्रोत लिखे गए।
- गुप्त काल प्राचीन भारत का 'स्वर्णयुग' कहा जाता है। क्योंकि इस काल में साहित्य, विज्ञान एवं कला के उत्कर्ष, भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, धार्मिक सहिष्णुता एवं आर्थिक समृद्धि, श्रेष्ठ शासन व्यवस्था और राजनीतिक एकता का काल था।
- समुद्रगुप्त को सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है.
- उल्लेखनीय है कि समुद्रगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय दोनों कला साहित्य के संपोषक हुए हैं।
- चंद्रगुप्त द्वितीय का दरबार नवरत्न से अलंकृत था। नवरत्नों में- कालिदास, धनवन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेताल भट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर तथा वररुचि जैसे विद्वान थे।
- गुप्त काल में सारनाथ और मथुरा में बुद्ध की सुंदर प्रतिमाएँ बनीं परंतु गुप्तकालीन बौद्ध कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, अजंता की चित्रावली

लेखक	**रचनाएँ**
शूद्रक	मृच्छकटिक
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्
अमर सिंह	अमरकोश

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- उल्लेखनीय है कि शूद्रक का लिखा नाटक मृच्छकटिक या माटी की। खिलौना गाड़ी है इसमें निर्धन ब्राह्मण के साथ गणिका का प्रेम वर्णित है। प्राचीन नाटकों में इसे सर्वोत्कृष्ट कोटि का माना गया है। कालिदास। का अभिज्ञानशाकुन्तलम् विश्व की सौ उत्कृष्टतम साहित्यिक कृतियों में से एक है।

गुप्त काल के नाटकों के संदर्भ में

- भारत में लिखे गए गुप्त काल के नाटकों के बारे में दो बातें उल्लेखनीय हैं
- इस काल के सभी नाटक सुखांत हैं। दुखांत नाटक का एक भी उदाहरण नहीं मिलता।
- इस काल के नाटकों की भाषाओं में वर्ण विभाजन दिखाई पड़ता है
- इस काल में उच्च वर्ण के लोग संस्कृत तथा शूद्र और स्त्री वर्ग प्राकृत भाषा बोलते थे,

गुप्त काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में

- आर्यभटीय गणित के क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।
- इसके रचयिता आर्यभट पाटलिपुत्र के रहने वाले थे।
- इलाहाबाद के अभिलेख से ज्ञात होता है कि ईसा की पाँचवीं सदी के आरंभ में भारत में दाशमिक पद्धति ज्ञात थी।

छठी सदी के स्मृतिकार कात्यायन का कहना है कि स्त्री अपने स्त्रीधन के साथ अपनी अचल सम्पत्ति को भी बेच सकती थी और गिरवी रख सकती थी। इससे यह पता चलता है कि स्त्रियों को भूमि पर अधिकार था।

- रोमक सिद्धांत नामक पुस्तक खगोलशास्त्र विषय से संबंधित है। इस पर यूनानी विद्वानों का प्रभाव है।
- इस काल में वास्तुकला पिछड़ी हुई थी। वास्तुकला के नाम पर हमें ईंट के बने कुछ मंदिर उत्तर प्रदेश में मिले हैं। इसमें कानपुर के भीतरगाँव, गाजीपुर के भीतरी और झाँसी के देवगढ़ में ईंट का मंदिर उल्लेखनीय हैं।
- उल्लेखनीय है कि गुप्त काल में मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ था। ।

पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार

कलिंग राज्य के संदर्भ में

- कलिंग राज्य महानदी के दक्षिण में स्थित था। इसका उत्कर्ष अशोक के काल में हुआ था।
- कलिंग के राजा खारवेल ने सुदृढ़ राज्य की स्थापना की थी
- उड़ीसा के बंदरगाहों से मोती, हाथी दाँत और मलमल का अच्छा व्यापार चलता था। खुदाई के दौरान रोम की बहुत-सी वस्तुएँ मिली हैं, इससे सिद्ध होता है कि कलिंग और रोम के मध्य व्यापारिक सम्बंध थे।

चौथी से छठी सदी तक उड़ीसा में स्थापित हुए राज्यों के संदर्भ में

- चौथी से छठी सदी तक उड़ीसा में स्थापित राज्यों में पाँच राज्यों की स्पष्ट पहचान की जा सकती है, उनमें माठर वंश का राज्य महत्त्वपूर्ण था। उनका राज्य महानदी और कृष्णा नदी के बीच फैला हुआ था।
- माठर वंश को पितृभक्त वंश भी कहा जाता था।
- उल्लेखनीय है कि वशिष्ठ, नल और मान वंश के राज्य माठर वंश के पड़ोसी और समकालीन थे। वशिष्ठ वंश का राजा दक्षिण कलिंग में आंध्र की सीमाओं पर था। नल वंश का राज्य महाकांतर के वन्य प्रदेश में और मान वंश का राज्य महानदी के पार उत्तर के समुद्र तटवर्ती क्षेत्र में था।
- माठरों ने एक प्रकार के न्यास स्थापित किये, जो अग्रहार कहलाते थे। इस न्यास में कुछ भूमि और गाँव वालों से प्राप्त होने वाली आय होती थी, इन अग्रहारों का उद्देश्य पठन-पाठन और धार्मिक अनुष्ठानों में लगे ब्राह्मणों का भरण-पोषण करना था।
- भाटरों ने पाँचवी सदी के मध्य से वर्ष को बारह चन्द्रमासों में विभाजित किया, इससे मौसम की सही प्रकार से जानकारी हुई जो कृषि कार्यों में उपयोगी सिद्ध हुआ।

पुण्ड्रवर्धनभुक्ति राज्य के संदर्भ में

- 432-33 ई. से लेकर लगभग सौ वर्षों तक पुण्ड्रवर्धनभुक्ति) राज्य उत्तरी बंगाल में स्थित था।
- अनुदान पत्रों से ज्ञात होता है कि भूमि का मूल्य दीनार नामक
- स्वर्णमुद्राओं से चुकाया जाता था।
- यहाँ धार्मिक प्रयोजनों के लिये दान की गई भूमि पर कर नहीं लगाया जाता था।

पांचवी सदी में बंगाल में स्थापित राज्य के संदर्भ में

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- बंगाल में ब्रह्मपुत्र नदी द्वारा बनाया त्रिभुजाकार भाग समतट कहलाता था। इसमें दक्षिण-पूर्वी बंगाल का क्षेत्र आता था।
- इस क्षेत्र को चौथी सदी में समुद्रगुप्त ने जीता और इसे अपने राज्य में मिलाया।
- इस क्षेत्र में ब्राह्मण धर्म का प्रभाव नहीं था। यहाँ संस्कृत भाषा का प्रयोग नहीं मिलता है और न ही वर्ण व्यवस्था का प्रचलन।
- धार्मिक न्यासों की संख्या बहुत अधिक बढ़ने पर इसकी देखभाल करने के लिये अग्रहारिक नाम का एक अधिकारी नियुक्त किया गया।
- उल्लेखनीय है कि इन अग्रहारों का उद्देश्य पठन-पाठन और धार्मिक अनुष्ठानों में लगे ब्राह्मणों का भरण-पोषण करना था।

पांचवी सातवीं सदी तक पूर्वी भारत के राज्यों के संदर्भ में

- गुवाहाटी के निकट की बस्तियाँ ईसवी सन् की चौथी सदी में बस चुकी थी और यहाँ से समुद्रगुप्त ने डवाक और कामरूप से कर वसूल किया था।
- बंगाल और उड़ीसा के बीच वाले सीमांत क्षेत्रों में दण्डभुक्ति नाम की राजस्व और प्रशासन संबंधी इकाई बनाई गई थी। दण्ड का अर्थ सजा और भुक्ति का अर्थ है भोगा
- ब्रह्मपुत्र मैदान में पूरब से पश्चिम तक फैला कामरूप सातवीं सदी में उत्कर्ष पर पहुँचा।
- कामरूप के राजाओं ने वर्मन की उपाधि धारण की। यह उपाधि उत्तर, मध्य और पश्चिम भारत के साथ बंगाल, उड़ीसा, आंध्र प्रदेश कर्नाटक और तमिलनाडु में भी पाई जाती है।
- पूर्वी भारत में चौथी से सातवीं सदी तक के काल को रचनात्मक काल कहा जाता है। इस काल में पूर्वी मध्य प्रदेश, उत्तरी उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और असम में तथा बांग्लादेश के एक बड़े भाग में संस्कृत विद्या, वैदिक कर्मकाण्ड, वर्णव्यवस्था तथा राजतंत्र फैले और विकसित हुए

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

हर्ष और उसका काल

हर्ष के राज्य के संदर्भ में

- हर्ष हरियाणा स्थित थानेसर का शासक था। उसने अन्य सामंतों ।पर भी प्रभुता स्थापित की।
- हर्ष ने कन्नौज को राजधानी बनाया, यहाँ से उसने चारों ओर अपना प्रभुत्व फैलाया।
- चीनी यात्री हवेनसांग ईसा की सातवीं सदी भारत आया और लगभग प्रदेह वर्ष तक रहा।
- बाण हर्ष का दरबारी कवि था। हर्ष के शासन काल का आरंभिक इतिहास बाणभट्ट से ज्ञात होता है।
- हर्ष को भारत का अंतिम हिंदू सम्राट कहा गया है, लेकिन यह न तो कट्टर हिंदू था और न ही पूरे देश का शासक क्योंकि उसका राज्य कश्मीर को छोड़कर उत्तर भारत तक सीमित था।
- हर्ष का पूर्वी भारत में युद्ध गौड़ के शैव राजा शशांक से हुआ था। 619 ई. में शशांक की मृत्यु के साथ ही यह संघर्ष समाप्त हुआ।
- उसके दक्षिण की ओर विजय अभियान को नर्मदा के तट पर चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन ने रोका। पुलकेशिन् आधुनिक कर्नाटक और महाराष्ट्र के बड़े भू-भाग पर शासन करता था।
- हर्षचरित' नामक पुस्तक की रचना हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट ने की थी। इससे हर्ष के शासन काल का आरंभिक इतिहास ज्ञात होता है।
- चालुक्य राजा पुलकेशिन् की राजधानी कर्नाटक में आधुनिक बीजापुर।जिले के बादामी में थी।
- हर्ष की प्रशासन प्रणाली गुप्तों के समान थी। अंतर इतना था कि हर्ष का प्रशासन अधिक सामंतिक और विकेंद्रित था।
- हर्ष आरंभिक जीवन में शैव था, परंतु धीरे-धीरे बौद्ध धर्म का महान संपोषक हो गया। उसने महायान के सिद्धांतों का प्रचार करने के लिये कन्नौज में एक विशाल सम्मेलन का आयोजन करवाया।
- कन्नौज के बाद उसने प्रयाग में भी महासम्मेलन का आयोजन करवाया।
- हर्ष ने तीन नाटकों की रचना की थी प्रियदर्शिका, रत्नावली और नागानंद।
- उल्लेखनीय है कि मध्यकाल के बहुत-से लेखकों का मानना है कि. ये तीनों नाटक धावक नामक कवि ने हर्ष से पुरस्कार लेकर लिखे।
- हर्ष ने राज्य में पदाधिकारियों को शासन पत्र (सनद) के द्वारा जमीन देने की प्रथा चलाई। इसके साथ ही राज्य की समर्पित सेवाओं के लिये पुरोहितों को भूमिदान देने की परंपरा जारी रही।

- हर्ष की राजकीय आय चार भागों में बाँटी जाती थी। एक भाग राजा के खर्च के लिये रखा जाता था, दूसरा भाग विद्वानों के खर्च के लिये. तीसरा भाग पदाधिकारियों और अमलों के बंदोबस्त के लिये और चौथा भाग धार्मिक कार्यों के लिये।
- हर्ष के साम्राज्य में विधि-व्यवस्था अच्छी नहीं थी। स्वेनसांग की सुरक्षा प्रबंध राज्य द्वारा करने के बाद भी उसकी सम्पत्ति को डाकुओं ने छीन लिया था।
- ह्वेनसांग 645 ई. तक भारत में रहा। वह नालंदा महाविहार अर्थात् बौद्ध विश्वविद्यालय में नालंदा में पढ़ने के लिये और भारत से बौद्ध ग्रंथ बटोर कर ले जाने के लिये आया था।
- चीनी यात्री इ-त्सिंग 670 ई. में नालंदा आया। उसके अनुसार नालंदा विश्वविद्यालय का भरण-पोषण दो सौ गाँवों के राजस्व से होता था।

edusol Learn Anytime Anywhere

प्रायद्वीप में नए राज्यों के गठन और ग्राम-विस्तार

सातवीं सदी में दक्षिण भारत के राज्यों के संदर्भ में

- दक्षिण भारत में सातवीं सदी के आरंभ में कांची के पल्लव, बादामी के चालुक्य और मदुरै के पांड्य जैसे तीन प्रमुख राज्यों का उदय हुआ
- दक्षिण के प्रदेशों में द्वितीय ऐतिहासिक चरण (300 ई-750 ई. तक) में व्यापार, नगर और मुद्रा तीनों का ह्रास हुआ। इस काल में कृषि अर्थव्यवस्था में कहीं अधिक विस्तार हुआ।
- ब्राह्मणों को कर मुक्त भूमि का अनुदान भारी संख्या में दिखाई देता है। इस काल में (द्वितीय ऐतिहासिक चरण) भूमि अनुदानों से यह सिद्ध होता है कि अनेक नए क्षेत्रों का उपयोग खेती और आवास के लिये किया गया।

सातवीं सदी में दक्षिण भारत के राज्यों के संदर्भ में

- दक्षिण भारत के राज्यों में सन् 400 ई. से संस्कृत राजभाषा हो गई थी और अधिकांश शासन-पत्र (सनद) संस्कृत में मिले हैं।
- उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में ईसा पूर्व दूसरी सदी और ईसा की तीसरी सदी के बीच के लगभग सभी अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं।तमिलनाडु के ब्राह्मी अभिलेख में भी प्राकृत भाषा के शब्द हैं।
- यहाँ लगभग 300 ई. से 750 ई. के मध्य ब्राह्मण धर्म का उत्कर्ष हुआ। बौद्ध और जैन धर्म जो तमिलनाडु के दक्षिणी जिलों में फैले थे, उनमें जैन धर्म सिमटकर कर्नाटक में ही रह गया। यहाँ राजाओं द्वारा किये गए वैदिक यज्ञों के साक्ष्य मिले हैं।
- तमिलनाडु में पल्लव और कर्नाटक में बादामी के चालुक्यों के शासन काल में शिव और विष्णु के प्रस्तर मंदिरों का निर्माण आरंभ हुआ।
- उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ में सातवाहनों के स्थान पर एक स्थानीय शक्ति वाकाटकों ने प्रमुख शहर बसाया।

सातवाहनों के बाद दक्कन में स्थापित राजवंशों के संदर्भ में

- छठी सदी में पश्चिमी दक्कन में चालुक्यों ने अपना राज्य स्थापित किया और वातापी को राजधानी बनाया।
- प्रायद्वीप के पूर्वी भाग में सातवाहनों के अवशेष पर इक्ष्वाकुओं का उदय हुआ और इक्ष्वाकुओं को अपदस्थ कर उनकी जगह पल्लव आए और उन्होंने अपनी राजधानी कांची (आधुनिक कांचीपुरम) में बनाई। उल्लेखनीय है कि पल्लव का अर्थ है लता, चूँकि यह शब्द

टोंडाई का रूपांतरण है जो लता का ही पर्यायवाची है। पल्लवों ने टोंडानाडु अर्थात् लताओं के देश में अपनी सत्ता स्थापित की।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

कदंब राज्य के संदर्भ में

- कदंब राज्य की स्थापना मयूरशर्मन ने की।
- उल्लेखनीय है कि जब वह पढ़ने के लिये कांची आया तो पल्लवाँ द्वारा वहाँ से अपमानित कर निकाल दिया गया। उसने पल्लवों से अपने अपमान का बदला युद्ध करके लिया, परंतु वह पल्लवों से हार गया फिर भी पल्लवों ने मयूरशर्मन को राजचिह्न देकर कदंबों की राजसत्ता को मान्यता दी।
- कदंबों ने चौथी सदी में उत्तरी कर्नाटक और कोंकण में अपनी सत्य कायम की,
- मयूरशर्मन ने अपनी राजधानी कर्नाटक के उत्तरी केनरा जिले के वैजयन्ती या बनवासी में बनाई
- पल्लवों के समकालीन दक्षिणी कर्नाटक में गंग राजाओं ने अपनी सत्ता स्थापित की। उनका राज्य पूरब में पल्लवों के राज्य और पश्चिम में कदंबों के राज्य के बीच था। उनकी सबसे पहले राजधानी कोलार थी। उल्लेखनीय है कि गंग राजाओं ने भूमि अनुदान का लाभ अधिकतर जैनों को ही दिया।

चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के संदर्भ में

- ऐहोल अभिलेख से चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के बारे में जानकारी मिलती है।
- उल्लेखनीय है कि इसमें हर्ष-पुलकेशिन द्वितीय के युद्ध का विवरण मिलता है।
- रविकीर्ति उसका दरबारी कवि था। उसके द्वारा रचित उसकी प्रशस्ति (गुण वर्णन) ऐहोल अभिलेख में उत्कीर्ण है।
- पुलकेशिन द्वितीय ने 610 ई. के आस-पास कृष्णा और गोदावरी का दोआब, जो वेंगी नाम से प्रसिद्ध हुआ, पल्लवों से जीत लिया था। यहाँ पर मुख्य राजवंश की एक शाखा स्थापित की गई जो वेंगी का पूर्वी चालुक्य राजवंश कहलाने लगे।
- पल्लव राजा नरसिंहवर्मन और चालुक्य राजा पुलकेशिन के संघर्ष के मध्य 642 ई. के आस-पास पल्लव राजा ने पुलकेशिन को पराजित कर वातापी पर अधिकार करते हुए वातापीकोण्ड अर्थात् वातापी-विजेता की उपाधि धारण की।
- आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध में चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय ने कांची को तीन बार पराजित कर लगभग 740 ई. में पल्लवों को पूरी तरह समाप्त किया, परंतु चालुक्यों को 757 ई. में राष्ट्रकूटों ने समाप्त कर दिया था।

छठी से आठवीं सदी के बीच दक्षिण भारत में धर्म के संदर्भ में

- दक्षिण भारत में यज्ञानुष्ठानों के अलावा ब्रह्मा, विष्णु और शिव की पूजा लोकप्रिय हो गई। विष्णु और शिव की पूजा पहले से ज्यादा होने लगी।
- पल्लव राजाओं ने सातवीं और आठवीं सदी में अपने आराध्य देवताओं की प्रतिमा स्थापित करने के लिये बहुत से प्रस्तर मंदिर बनवाए, इनमें सबसे प्रसिद्ध महाबलिपुरम के सात रथ वाला मंदिर है।
- सातवीं सदी में नरसिंहवर्मन ने प्रसिद्ध बंदरगाह शहर महाबलिपुरम या मामल्लपुरम की स्थापना की।

दक्षिण भारत के धार्मिक संप्रदायों के संदर्भ में

- दक्षिण भारत में सातवीं सदी से वैष्णवप्रवर आल्वार संतों ने वैष्णव संप्रदाय फैलाया।
- नायन्नार संतों ने शैव संप्रदाय फैलाया।
- उल्लेखनीय है कि सातवीं सदी में दक्षिण भारत के लोगों के धार्मिक जीवन में भक्ति मार्ग को लोकप्रिय बनाने में आल्वारों और नायन्नारों मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- आठवीं सदी के बाद मंदिरों के रखरखाव के लिये भूमि अनुदान देने। की प्रथा का प्रचलन हुआ। यह भूमिदान दीवारों पर अभिलिखित कर दिये जाते थे।
- आठवीं सदी में कांची में कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण पल्लवों ने करवाया। उल्लेखनीय है कि इस मंदिर का निर्माण 685-705 ई. में पल्लव वंश के नरसिंहवर्मन II ने करवाया था।

पट्टडकल के मंदिरों के संदर्भ में

- पापनाथ मंदिर (लगभग 680 ई.) की लम्बाई तीस मीटर है और इसका बुर्ज उत्तर भारतीय शैली में बना है, यह छोटा और नीचा हैं।
- विरूपाक्ष मंदिर दक्षिण भारतीय शैली में बना है। इसका शिखर बहुत ही ऊंचा, आयताकार और कई मंजिलों वाला है। उसकी दीवारें रामायण के दृश्यों वाली सुन्दर सुन्दर मूर्तियों से सजी है।

दक्षिण भारत में प्रशासनिक व्यवस्था के संदर्भ में

- दक्षिण भारत में तीन प्रकार के गाँव दिखाई देते हैं- उर, सभा और नगरम्। इनमें 'डर' सबसे प्रचलित थे, जिसमें किसान रहते थे। ऐसे गाँवों में ग्राम प्रधान का यह कर्त्तव्य होता था कि गाँव वालों से कर वसूल करे। सभा कोटि के गाँव ब्रह्मदेय अर्थात् ब्राह्मणों को दिये जाते थे। ऐसे गाँवों पर अनुदान प्राप्तकर्त्ता व्यक्ति का अधिकार होता था। नगरम् में व्यापारियों और वाणिकों का मिला-जुला वास होता था और उन्हीं का | प्रभाव होता था।
- राजा किसानों से नियमित कर लेता था। फसल के भूमि कर में लेने। के अतिरिक्त राजा किसानों से अन्न, स्वर्ण, गुड़ आदि वस्तुएँ लेता था। इसके अतिरिक्त राजा को विष्टि अर्थात् बेगार का अधिकार था।

दर्शन का विकास

भारतीय दर्शन के संदर्भ में

- भारतीय दर्शन का मुख्य विषय मोक्ष रहा है, जिसका अर्थ है जन्म और मृत्यु के चक्र से उद्धार।
- मोक्ष का सबसे पहले उपदेश महात्मा बुद्ध ने दिया, हालाँकि बाद में अन्य ब्राह्मणपंथी दार्शनिकों ने भी इसे आगे बढ़ाया।
- सांख्य की व्युत्पत्ति संख्या शब्द से हुई है। यह सर्वाधिक प्राचीन दर्शन माना जाता है। ईसवी सन् के आरंभ तक दर्शन के छह संप्रदाय विकसित हुए जिसे – सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत कहा जाता है।

पुरुषार्थ के संदर्भ में

अर्थ –	आर्थिक संसाधन
धर्म –	सामाजिक नियम
काम –	शारीरिक सुखभोग
मोक्ष –	आत्मा का उद्धार

सांख्य दर्शन के संदर्भ में

- सांख्य दर्शन ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है।
- यह सृष्टि की उत्पत्ति का कारण प्रकृति को मानता है। चौथी सदी के सांख्य दर्शन में प्रकृति के अतिरिक्त पुरुष को भी सृष्टि की उत्पत्ति में कारण माना।
- इसके अनुसार यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति से मोक्ष की प्राप्ति होती है और मोक्ष मिलने पर मानव को दुख से हमेशा के लिये छुटकारा मिल जाता है। यह मोक्ष यथार्थ ज्ञान के साधन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द से मिलता है।

योगदर्शन के संदर्भ में

- योगदर्शन के अनुसार मोक्ष, ध्यान और शारीरिक साधना से मिलता है। शारीरिक साधना के अंतर्गत विभिन्न तरह के आसन अर्थात् दैहिक व्यायाम और प्राणायाम (श्वास के व्यायाम) बताए गए हैं। ऐसा माना जाता है कि इससे चित्त (मन) में एकाग्रता आती है और सांसारिक मोह दूर हो जाता है।
- इसका मूल आधार ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रियों की एकाग्रता है।

वैशेषिक दर्शन के संदर्भ में

- वैशेषिक दर्शन द्रव्य अर्थात् भौतिक तत्त्वों के विवेचन को महत्त्व देता है। इसके अनुसार पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि) वायु और आकाश के मिलने से नई वस्तु बनती है। इसने भारत में भौतिक शास्त्र का आरंभ किया।
- वैशेषिक दर्शन ने परमाणुवाद की स्थापना की। इसके अनुसार भौतिक वस्तुएँ परमाणुओं के संयोजन से बनती है।
- यह आस्तिक दर्शन है। यह ईश्वर की सत्ता और आध्यात्मवाद को मानता है।

भारतीय दर्शन का महत्त्वपूर्ण दर्शन मीमांसा के संदर्भ में

- मीमांसा दर्शन के अनुसार वेदों में कही गई बातें सत्य है। इसका मुख्य लक्ष्य स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति है।
- मीमांसा का मूल अर्थ है तर्क करने और अर्थ लगाने की कला, परंतु इसमें तर्क का प्रयोग विविध वैदिक कर्मों के अनुष्ठानों का औचित्य सिद्ध करने में किया गया है।
- मीमांसा का प्रचार करके ब्राह्मण ब्राह्मणप्रधान बहुस्तरीय सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना चाहते थे।

न्याय दर्शन के संदर्भ में

- न्याय दर्शन अपनी विश्लेषण पद्धति के लिये प्रसिद्ध है। इसे तर्कशास्त्र से संबंधित माना जाता है।
- न्याय दर्शन मोक्ष प्राप्ति का साधन ज्ञान को मानता है।
- इस दर्शन में कथन की सत्यता की जाँच अनुमान, शब्द और उपमान प्रमाणों द्वारा की जाती है।

वेदांत दर्शन के संदर्भ में

- वेदांत का अर्थ है वेद का अंत ईसा पूर्व दूसरी सदी में संकलित उत्तबादरायण का ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है।
- यह 'पुनर्जन्म के सिद्धांत' को मानता है। इसके अनुसार मनुष्य को पूर्वजन्म में किये गए कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ता है।
- विशिष्टाद्वैत के प्रवर्तक रामानुज के अनुसार भक्ति ही मोक्ष का सर्वोत्तम साधन है। इनके अनुसार ब्रह्म सगुण है। ध्यातव्य है कि अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य बह्म को निर्गुण मानते हैं और मोक्ष का साधन ज्ञान मार्ग को बताया है।
- सांख्य दर्शन के मूल प्रवर्तक कपिल मुनि हैं। इसमें बताया गया है कि मानव का जीवन प्रकृति की शक्ति द्वारा रूपायित होता है, न कि दैवीय शक्ति द्वारा
- चार्वाक दर्शन को लोकायत कहा जाता है। यह भौतिकवादी दर्शन है और इसके प्रवर्तक चार्वाक हैं। इस दर्शन को लोकायत इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें लोक अर्थात् दुनिया के साथ गहरे संबंध को महत्त्व दिया गया है।

भारत का एशियाई देशों से सांस्कृतिक संपर्क

- वर्मा (म्यांमार) के लोगों ने बौद्ध धर्म के थेरवाद संप्रदाय को विकसित किया है।
- चीनियों ने बौद्ध चित्रकला भारत से सीखी और भारतीयों ने रेशम उपजाने का कौशल चीन से सीखा।
- अशोक के शासन काल में बौद्ध धर्म प्रचारक श्रीलंका भेजे गए। ईसा पूर्व दूसरी और पहली सदियों के छोटे-छोटे ब्राह्मी अभिलेख श्रीलंका में पाए गए हैं।
- कुषाण काल में शासन विस्तार के फलस्वरूप खरोष्ठी लिपि में लिखी गई प्राकृत भाषा मध्य एशिया में फैली, जहाँ से ईसा की चौथी सदी के अनेक प्राकृत अभिलेख और पांडुलिपियाँ मिली हैं।
- प्राचीन काल में बौद्ध धर्म के दो और महान केंद्र थे- अफगानिस्तान और मध्य एशिया। बामियान (अफगानिस्तान) में बुद्ध की बहुत-सी मूर्तियाँ और विहार मिले हैं।
- दुनिया की सबसे बड़ी बुद्ध मूर्ति, जो ईसवी सन् के आरंभिक वर्षों में चट्टानों को काटकर बनाई गई थी, बामियान में स्थित है। यहाँ अनेक प्राकृतिक और कृत्रिम गुफाएँ हैं, जिनमें बौद्ध भिक्षु रहते हैं।
- • उल्लेखनीय है कि अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म सातवीं सदी तक रहा।। इसी सदी में इस्लाम धर्म ने इसे अपदस्थ कर दिया।

भारतीय संस्कृति के दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रसार के संदर्भ में

- दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय संस्कृति का प्रसार (बर्मा को छोड़कर) बौद्ध धर्म के माध्यम से नहीं बल्कि ब्राह्मण धर्म के द्वारा हुआ है। इसके अतिरिक्त व्यापारियों के माध्यम से भी प्रसार हुआ।
- वर्मा (म्याँमार) के पेगू और मोलमेन सुवर्णभूमि कहलाते हैं।
- उल्लेखनीय है कि इंडोनेशिया (जावा) को भी सुवर्णद्वीप कहा जाता था। भारतीय वहाँ सोने की खोज में गए थे।
- ईसवी सन् की आरंभिक सदियों में पल्लवों ने सुमात्रा में अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में स्थापित मंदिरों के संदर्भ में

- सबसे विशाल बौद्ध मंदिर इंडोनेशिया के बोरोबुदुर में है। इसका निर्माण आठवीं सदी में हुआ था। इस पर बुद्ध के 436 चित्र उत्कीर्ण हैं।
- कम्बोडिया का अंकरोवट का मंदिर बोरोबुदुर के मंदिर से भी बड़ा है और यह विष्णु मन्दिर है। इस मंदिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत की कहानियाँ मूर्तियों के रूप में उत्कीर्ण हैं।
- छठी सदी में दक्षिण-पूर्व एशिया में कम्बोज (कम्बोडिया) और चम्पा में शैव राजाओं ने शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। उनकी राजकीय भाषा संस्कृत थी। यह देश संस्कृत विद्या का केंद्र माना जाता था। कम्बोज में असंख्य अभिलेख संस्कृत भाषा में मिले हैं।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- भारतीयों ने इंडोनेशिया से पान की बेल लगाने की विधि सीखी। उल्लेखनीय है कि भारतीयों ने यूनानियों और रोमनों से सोने का सिक्का ढालना सीखा और चीन से रेशम उत्पादन सीखा परंतु कपास उत्पादन कौशल भारत से चीन और मध्य एशिया में गया।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

प्राचीन से मध्यकाल की ओर

- प्राचीन भारतीय समाज के मध्यकालीन समाज में बदलने के कारण निम्नलिखित हैं:
- प्राचीन भारतीय समाज जो धीरे-धीरे मध्यकालीन समाज में बदला, उसका मूल कारण भूमि अनुदान की प्रथा थी। भूमि अनुदान के शासनपत्र (सनद) बताते हैं कि दाताओं को विशेषकर राजाओं को पुण्य प्राप्ति की कामना रहती थी, और दान पाने वालों को मुख्यतः पुरोहितों को धार्मिक अनुष्ठानों के लिये संसाधन की आवश्यकता रही थी। अतः भूमि अनुदान प्रथा का प्रचलन शुरू हुआ।
- पाँचवीं सदी तक राजा ने न्याय और शासन को अपने अधिकार में रखा, बाद में यह अधिकार दानग्राही ब्राह्मणों को दे दिया। ब्राह्मणों को दिया गया यह दान शाश्वत् अर्थात् स्थायी होता था और वे अपने क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिये जिम्मेदार थे।
- भूमि अनुदान की स्थायी प्रथा से गुप्त काल के बाद से राजा की शक्ति कम होने लगी और भूस्वामियों का उदय हुआ।
- उल्लेखनीय है कि भूमि अनुदान की प्रथा ईसा की पाँचवीं सदी से तेजी पकड़ती गई।

प्रसिद्ध विद्वानों के संदर्भ में

विद्वान	**विषय**
वराहमिहिर	खगोल विज्ञानी
विशाखदत्त	नाटककार
शंकर	दार्शनिक

छठी-सातवीं सदी में सांस्कृतिक विकास के संदर्भ में

- छी-सातवीं सदी संस्कृत साहित्य के इतिहास के लिये महत्त्वपूर्ण है। इस काल में संस्कृत के गए और पथ में अलंकरण शैली का प्रचलन बड़ा।
- गद्य में अलंकरण की पराकाला 'बाण' की रचनाओं में पाई जाती है. यद्यपि बाकी को शैली का अनुकरण करना आसान नहीं था परंतु फिर भी मध्यकाल में संस्कृत के लेखकों ने उसी को अपना आदर्श बनाया।
- सातवीं सदी में मूर्ति और मंदिर के निर्माण की शैली हर प्रदेश में अलग-अलग हो गई। पत्थर और काँसा ये दो ऐसे माध्यम थे जिनसे देव प्रतिमाएँ बनाई जाती थीं। इस काल में कांस्य प्रतिमाएँ बड़े पैमाने पर बनती थी। ये कांस्य प्रतिमाएँ बड़ी संख्या में हिमालयी प्रदेशों में और दक्षिण भारत में पाई गई हैं।

गुप्तोत्तर काल में धार्मिक परिवर्तन के संदर्भ में

- गुप्तोत्तर काल में ब्रह्मा, गणपति, विष्णु, शक्ति और शिव इन पाँच देवताओं की पूजा प्रचलित पाते हैं, जो सम्मिलित रूप से 'पंचदेवता' कहलाते हैं। इस काल में वैदिककालीन देव इन्द्र, वरुण और यम का स्थान कम होकर लोकपाल की श्रेणी में आ गए
- विष्णु, शिव और दुर्गा ये तीनों मुख्य देवता के रूप में स्थापित हुए।
- पंचायतन मंदिर निर्माण शैली है, जिसमें मुख्य देवता शिव या किसी अन्य देव या देवी को मुख्य मंदिर में स्थापित किया जाता था और उसके चारों बने चार गौण मंदिरों में चार अन्य देवता रखे जाते थे। ऐसे मंदिर को 'पंचायतन' कहा जाता था

edusol Learn Anytime Anywhere

सामाजिक परिवर्तनों का अनुक्रम

पाषाण काल से लेकर वैदिक काल तक हुए सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में

- हड़प्पा काल का समाज नगरीय समाज था, यह सभ्यता अश्व केंद्रित नहीं थी जबकि वैदिक काल में समाज अश्वारोही और पशुपालक |
- पहले पुरापाषाण युग का समाज खाद्य-संग्राहक था। जानवरों का शिकार करना ही उनके जीवन निर्वाह का मुख्य साधन था।
- नवपाषाण युग और ताम्रपाषाण युग में खाद्य उत्पादक समाज बने। ये लोग जमीन के ऊँचाई वाले भाग पर रहते थे, जो पहाड़ियों और नदियों से अधिक दूर नहीं थे।
- उत्तर-वैदिक काल में वर्ण विभाजन स्पष्ट रूप से समाज में व्याप्त हो गया था। समाज चार वर्णों में विभाजित हो गया था।
- वैदिक काल में राजा की आय का मुख्य साधन युद्ध में की। गई लूट था। वे शत्रुओं से सम्पत्ति छीनते और विरोधी जनजातियों से नजराना लेते थे। राजा को दिया जाने वाला यह नजराना बलि (चढ़ावा) कहलाता था।

वैदिक काल के संदर्भ में

शब्द	**संबंधित अर्थ**
गोमत्	धनवान
गोप	राजा
गोवाल	भैंस

- उल्लेखनीय है कि वैदिक काल में गाय, बैल और धन समानार्थक माने जाते थे। गाय और बैल युद्ध का कारण होते थे। गायों की रक्षा करना राजा का मुख्य धर्म होता था। आर्यों में गाय का इतना अधिक महत्त्व था कि जब उन्होंने भारत में पहली बार भैंस को देखा तो वे उसे गोवाल अर्थात् गाय जैसी दिखने वाली कहने लगे।
- वैदिक काल के परिवार में गाय को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, इसलिये इस काल में बेटी को 'दुहितृ' अर्थात् दुहने वाली कहा जाता था।

वैदिककालीन समाज व्यवस्था संदर्भ में

- वैदिक काल में न तो कर प्रणाली स्थापित हुई थी और न ही वैतनिक सैन्य व्यवस्था थी। राजा के संबंधियों के अलावा कोई कर अधिकारी नहीं होता था। राजा को जो नजराना दिया जाता था, वह वैसे ही था जैसे देवताओं को यज्ञादि में चढ़ावा दिया जाता था।
- पशुचारक समाज की जन सेना के बदले बाद में कृषक समाज की किसान सेना स्थापित हुई। विश् अर्थात् जनजातीय किसान वर्ग ही सेना या सशस्त्र दल का कार्य करते थे।
- पूर्व मध्यकाल में राजस्थान में सती प्रथा जोर से चल पड़ी।
- उल्लेखनीय है कि सामंतवादी ढाँचे में भूस्वामियों और योद्धाओं के वर्ग की स्त्रियों की दशा निम्न स्तर पर पहुँची परंतु निम्न वर्ण की स्त्रियों को आर्थिक क्रियाकलाप में भाग लेने और पुनर्विवाह करने की छूट थी।
- वैदिक साहित्य में मजदूर (वेज अर्नर) के लिये कोई शब्द नहीं आया. है, उल्लेखनीय है कि बुद्ध के काल में खेती का कार्य दासों और मजदूरों से कराना आम बात हो गई थी।
- प्राचीन काल में ऋण पर ब्याज भी वर्ण के अनुसार निर्धारित होता था। उदाहरणार्थ ब्राह्मण को ऋण पर ब्याज दो प्रतिशत, क्षत्रिय को ऋण पर तीन प्रतिशत, वैश्य को चार प्रतिशत और शूद्र की पाँच प्रतिशत ब्याज लगता था।
- पिछड़े हुए स्थानों में ब्राह्मणों सहित अन्य को भूमि अनुदान देने से कृषि पंचांग का ज्ञान फैला और आयुर्वेद का प्रचार हुआ, जिससे कृषि उत्पादन में समग्र रूप से वृद्धि हुई। लेखन कला तथा प्राकृत और संस्कृत भाषाओं के व्यवहार का भी प्रसार हुआ।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

विज्ञान और सभ्यता की विरासत

दर्शन के संदर्भ में

- भारतीय दार्शनिकों ने संसार को माया समझा तथा आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंधों की गंभीर विवेचना की। वास्तव में इस विषय पर जितना गहन चिंतन भारतीय दार्शनिकों ने किया है, उतना किसी अन्य देश के दार्शनिकों ने नहीं।
- प्रख्यात जर्मन दार्शनिक शोपेनहावर ने अपनी दार्शनिक विचारधारा में वेदों और उपनिषदों को भी स्थान दिया है। वह कहा करते थे कि उपनिषदों ने उन्हें इस जन्म में दिलासा दी है और मृत्यु के बाद भी देती रहेगी।
- प्राचीन भारत दर्शन और अध्यात्म के क्षेत्र में अपने योगदान के लिये प्रसिद्ध माना जाता है, परन्तु भारत में जगत के विषय में आध्यात्मिकता के साथ भौतिकवादी विचारधारा भी विकसित हुई है। भारत में उदित छः दार्शनिक पद्धतियों के बीच भौतिकवादी दर्शन के तत्त्व सांख्य में मिलते हैं। भौतिकवादी दर्शन को ठोस बनाने का श्रेय चावकों को है।
- इस्पात बनाने की कला सबसे पहले भारत में विकसित हुई। प्राचीन काल में भारत से इस्पात अन्य देशों को भी नियत किया जाता था और बाद में यह उत्स (Wootz) कहलाने लगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय शिल्पियों द्वारा निर्मित इस्पात की तलवार विश्व प्रसिद्ध थी, इसकी एशिया से लेकर पूर्वी यूरोप तक भारी मांग थी।

प्राचीन काल में गणित के विकास के संदर्भ में

- गणित के क्षेत्र में प्राचीन भारतीयों ने तीन विशिष्ट योगदान दिये- अंकन पद्धति, दाशमिक पद्धति और शून्य का प्रयोग।
- उल्लेखनीय है कि भारतीय अंकन पद्धति को अरबों ने अपनाया और पश्चिमी दुनिया में फैलाया। अंग्रेजी में भारतीय अंकमाला को अरबी अंक (अरेबिक न्यूमरस) कहते हैं, परन्तु अरबों ने अपनी अंकमाला को हिंदसा कहा।
- पश्चिमी देशों ने दाशमिक (दशमलव प्रणाली अरबों से सीखी, जबकि चीनियों ने यह पद्धति बौद्ध धर्मप्रचारकों से सीखी।
- प्रसिद्ध गणितज्ञ आर्यभट ने दाशमिक पद्धति का प्रयोग किया था।
- ईसा पूर्व दूसरी सदी में राजाओं के लिये उपयुक्त यज्ञवेदी बनाने के लिये आपस्तम्ब ने व्यावहारिक ज्यामिति की रचना की। इसमें न्यूनकोण, अधिककोण और समकोण का वर्णन किया गया है।
- आर्यभट ने त्रिभुज का क्षेत्रफल जानने का नियम निकाला जिसके फलस्वरूप त्रिकोणमिति का जन्म हुआ। आर्यभट्ट पाँचवीं सदी के महान विद्वान थे।

Telegram - https://t.me/edusolapp Visit- https://edusoln.com/

- आर्यभट ने बेबिलोनियाई विधि से ग्रह स्थिति की गणना की और उसने चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण के कारणों का पता लगाया। उन्होंने अनुमान के आधार पर पृथ्वी की परिधि का मान निकाला, जो आज भी शुद्ध माना जाता है। उसने बताया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी घूमती है।

प्राचीन भारत में आयुर्विज्ञान (चिकित्सा विज्ञान) के संदर्भ में

- औषधियों का उल्लेख सबसे पहले अथर्ववेद मे मिलता है। सुश्रुत को शल्य चिकित्सा का पिता कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि सुश्रुत ने शल्य क्रिया के 121 उपकरणों का उल्लेख किया है।
- सुश्रुत संहिता में सुश्रुत ने मोतियाबिंद, पथरी तथा अन्य बहुत से रोगों का उपचार शल्य क्रियाविधि से बताया है।
- चरक की चरक संहिता भारतीय चिकित्सा शास्त्र का विश्वकोश है,इसमें ज्वर, कुष्ठ, मिरगी और यक्ष्मा के अनेक प्रकार बताए गए हैं। इस पुस्तक में बड़ी संख्या में उन पेड़-पौधों का वर्णन है जिनका प्रयोग दवा के रूप में होता है।

विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकों के संदर्भ में

विद्वान	**पुस्तक**
आर्यभट्ट	आर्यभटीय
वराहमिहिर	बृहत संहिता
कालिदास	अभिज्ञानशाकुंतलम्

प्राचीन भारत की कला के संदर्भ में

- मौर्यकालीन पालिशदार सिंह की मूर्ति वाले स्तंभशीर्ष को भारत सरकार । ने राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किया है।
- भारतीय कला और यूनानी कला दोनों के तत्त्वों के सम्मिश्रण से एक नई कला शैली का जन्म हुआ जो गांधार शैली के नाम से प्रसिद्ध है। बुद्ध की पहली प्रतिमा इसी शैली में है।

edusol Learn Anytime Anywhere

For more PDFs Join Our Telegram Group